(प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम)

प्राकृत रचना भास्कर

एवं

प्राकृत शब्दकोश

लेखक

मुनि प्रणम्यसागर

प्रकाशक

आचार्य अकलंकदेव जैनविद्या शोधालय समिति

उज्जैन (म.प्र.)

- कृति : **प्राकृत रचना भास्कर एवं प्राकृत शब्दकोश**
- आशीर्वाद : **आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज**
- रचयिता : **मुनि श्री 108 प्रणम्यसागरजी महाराज**
- संस्करण : प्रथम
- आइएसबीएन : 978-81-934860-9-2
- आवृत्ति : 1100
- सहयोग राशि : देशना पटवारी, लोरी पटवारी, मनन जैन, गितीका जैन, दीपल जैन, आराध्य पटवारी फोर्चुन डायमन्ड टूलस्, बिजौलिया (राज.)
- प्रकाशक : आचार्य अकलंकदेव जैनविद्या शोधालय समिति 109, शिवाजी पार्क देवास रोड़, उज्जैन, फोन: 2519071, 2518396 email: sss.crop@yahoo.com
- प्राप्ति स्थान : आर्हत विद्याप्रकाशन गोटेगाँव, नरसिंहपुर (म.प्र.) मोबा.: 09425837476

  शैलेन्द्र शाह, उज्जैन 09425092483, 09406881001
- मुद्रक : आरसी प्रैस, 70ए, रामा रोड़ इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110015 #9871196002

प्राकृत रचना भास्कर

विषय क्रम		पृष्ठ संख्या
1.	आत्मकथा / पाथेय	iv
2.	मंगलाचरण	v
3.	चौबीस तीर्थंकर (नाम एवं स्तुति)	vi
4.	अभ्यास 1 से 15	x
5.	अपनी परीक्षा करें	76
6.	संज्ञा शब्द रूप	79
7.	बोधकथा	88
8.	वर्ण विकार के कुछ सामान्य नियम	98
9.	प्राकृत शब्द कोश	101

दुर्लभ गुरू मुख से वचन, दुर्लभ गुरू मुस्कान।
दुर्लभ गुरू आशीष है, दुर्लभ गुरू से ज्ञान॥
दुर्लभ से दुर्लभ रहा, गुरू गरिमा गुणगान।
गुरू आज्ञा पूरण पले, दुर्लभतम यह जान॥

आत्मकथ्य / पाथेय

जैन परम्परानुसार अक्सर्पिणी काल के इस पंचम युग में जहाँ एक ओर भौतिक एवं वैज्ञानिक सम्पन्नता का दिग्दर्शन हो रहा है, वहीं अशान्त एवं आक्रान्त मानव समाज कर्तव्यों एवं मूल्यों से विमुख होता जा रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि समाज में मूल्यों की स्थापना हो, वैयक्तिक एवं आध्यत्मिक स्तर पर मानवता का विकास हो, अशांत समाज के लिए आर्षपुरूषों की वाणी का सदुपयोग करने का अवसर मिले। आज जिन-शासन में महावीर की देशना फलित हो रही है। उनकी वाणी आगम के रूप में विद्यमान है। हम सभी उस आगम रूप जिनवाणी का स्वाध्याय करके आत्मकल्याण कर सकें, यही मंगल कामना है।

आज महावीर की देशना जिन आगम ग्रन्थों के रूप में प्राप्त हो रही है उनका स्वाध्याय एवं अध्ययन भाषा की दुरूहता के कारण सम्भव नहीं है। प्राकृत भाषा में रचित इन आगमों के अध्ययन एवं स्वाध्याय के लिए प्राकृत भाषा की प्रारम्भिक जानकारी आवश्यक है इसी उद्देश्य को लेकर **प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम** का निर्माण किया गया है। जोकि **'प्राकृत रचना भास्कर'** नाम से पाठकों के हाथ में उपलब्ध है। जिसके माध्यम से जनसामाय एवं जिन-उपासकों के अन्दर भाषा की जानकारी के साथ-साथ स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ सकेगी। इसी उद्देश्य को लेकर सामाजिक स्तर पर पारिवारिक स्तर पर और वैयक्तिक स्तर पर स्वाध्याय की रूचि जाग्रत की जा सके, जगह-जगह **प्राकृत विद्या पाठशाला** स्थापित की जा रही है। इस पाठशाला के निमित्त से प्राकृत भाषा की जानकारी के लिए रचित इस कृति में क्रमशः प्राकृत के संज्ञा-सर्वनाम शब्दों के विभक्ति रूप, क्रियापदों के धातुरूपों और प्राकृत के सामान्य नियमों की जानकारी तथा प्राकृत अभ्यास रचना के प्रयोग प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम में दिये गये है। स्वाध्याय की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने के निमित्त से इस कृति के अन्त में आचार्य नेमिचन्द्र द्वारा रचित **द्रव्यसंग्रह** की प्रारम्भिक 14 गाथाओं का

अन्वय और अर्थ देकर उसकी व्याकरणात्मक पृष्ठभूमि स्पष्ट की गई है जिसका उद्देश्य स्वाध्याय की प्रवृत्ति को जागृत करना है। निश्चित रूप से यह प्रवृत्ति दिनों-दिन कार्तिकेयानुप्रेक्षा, प्रवचनसार, समयसार, पुरूषार्थसिद्धयुपाय, वसुनन्दिश्रावकाचार, तित्थयर भावना, नई छहढाला जैसे ग्रन्थों का अध्ययन करने के लिए सहायक बन सकेगी।

मंगल-कामना है कि समाज के सभी धर्मानुरागी श्रावक-श्राविकाएं इस पाठशाला में आकर इसे समृद्ध करेगें और अपने आपको स्वाध्याय की प्रवृत्ति से जोड़े रखेगें।

अस्तु मंगलभावना सहित....

- मुनि प्रणम्य सागर

मंगलाचरण

णमो अरहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं॥

चत्तारि मंगलं अरहंत मंगलं
सिद्ध मंगलं साहू मंगलं
केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा अरहंत लोगुत्तमा
सिद्ध लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा
केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि
अरहंतसरणं पव्वज्जामि
सिद्धसरणं पव्वज्जामि
साहूसरणं पव्वज्जामि
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

चउवीस तित्थयर णाम
(चौबीस तीर्थंकरों के नाम)

1. उसह
2. अजिय
3. संभव
4. अहिणंदण/अभिणंदण
5. सुमइ
6. पउमप्पह
7. सुपास
8. चंदप्पह
9. पुप्फदंत
10. सीयल
11. सेयंस
12. वासुपुज्ज
13. विमल
14. अणंत
15. धम्म
16. संति
17. कुंथु
18. अर
19. मल्लि
20. मुणिसुव्वय
21. णमि
22. णेमि
23. पास
24. वड्ढमाण

इन नामों के अन्त में 'णाह' या 'देव' जोड़कर उच्चारण करें।

चउवीस तित्थयर थुदी (चौबीस तीर्थंकर स्तुति)

आदीसं वंदे जिणमजियं संभवमभिणंदणसुमइं।
पउमसुपासं चंदं सुविहिं सीयलसेयवासुपुज्जं॥
विमलमणंतं धम्मपवत्तय - धम्मं संतिं तिपयहरं।
कुंथुमरं सिवकांतारमणं मल्लिं कम्मियचुण्णकरं॥
मुणिसुव्वय-णमिणाहजिणेसं जदुकुलतिलयं णेमिजिणं।
पासपहुं भयवं वरवीरं वंदे सव्वं तित्थयरं॥
माणुस खेत्ते विहरणभूदा सीमंदरजिणभयवंता।
दिंतु समाहिं बोहिसुलाहं रवि-ससि-सहस-पयासंता॥

चउबीसतित्थयर थवो

थोस्सामि हं जिणवरे तित्थयरे केवलीअणंतजिणे।
णरपवरलोयमहिए विहुयरयमले महप्पण्णे।।१।।
लोयस्सुज्जोययरे धम्मं तित्थंकरे जिणे वंदे।
अरहंते कित्तिस्से चउवीसं चेव केवलिणो।।२।।
उसहमजियं च वंदे संभवमभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे।।३।।

चतुर्विंशतितीर्थंकरस्तवः

जिनवर, तीर्थङ्कर, केवली, अनन्त जिनों तथा श्रेष्ठ मनुष्यों से लोक में पूजित रज-मल से रहित महान् आत्माओं की मैं स्तुति करता हूँ।।1।।

लोक को प्रकाशित करने वाले, धर्म के तीर्थङ्कर, जिनेन्द्र भगवान्, अरहन्त, चौबीस तीर्थङ्कर केवली का मैं वन्दन करता हूँ।।2।।

मैं ऋषभनाथ, अजितनाथ की वन्दना करता हूँ। सम्भव, अभिनन्दन, सुमति, पद्मप्रभ, सुपार्श्व और चन्द्रप्रभ जिनदेव की वन्दना करता हूँ।।3।।

सुविहिं च पुप्फयंतं सीयल सेयं च वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं भयवं धम्मं संतिं च वंदामि।।४।।
कुंथुं च जिणवरिंदं अरं च मल्लिं च सुव्वयं च णमिं।
वंदामि रिट्ठणेमिं तह पासं वड्ढमाणं च।५।।
एवं मए अभित्थुया विहुयरयमला पहीणजरमरणा।
चउवीसं पि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु।।६।।
कित्तिय वंदिय महिया एदे लोगोत्तमा जिणा सिद्धा।
आरोग्गणाणलाहं दिंतु समाहिं च मे बोहिं।।७।।
चंदेहिं णिम्मलयरा आइच्चेहिं अहियपहासत्ता।
सायरमिव गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।८।।

मैं सुविधिनाथ अर्थात् पुष्पदन्त, शीतल, श्रेयांस, वासुपूज्य, विमल, अनन्त, धर्म, शान्ति भगवान् की वन्दन करता हूँ।।4।।

कुन्थु, जिनश्रेष्ठ अरनाथ, मल्लि, सुव्रत, नमि, अरिष्टनेमि, पार्श्व और वर्द्धमान प्रभु की मैं वन्दना करता हूँ।।5।।

इस प्रकार मेरे द्वारा स्तुत रज-मल से रहित, जरा-मरण से रहित, चौबीस तीर्थङ्कर जिनवर मुझे प्रसन्न करें।।6।।

ये लोकोत्तम जिनेन्द्र देव, सिद्ध भगवान् जो कि सभी से कीर्तन, वंदन, पूजन को प्राप्त हैं वे सभी मेरे लिए रोगरहित, ज्ञानलाभ, बोधि और समाधि को देवें।।7।।

चन्द्रमा के समान निर्मल, सूर्य से भी अधिक प्रभावान् सागर के समान गम्भीर सिद्ध भगवान् मुझे सिद्धि प्रदान करें।।8।।

वर्ण स्वर ज्ञान

वर्ण-भाषा की मूल ध्वनियों तथा उन ध्वनियों के प्रतीकस्वरूप लिखित चिन्हों को वर्ण कहते हैं। प्राकृत की वर्णमाला संस्कृत की अपेक्षा कुछ भिन्न है। ऋ, लृ, ऐ और औ स्वर प्राकृत में ग्रहण नहीं किये गये हैं। व्यंजनों में श, ष और स इन तीन वर्णों में से केवल स का ही प्रयोग मिलता है। न का प्रयोग विकल्प से होता है। अतः प्राकृत की वर्णमाला में निम्न वर्ण पाये जाते हैं।

स्वर-जिन वर्णों के उच्चारण में अन्य वर्णों की सहायता अपेक्षित नहीं होती, वे स्वर कहलाते हैं। प्राकृत में स्वर दो प्रकार के हैं-ह्रस्व और दीर्घ।

अ, इ, उ, ए, ओ (ह्रस्व)।

आ, ई, ऊ (दीर्घ)।

व्यंजन-जिन वर्णों के उच्चारण करने में स्वर वर्णों की सहायता लेनी पड़ती है, वे व्यंजन कहलाते हैं। प्राकृत में व्यंजनों की संख्या ३२ है।

क	ख	ग	घ	ङ	(क वर्ग)
च	छ	ज	झ	ञ	(च वर्ग)
ट	ठ	ड	ढ	ण	(ट वर्ग)
त	थ	द	ध	न	(त वर्ग)
प	फ	ब	भ	म	(प वर्ग)
	य	र	ल	व	(अन्तःस्थ)
			स	ह	(ऊष्माक्षर)
				ं	(अनुस्वार)

अनुस्वार को भी व्यंजन माना गया है, यतः अनुस्वार म् या न् का रूपान्तर है। इसलिए यहाँ व्यंजन 32 कहे हैं। प्राकृत में विसर्ग की स्थिति नहीं है। विसर्ग सर्वदा ओ या ए स्वर में परिवर्तित हो जाता है। असंयुक्त अवस्था में ङ और ञ का व्यवहार भी नहीं पाया जाता है अतः व्यंजन ३० हैं। यदि अनुस्वार को भी व्यंजन न मानें तो व्यंजन 29 ही रह जाते हैं।

वर्णों का उच्चारण

कण्ठय-अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ और ह का उच्चारण स्थान कंठ है। अतः ये वर्ण कंठय कहलाते हैं।

तालव्य-इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ और य का उच्चारण स्थान तालु है अतः ये वर्ण तालव्य कहलाते हैं।

मूर्धन्य-ट, ठ, ड, ढ, ण और र का उच्चारण स्थान मूर्धा है अतः ये वर्ण मूर्धन्य कहलाते हैं।

दन्त्य-त, थ, द, ध, न, ल और स का उच्चारण स्थान दन्त है अतः ये वर्ण दन्त्य कहलाते हैं।

ओष्ठ्य-उ, ऊ, प, फ, ब, भ, और म का उच्चारण स्थान ओष्ठ है अतः ये वर्ण ओष्ठ्य कहलाते हैं।

अनुनासिक-ञ, म, ङ, ण, न और म का उच्चारण स्थान नासिका है अतः ये वर्ण अनुनासिक कहलाते हैं।

ऐ और ए का कण्ठ, तालु, औ और ओ का कंठ-ओष्ठ, वकार का दन्तोष्ठ और अनुस्वार का नासिका उच्चारण स्थान है।

अभ्यास 1

कः सर्वनाम शब्द- य (जो), क (कौन), एद (यह), त (वह), अमु (वह), अण्ण (अन्य)।

सूचनाः ये शब्द तीनों लिंगों के अनुसार चलते हैं।

खः संज्ञा शब्द- मोक्ख (पु.) मोक्ष। असोक (पु.)- अशोक। तित्थयर (पु.)- तीर्थंकर। आद (पु.)- आत्मा। अप्प (पु.)- आत्मा। अजिय (पु.)- अजित। णाह (पु.)- नाथ। थल-स्थल। फास- स्पर्श। पाद (पु.)- चरण (पैर)। चरण (पु.)-पैर। कर (पु.)- हाथ। सग्ग (पु.)- स्वर्ग। भगवंत (पु.) (भगवान)।

गः विशेषण शब्दः सेट्ठ (श्रेष्ठ), पढम (प्रथम), मणोहर (मनोहर), सुंदर (सुन्दर)।

घः क्रिया पदः णास (नाश होना), खय (नष्ट होना), लुक्क (छिपना), रोक्क (रोकना), मणु (मानना)।

व्याकरण [सर्वनाम 'य' (ज)]

सर्वनाम ''य'' के प्रथमा, द्वितीया के तीनों लिंग रूप :-

	(पु.)		(स्त्री.)		(नपु.)	
	एक.	**बहु.**	**एक.**	**बहु.**	**एक.**	**बहु.**
प्रथमा वि.-	जो	जे	जा	जाओ	जं	जाणि
द्वितीया वि.-	जं	जे	जं	जाओ	जं	जाणि

इसी प्रकार क, एद(एसो), अण्ण के रूप भी संज्ञा शब्द रूप में देखें। अदस् शब्द को अमु आदेश करके पु.लिंग में साधु, नपु.लिंग में वत्थु, स्त्री.लिंग में धेणु के समान रूप चलेंगे।

	अर्थ	**विभक्ति**
कत्ता कारक-	ने	- पढमा
कम्म कारक-	को	- विदिया
करण कारक-	से, के द्वारा	- तिदिया

संपदाण कारक-	के लिए	- चदुत्थी
अवादाण कारक-	से	- पंचमी
संबंध कारक-	का, की, के	- छट्ठी
अहियरण कारक-	में, पे, पर	- सत्तमी

नियम 1: अस(होना) धातु को सभी वचनों व पुरुषों में अत्थि आदेश होता है। यथा- सो अत्थि।
तुम्हे अत्थि। अहं अत्थि। अम्हे अत्थि।

नियम 2: संबोधन कारक में प्रथमा विभक्ति होती है। कहीं प्रत्यय का लोप करके एक. में मूल शब्द ही रहता है। कहीं प्रथमा का ही रूप रहता है।
जिण, जिणो। जिणा। साहु, साहू। साहुणो, साहवो, साहउ, साहओ।

नियम 3: संबोधन में संबोधन सूचक 'हे', 'अहो' आदि भी लगाये जाते है- हे जिण। हे साहु आदि।

प्रयोग:

1. भगवान् अभिनंदननाथ केवलज्ञानी व वीतरागी हैं।
   = भगवंतो अहिणंदणणाहो केवलणाणी वीयरायी य अत्थि।
2. जो ज्ञानी को देखता है वह प्रसन्न होता है।
   = जो णाणिं पेक्खइ सो पसंसइ।
3. उन चश्मों के द्वारा वह देखता था।
   = तेहि एणगेहि सो देक्खीअ।
4. यहाँ कौन किसके लिए जीता है।
   = अत्थ को कस्स जीवइ।
5. भगवान् के चरणों के स्पर्श से दुःख का नाश होता है।
   = भगवंतस्स चरणफासेण दुक्खं णासइ।
6. इस सुन्दर घर का मैं स्वामी हूँ।
   = इमस्स सुंदरस्स घरस्स अहं सामी अत्थि।
7. हम सब पृथ्वी पर चलते हैं और देव स्वर्ग में।
   = अम्हे पुढवीए चलामो देवा य सग्गे (चलंति)।

(क) अभ्यास करें-

1. = सभी महापुरुषों ने शांति का उपदेश दिया है।
2. = हम सब अपनों को जानें।
3. = तुम लोगों ने वहाँ जाकर क्या-क्या पढ़ा।
4. = ये ग्रंथ, ये वस्त्र, ये गुरु, ये पुस्तकें हमारी हैं।
5. = वृक्षों से फल व फूल उत्पन्न होते हैं।
6. = उन सबके द्वारा हम सब जाने जावेंगे।
7. = कल वह उस नगर से इस नगर आयेगा।
8. = जिन बालाओं के लिए साड़ी है उन्हें वे दो।
9. = क्या तुम लोगों को मरघट में डर लगता है।।
10. = वह यहाँ थककर के आया।
11. = श्रेष्ठ कार्य साधुओं के द्वारा किया जायेगा।
12. = जिनकी जिसमें भक्ति है वे उनको पूजें।
13. = साधु सर्वज्ञ के रूप का ध्यान करते हैं।
14. = सर्वज्ञ सब जानने व देखने में समर्थ होते है।
15. = गुरू की शिक्षा और आज्ञा को धारो।
16. = ये सब जब पुष्पों को देखेगें तब तुम सब हँसोगे क्या?

(ख) शुद्ध करो-

पुढवी सायरे अत्थि ।
दाणिं णिसा संति।
बहूसु सासू हीहइ।
गुरुस्स विणा णाणं णत्थि।
जुवईए रायं ण करंतु।
छत्तम्मि गुरुम्मि सद्धा ण करइ।

(ग) गृहकार्य-

1. हस, जण, थुण, झा, हो क्रिया पदों के सभी कालों के रूप स्मरण करें।
2. णर, कवि, साहु, भक्ति , सद्धा, वत्थु, जुवई के पूरे रूप स्मरण करें।

3. के लिए, से, में, करके इन अर्थों की विभक्ति या प्रत्यय बतावें।
4. आज्ञावाची प्रत्यय व भूतकाल के प्रत्यय कौन से हैं।

उत्तर

(क) 1. सव्वे महापुरिसा संतिं उवदिसीअ।
2. अम्हे अप्पाणं जाणमो।
3. तुम्हे तत्थ गच्छिदूण किंकिं पढीअ।
4. एदे गंथा एदाइं वत्थइं एदे गुरुणो एदाणि पुत्थगाणि अम्हाण सन्ति
5. रुक्खाहिंतो फलाइं पुप्फाइं च उपज्जंति।
6. तेहिं अम्हे मुणिहिमो।
7. कल्ले सो तत्तो णयरत्तो इमं णयरं आगच्छिहिइ।
8. जाणं बालाणं साडीआ संति ताणं ताओ पयच्छंतु।
9. किं तुम्हे मसाणे बिहह।
10. सो अत्थ थक्किदूण आगच्छीअ।
11. सेट्ठं कज्जं साहूहिं करिहिइ।
12. जाण जम्मि भत्ती अत्थि ते ता अच्चंतु
13. साहू सव्वण्णरुवं झायन्ति।
14. सव्वण्णु सव्वे मुणिदुं देक्खिदुं च समत्था होंति।
15. गुरूस्स सिक्खं आणं च धारह।
16. एदे सव्वे जदा पुप्फांइ देक्खिहिंति तदा तुम्हे हसिहिह किं।

(ख) सायरा
अत्थि
बहूए
गुरुं
जुवईओ
छत्तो

गृहकार्य: (1) (2) प्रथम भाग में देखें।
(3) चतुर्थी, पंचमी, सप्तमी, ऊण।
(4) उ.दु। न्तु। हि.सु. धि ।ह। मु। मो

अभ्यास 2

विशेषण शब्दः णाणवंत (ज्ञानवान्), भगवंत (ज्ञानवान्, भगवान्), रसवंत (रसवान्), सोहावंत (शोभावान्), गुणवंत (गुणवान्), दयावंत (दयावान्), ईसावंत (ईर्ष्यावान्), करूणावंत (करुणावान्), चारित्तवंत (चारित्रवान्), खमावंत (क्षमावान्), सरुववंत (स्वरूपवान्), सीलवंत (शीलवान्), दुट्ठसीयवंत (दुष्टस्वभाव वाला), सद्धावंत (श्रद्धावान्), वत्थवंत (वस्त्रवान्), णयणवंत (नयनवान्), भक्तिवंत (भक्तिवान्), वेरग्गवंत (वैराग्यवान्), पाणवंत (प्राणवान्), धणवंत (धनवान्), सिरिवंत (श्रीवान् / ऐश्वर्यवान्), विज्जावंत (विद्यावान्), रूववंत (रूपवान्), मालावंत (मालावान्), परिग्गहवंत (परिग्रहवान्), लच्छीवंत (लक्ष्मीवान्), धिईवंत (धैर्यवान्), धीवंत (बुद्धिमान्), पडिमावंत (प्रतिमावान्), इच्छावंत (इच्छावान्), लज्जावंत (लज्जावान्)।

संज्ञा शब्दः जिणालय (पु.)- जिनालय। वेंजण (नपु.)- व्यञ्जन। दुज्जण (पु.)- दुर्जन। दिवस (पु.)-दिन। पाइयभासा (स्त्री.) - प्राकृतभाषा। दिवह-दिन।

क्रिया.: फास- स्पर्श

नियम 1: जैसे णाण आदि शब्दों में वंत प्रत्यय लगाकर ऊपर शब्द बनाये हैं इसी प्रकार वंत के स्थान पर सूत्र ''मन्तमण वन्तमा आलुआल इर उल्ल - इन्ता मतुपः (प्रा.-शब्दनुशासन 2.1.1)'' (मन्त, मण, मा, आलु, आल, इर, उल्ल, इन्ता) में आये मंतादि प्रत्यय लगा कर वाला अर्थ में शब्द बनते हैं। जैसे- सिरिमंत(लक्ष्मीवाला / लक्ष्मीवान्), भगमंत, भगमण। इन सभी शब्दों के रूप (पुल्लिंग) में जिण, (नपु.) में मित्त, और (स्त्री.) में आ जोड़कर बाला के समान चलेंगे लेकिन आलु प्रत्ययान्त शब्द पु. में साहु, नपु. में वत्थु, स्त्री में धेणु के समान चलेंगे।

यथा: दयामंतो णरो। कलहवंता जुवई।
दयामंतं मित्तं। दयालू साहू।

नियम 2: विशेषण शब्दों के लिंग, वचन, विशेष्य के लिंग, वचन व पुरुष के अनुसार चलेंगे। यथा- ईसालू णरो आगच्छइ (ईर्ष्यालु मनुष्य आ रहा है)।

नियम 3: अकारान्त पु., नपु. शब्दों के तृतीया के एकवचन में ''एणं'' भी लगाकर रूप बनते हैं। जीवेणं, मित्तेणं। इसी प्रकार तृ. बहुवचन में सूत्र ''हिँ, हिं, हि भिसः (प्रा.-श. 2.2.5)'' से हिँ, हिं, हि प्रत्यय लगकर भी रूप बनते हैं। जिणेहिँ। जिणेहि। जिणेहिं मित्तेहिं / मित्तेहिँ मित्तेहि।

प्रयोग:

1. रूपवान् वस्तु अच्छी है।
   = रूववंतं वत्थुं सुट्ठु अत्थि।
2. धनवान् पुरुष जा रहा है।
   = धणवंतो पुरिसो गच्छइ।
3. रसवान् व्यञ्जनों की सभी इच्छा करते हैं।
   = रसालूणि वेंजणाणि सव्वे इच्छंति।
4. शीलवती युवती पूजा कर रही है।
   = सीलवंती जुवई पुज्जं करइ।
5. घर वाला पुरुष धन का दान करता है।
   = घरिल्लो पुरिसो धणस्स दाणं करइ।
6. वहाँ धर्मवान् मनुष्य रहता है।
   = तत्थ धम्मालू णरो णिवसइ।

(क) अभ्यास:

(अ)
1. हाथों से चरणों का स्पर्श करें।
2. वे सब रूपवान् को देखने बाहर खड़ी हैं।
3. चारित्रवाला पुरुष मोक्ष पावेगा।
4. वह ग्रामणी बाहर जाने के लिए आवे।

5. बुद्धिमान लोग सभी लोगों का ध्यान रखें।
6. जिनालय में वीतरागी भगवान् को देखो।

(ब) 1. ज्ञानवान् ज्ञानी को प्रणाम करें।
2. दयावान् प्राणवाले जीवों की रक्षा करेगा।
3. चारित्रवानों को धर्म का उपदेश दिया।
4. दुर्जनों में दयाभाव नहीं होता है।
5. ज्ञानवान्, चारित्रवान्, दयावान् पुरुष आत्मा को नहीं जानते हैं क्या?

(ख) शुद्ध करें:

1. दयावंतो उसहा चारित्तवंते पुरिसं पुज्जउ।
2. णमिऊण सो गच्छंति।
3. सुंदर वत्थुं अत्थि।
4. अमु कज्जं सम्मं करइ।

(ग) पूर्ति करो:

1. दाणिं जिणालयेसु ..... हवइ।
2. साहुणो सइ दिवसे ..... करंति।
3. अम्हे पाइयभासं ..... ।

गृहकार्य: 1. णाणवंत(पु.) में, दयावंता(स्त्री.) में, दयालु(नपु.) में रूप याद करें।
2. अदस् शब्द के रूप बनावें।
3. लुक्क धातु के सभी कालों के रूप स्मरण करें।

उत्तर

(क) (अ) 1. हत्थेहिं चरणाइं फासंतु।
2. ताओ रूववंतं देक्खिदुं बहिं चिट्ठंति।
3. चरित्तवंतो पुरिसो मोक्खं लहिहिदि।
4. सा गामिल्ली बहिं गच्छिदुं आगच्छदु।
5. धीवंता सव्वेसिं झाणं रक्खंतु।
6. जिणालये वीयरायं भगवंतं देक्खसु।

(ब) 1. णाणवंता णाणिं पणमंतु।
2. दयालू पाणवंते जीवे रक्खिहिइ।
3. चरित्तवंताणं धम्मो उवदिट्ठो या धम्मं उवदिसीअ।
4. दुज्जणेसु दयाभावं/दया ण होइ।
5. णाणवंता चरित्तवंता दयावंता पुरिसा किं अप्पाणं ण जाणंति।

(ख) 1. उसहो चारित्तवंतं
2. गच्छइ सुंदरं
3. अमू

(ग) 1. आराधणभत्ती
2. आहारं
3. पढामो

गृहकार्यः 1. णाणवतो, णाणवंता आदि जिण के समान।
दयावंता, दयावंताओ आदि बाला के समान।
दयालुं, दयालूणि आदि वत्थु के समान।

2. अदस् शब्द-पुल्लिंग में-प्र. अमू, अमुणो। द्वि अमुं, अमुणो। तृ अमुणा, अमूहि-अमूहिं-अमूहिँ। च. अमुस्स, अमूणअमूणं। पं. अमुत्तो आदि, अमुहिंतो आदि। प्र. अमुस्स, अमूण-अमूणं। स. अमुम्मि, अमूसु। सं. हे अमु हे अमुणो।

नपु. में-अमुं, अमूणि। अमुं, अमूणि। अमूणा, अमुहि-हिं-हिँ। अमुणो, अमूण-णं। अमुत्तो आदि, अमूहिंतो आदि। अमुस्स, अमूण-णं। अमुम्मि अमूसु। हे अमु, हे अमूणि।

स्त्री. में-अमू, अमूओ। अमुं, अमूओ। अमूअ-अमूआ-अमूइ-अमूए। अमूहि-हिं-हिँ। अमूअ-आ-इ-ए, अमूण-णं अमूअ-आ-इ-ए, अमुत्तो आदि। अमूअ-आ-इ-ए, अमूण-णं। अमुअ-आ-इ-ए, अमूसु। हे अमु, हे अमूओ।

3. **लुक्क धातु-**

वर्तमान काल-लुक्कइ, लुक्कंति। लुक्कसि, लुक्कह। लुक्कामि, लुक्मामो।

भूतकाल-लुक्कीअ, लुक्कीअ। लुक्कीअ, लुक्कीओ। लुक्कीअ, लुक्कीय।

भविष्यत् काल-लुक्किकहिर, लुक्किकहिंति। लुक्किकहिसि, लुक्किकहिह। लुक्किकहिमि, लुक्किकहिमो।

विधि-आज्ञा काल-लुक्कउ, लुक्कंतु। लुक्कहि, लुक्कह। लुक्कमु, लुक्कमो।

अभ्यास 3

संज्ञाः घाम (पु.)-धूप। वायु (पु.)-हवा। विज्जू या विज्जुला (स्त्री.) विद्युत /बिजली। पत्त या पत्तल (नपु.)-पत्ता। समण (पु.)-श्रमण। सावय (पु.)-श्रावक। मरण (नपु.)-मृत्यु। कयंतो (पुं)-मुत्यु। पाव (नपु.)-पाप। कुमार (पु.)-कुमार।

सर्वनामः पर (दूसरा), अवर (दूसरा), इतर (दूसरा), पुव्व (पहले)।

अव्ययः इदो (इधर से), तदो (उधर से), अदो (इसलिए), कदो (कहाँ से), जदो (जहाँ से), सव्वदो (सब ओर से), परिदो (चारों ओर से), अहिदो (दोनों ओर), तो (तो), उभओ (दोनों ओर), धि (धिक्कार)

क्रियापदः वह (बहना), कुण (करना), धुव (कांपना), हण (सुनना), हुव (होना), राअ (दीप्ति), पड (गिरना, पड़ना), तुड (तोड़ना), वेव (कांपना), मण (मानना)।

व्याकरण (पंचमी विभक्ति)

'जिण' शब्द में पंचमी विभक्ति के रूपः

एक.	बहु.
जिणाहिंतो, जिणत्तो	जिणाहिंतो, जिणत्तो
जिणादो, जिणादु	जिणादो, जिणादु

'वत्थु' शब्द में:

एक.	बहु.
वत्थूहिंतो, वत्थुत्तो	वत्थूहिंतो, वत्थुत्तो
वत्थूदो, वत्थूदु	वत्थूदो, वत्थूदु

इसी प्रकार सभी में चलेंगे। 'वह' आदि क्रियापदों के रूप हस धातु के समान चलेंगे।

नियम 1: सभी संज्ञा एवं सर्वनाम शब्दों में तीनों लिगों में पंचमी विभक्ति में हिंतो, त्तो, दो और दु प्रत्यय भी लगते हैं। हिंतो, दो, दु प्रत्यय में पूर्व स्वर दीर्घ हो जाता है।

यथा- देवाहिंतो, मित्तादो, जुवईदु।

नियम 2: पंचमी(से) अर्थ में दो, त्तो प्रत्यय सर्वनाम शब्दों से लग कर रूप बनते हैं। इदो / इत्तो(इधर से) इनके रूप नहीं चलते। (देखें-अभ्यास 3 में अव्यय)

नियम 3: ''ङसेः श्लुक्'' सूत्र से पंचमी एकवचन में अकारान्त शब्दों से परे प्रत्यय का लोप होकर एवं पूर्व स्वर दीर्घ होकर जिण+ङसि = जिणा यह रूप भी बनता हैं।

नियम 4: विणा के योग में पंचमी विभक्ति होती है।
= गुरूदो विणा सद्धा णत्थि।

नियम 5: जिससे हटाया जाय, जिससे छिपा जाय उसमें पं. वि. होती है।
= माआए पुत्तं दूरं करइ।
= गुरुणो सिस्सो लुक्कइ।

नियम 6: उत्पन्न होना(उप्पज्ज, पभव) अर्थवाली क्रियाओं के योग में भी पं. वि. होती हैं।
1. तीर्थंकर से आगम उत्पन्न होता है।
= तित्थंयरत्तो आगमो उप्पज्जइ।

नियम 7: अदस् शब्द को प्रथमा एकवचन में अह आदेश होता है।
तीनों लिगों में- अह पुरिसो, अह वणं, अह बाला।

नियम 8: भिन्न अर्थ वाची शब्दों के साथ या योग में पंचमी वि. होती है। सो ममाओ भिण्णो अत्थि।

प्रयोगः
1. दयावान् गुरु से वह शिक्षा प्राप्त करता है।
= दयामंताहिंतो गुरूहिंतो सो सिक्खं पावइ।
2. दूसरे लोगों के निमित्त(कारण) धन ग्रहण करता है।
= परत्तोधणं गिण्हइ।

3. हवा से धूली दूर होती है।
   = वायूदु धूई दूरं होइ।
4. जहाँ से धूप आ रही है वहाँ देखो।
   = जदो घामो आगच्छइ तत्थ पासहि।
5. कुमार माता की आज्ञा मानता है।
   = कुमारो माआए आणं मणइ।

1. कवियों से काव्य उत्पन्न होते हैं।
   = कवीहिंतो कव्वाइं जायंति।
2. मैं पर से अन्य हूँ।
   = अहं परत्तो अण्णं अत्थि।
3. गुरु शिष्य को पाप से रोकता है।
   = गुरू सिस्सं पावादु रोक्कइ।
4. वह पिता से छिपता है।
   = सो पिऊदो लुक्कइ।
5. वह सबसे छिपता है।
   = सो सव्वत्तो लुक्कइ।

(क) अभ्यास:

(अ) 1. गुरुओं से सभी शिष्य पढ़ते हैं।
2. दूसरों की सदा विनय करो।
3. उन सबसे यह वस्तु भिन्न है।
4. उधर से पानी बह रहा है।
5. यहाँ सब ओर वन हैं।

(ब) 1. युवती से घर प्रकाशित होगा।
2. पापों से अपनी रक्षा करो।
3. ज्येष्ठ पुरुषों से क्षमा सीखेगा।
4. इधर से कौन कहाँ गया।
5. मृत्यु से सभी डरते हैं।

(स) 1. धूप कहाँ से आ रही है।
2. बिजली वहाँ से गिरी।
3. श्रावक पाप से डरता है।
4. मृत्यु श्रमण से डरती है।
5. माताओं से बालक छिपते हैं।

(द) 1. दुःखों से वह डरता है।
2. हम सब से वे सब छिपते हैं।
3. पानी से विद्युत उत्पन्न होती है।
4. हवा से पानी बहता है।
5. विद्यालय के दोनों ओर जल व वन है।
6. गुरु के सब ओर शिष्य बैठे हैं।

(ख) वर्तमान काल में पूर्ति करोः

1. माआ तुम्हें ..... (कोक्क)।
2. तुमं ममं ..... (पास)।
3. सावओ समणं .....(हण)।
4. सणिअं सणिअं वायू ..... (वह)।
5. अह पुरिसो ताहिंतो ..... (बोल्ल)।

गृह कार्यः 1. ऊपर दिए अभ्यास वाक्यों को विधि, आज्ञा एवं भूतकाल में बदलें।
2. पूर्ति करो में क्रिया पदों को विधि व भविष्यत् काल में बनावें।
3. दयालु शब्द के पंचमी विभक्ति के एक. / बहु. के रूप याद करें।
4. अवर सर्वनाम शब्द के रूप पु. में सव्व शब्द के समान चलावें।

उत्तर

(क) (अ) 1. गुरूहिंतो सव्वे सिस्सा पढंति।
2. अण्णे/अणा सया विणयं करहि।
3. तेहिंतो इमं वत्थुं भिण्णं अत्थि।

4. तत्तो जलं वहइ।
5. एत्थ सव्वदो वणाइं संति।

(ब) 1. जुवईए घरो जोइहिदि।
2. पावाहिंतो अप्पं रक्खहि।
3. जेट्ठ पुरिसाहिंतो खमं सिक्खिहिइ।
4. इत्तो को कत्थ गच्छीअ।
5. मरणत्तो सव्वे डरंति।

(स) 1. घामो कत्तो आगच्छइ।
2. बिज्जू तत्तो पडीअ।
3. सावयो पावत्तो डरइ।
4. कयंतो समणत्तो डरइ।
5. मायासुन्तो बालआ लुक्कंति।

(द) 1. दुक्खाहिंतो सो डरइ।
2. अम्हेहिन्तो ते लुक्कंति।
3. जलत्तो विज्जू जायइ।
4. वाउणा सलिलो वहइ।
5. विज्जालयं उभओ उदगं वणं च अत्थि।
6. गुरुं सव्वदो सिस्सा उवविसंति।

(ख) 1. कोक्कइ
2. पाससि
3. हणइ
4. वहइ
5. बोल्लइ

गृहकार्य:

1. पठंतु, पठीअ। कुणउ, कुणीअ। होउ, आसि। वहउ, वहीओ। होंतु, आसि। दीप्तिउ जोइउ, जोईअ। रक्खउ, रक्खीओ सिक्खउ, सिक्खीअ। गच्छउ, गच्छीअ। बीहंतु, बीहीअ। आगच्छउ, आगच्छीअ। पडउ, पडीअ।

डरउ, डरीअ। बीहउ, बीहीअ। लुक्लंतु, लुक्कीअ। डरउ, डरीअ। लुक्कंतु, लुक्कीअ। जायउ, जायीअ। वहउ, वहीअ। होउ, आसि। अच्छंतु। उवविसंतु, अच्छीअ। उवविसीअ।

2. कोक्कउ, कोक्किहिइ। पासहि, पासिहिसि। हणउ, हणिहिइ। वहउ, वहिहिइ। बोल्लउ, बोल्लिहिर।

3. दयालूहिंतो, दलालुत्तो, दयालूदो, दयालूदु (एक+बहु.)।

4. अवरो, अवरे। अवरं, अवरे। अवरेण-अवरेणं, अवरेहि-हिं-हिँ आदि।

अभ्यास 4

संज्ञा शब्दः पुत्ती (स्त्री.)- पुत्री। महिला (स्त्री.)- महिला। इत्थी (स्त्री.)- स्त्री।
कोह (पु.)-क्रोध। माण (पु.)- मान। माया (स्त्री.)-माया।
लोह (पु.)- लोभ। राया (पु.)- राजा। णरिंद (पु.)-राजा।
दिण (नपु.)-दिन। रत्ति (स्त्री.)-रात। बाण (पु.)-बाण।
बप्प (पु.)-पिता। गाम (पु.)-गाँव। उज्जाण (नपु.)-बगीचा।

क्रियापदः कुल्ल (कूदना), आढप्प (आरम्भ करना), घेप्प (ग्रहण करना), डर (डरना), मार (मारना), चिट्ठ (बैठना), जा (जाना), खिव (फैंकना), वद (बोलना), आव (आना), वियार (विचार करना)।

विशेषणः पीअ(पीला), पीअल (पीला), अंध (अन्धा), अंधल (अंधा), सेद (सफेद), पण्डुर (सफेद), णील (नीला), रत्त (लाल), काला (काला)।

व्याकरण (राजन् -राय/राअ)

राजन् शब्द के न् का लोप एवं अन्त (ज) को आ करके 'राआ' प्रथमा के एक. एवं राजन् शब्द को आण आदेश करके 'राआण' ये दो रूप सिद्ध होते हैं।

नियम 1: हेतु शब्द के साथ षष्ठी विभक्ति होती है। प्रयोजन व कारण शब्द के साथ भी। जैसे वह अन्न के प्रयोजन से गाँव में रहता है। सो अण्णस्स हेउस्स गामे वसइ।

नियम 2: आशीर्वाद देने की इच्छा होने पर आउस(आयु), भद्द(भद्र), कुसल, सुख, हित तथा इनके पर्यायवाची शब्दों के साथ चतुर्थी एवं षष्ठी विभक्ति होती हैं। रामस्स भद्दं, कुसलं होउ (राम का कल्याण हो, कुशल हो)।

नियम 3: क्रिया या कर्म के आधार को अधिकरण कहते हैं। उस अधिकरण या आधार में सप्तमी विभक्ति होती है। सो आसणे चिट्ठइ (वह आसन पर बैठता है)।

नियम 4: स्त्रीलिंग वाची शब्दों से परे तृतीया एक., सप्तमी एक., पंचमी एक., षष्ठी एक. में अ, आ, इ, ए प्रत्यय होते हैं। आकारान्त शब्दों से आ प्रत्यय नहीं होगा। णईअ, णईआ, णईइ, णईए। बालाअ, बालाइ, बालाए।

प्रयोग:

1. वह राजा की पुत्री है।
   = सा णरिंदस्स पुत्ती अत्थि।
2. स्त्री का क्रोध शत्रु है।
   = इत्थीए कोहो रिऊ अत्थि।
3. पिता गाँव में रहते हैं।
   = बप्पो गाममि वसइ।
4. वे सब यहाँ किस प्रयोजन से आयी थी।
   = अमूओ अत्थ कस्स पयोजणस्स आगच्छीअ।
5. सब जीवों का कुशल हो।
   = सव्वाणं जीवाणं कुसलं हवउ।
6. आत्मा में ज्ञान है।
   = अप्पम्मि णाणं अत्थि।
7. वह मित्र के साथ गाँव में कूदती है।
   = अमू मित्तेण सह गाममि कुल्लइ।
8. पुत्री मित्र के कारण पीला वस्त्र फेकती हैं।
   = पुत्ती मित्तस्स कारणेण पीअलं वत्थं खिवइ।

(क) अभ्यास:

(अ)

1. श्रावक गाँव में रहते हैं।
2. बालाएं रात्री में घर पर रहती हैं।
3. वह पीला जिनालय मेरा है।
4. अन्धा मनुष्य जगत में अच्छी तरह बोलता है।
5. राजा शत्रु पर बाणों को फेंकता है।
6. उस सफेद घर में कौन है?

(**ब**) 1. तुम किस घर में रहते हो।
2. इस घर में कौन-कौन रहता है।
3. हम सभी लोग इसी उद्यान में ठहरें।
4. उसका क्रोध इस पर अवश्य होगा।
5. उन सबके हेतु मैं यहाँ हूँ।
6. वह लाल साड़ी मेरी पुत्री की है।

(ख) शुद्ध करें:

(अ) 1. इमं वारिं णईस्स अत्थि।
2. पइदिणं सम्मं सो अरिहंताणं अच्चइ।
3. इत्थीहिंतो तस्स दूरं हवउ।
4. अमुं णयरं णरिंदआ अत्थि।
5. घरं बहूओ संति।

(ब) अमुं साडी। कं बाला। इमे वत्थूणि। इत्थी संति। रत्ती संति। सेदं घरे। पुत्ती सह। अह संति।

गृहकार्य: अभ्यास के वर्तमान काल के वाक्यों को विधि एवं भविष्य काल में बनावें।
= पुत्ती, दिण, बप्प के रूप बनावें।
= इन शब्दों के अर्थ लिखें।

सम्मं ( ), अग्गओ ( )
सइ ( ), झत्ति ( )
मुहु ( ), अप्पं ( )
णीअल ( ), अंधल ( )

उत्तर

(क) (अ) 1. सावया गाममि वसंति।
2. बालाओ रत्तीए घरम्मि वसंति।
3. अमू पीअलो जिणालयो मज्झ अत्थि।

4. अंधलो णरो लोये सम्मं वदइ।
5. राजा सत्तुम्मि बाणे खिवइ।
6. तम्मि पण्डुरम्मि घरम्मि को अत्थि।

(ब) 1. तुमं कम्मि घरम्मि वससि।
2. एअम्मि घरम्मि को को वसइ।
3. अम्हे एअम्मि उज्जाणम्मि ठामो।
4. तस्स कोहा इमस्स (या इमम्मि) अवस्सं होहिइ।
5. तेंसि हेऊ अहं अत्थ अत्थि।
6. अमू रत्ता साडी मज्झ पुत्तीए अत्थि।

(ख) (अ) 1. णईए।
2. अरिहंते।
3. सो।
4. णरिंदस्स।
5. घरम्मि।

(ब) अमू साडी । का बाला । इमाणि वत्थूणि । इत्थीओ संति । रत्ती अत्थि । सेदं घरं । पुत्तीए सह । अहं अत्थि।

गृहकार्यः 1. वसंतु, वसिहिंति। वसुंतुं, वसिहिंति। होउ, होहिइ। वदउ, वदिहिइ। खिवउ, खिविहिइ। हवउ, हविहिइ। वसहि, वसिहिसि। वसउ, वसिहिइ। होमु, होहिमि। होउ, होहिइ।

2. पुत्ती-पुत्ती, पुत्तीओ। पुत्तिं, पुत्तीओ। पुत्तीअ-आ-इ-ए, पुत्तीहि-हिं-हिँ। पुत्तीअ-आ-इ-ए, पुत्तीण-णं। पुत्तीअ, आ-इ-ए-हिंतो आदि, पुत्तित्तो आदि। पुत्तीअ-आ-इ-ए, पुत्तीण-णं। पुत्तीअ-आ-इ-ए, पुत्तीसु-सुं। हे पुत्ति, हे पुत्तीओ।

दिण-दिणं, दिणाणि। दिणं, दिणाणि। दिणेण-णं, दिणेहि-हिं-हिँ। दिणस्स, दिणाण-णं। दिणत्तो आदि, दिणाहिंतो आदि। दिणस्स, दिणाण-णं। दिणे-दिणम्मि, दिणेसु-सुं। हे दिण, हे दिणाणि।

बप्प-बप्पो, बप्पा। बप्पं, बप्पा-बप्पे। बप्पेण-णं, बप्पेहि-हिं-हिँ। बप्पस्स, बप्पाण-णं। बप्पत्तो आदि, बप्पाहितो आदि। बप्पस्स, बप्पाण-णं। बप्पे-बप्पम्मि, बप्पेसु-सुं। हे बप्प, हे बप्पा।

3. शब्दों के अर्थ–अच्छी तरह, आगे, एक बार, शीघ्र, बार-बार, थोड़ा, पीला, अंधा।

अभ्यास 5

विशेषण: एत्तिअ (इतना), जित्तिअ (जितना), तित्तिअ (उतना), केत्तिअ (कितना), इत्तिल (इतना), जेत्तिअ (जितना), तेत्तिअ (उतना), जित्तिल (जितना), तित्तिल (उतना), कित्तिल (कितना), एद्दह (इतना), जेद्दह (जितना), तेद्दह (उतना), केद्दह (कितना)। हसिर (हंसने का स्वभाव), जप्पिर (बोलने का स्वभाव), जग्गिर (जागने का स्वभाव), लज्जिर (लज्जा का स्वभाव), छायिल्ल (छायावान्), गव्विर (गर्वयुक्त), एकल्ल (अकेला) एक्क (अकेला), णवल्ल (नया), णव (नया)।

नियम 1: ''इरः शीलाद्यर्थस्य (प्रा.-श. 2.1.28)'' से शील, धर्म, साधु स्वभाव अर्थ में इर प्रत्यय होता है।
लज्जा+इर = लज्जिर। इर के स्थान पर सील(शील) शब्द भी जोड़ सकते हैं। लज्जासील, दयासील।

नियम 2: ''भवे डिल्लोल्लडौ (प्रा.-श. 2.1.17)'' सूत्र से भव (होना) अर्थ में इल्ल, उल्ल प्रत्यय होते हैं। उवरिल्ल(ऊपर होना), हेट्ठिल्ल(नीचे होना), अप्पुल्ल(अपने में जो हो या अपने में होना)।

नियम 3: षष्ठी बहुवचन में अनुस्वार होकर भी रूप बनता है। जैसे- जिणाणं।

नियम 4: शब्दों से परे पंचमी बहुवचन में 'सुंतो' प्रत्यय भी लगता है।
जिणासुंतो या जिणेसुंतो। जुवईसुंतो।

नियम 5: सप्तमी बहुवचन में सुं प्रत्यय भी होता है। जैसे-जिणेसुं।

नियम 6: अस् (है) धातु से भूतकाल के अर्थ में ''आसि'' यह आदेश होता है।
अहं आसि(मैं था), सो आसि(वह था), तुमं आसि(तुम थे)।

प्रयोग:

1. भरतक्षेत्र का कितना प्रमाण है।
   = भरयखेत्तस्स केत्तिअं पमाणं अत्थि।
2. जितना प्रमाण जम्बूद्वीप का है, उतना ही ऐरावत हाथी का है।
   = जित्तिअं पमाणं जबूंदीवस्स अत्थि तित्तिअं एव एरावदस्स अत्थि।
3. सिद्ध भगवान् कितने हैं।
   = सिद्धभगवंता कित्तिला संति।

4. तुम इतना भोजन क्यों करते हो?
   = तुमं एद्दहं भोयणं कधं करसि।
5. कितनी दूर यहाँ से सागर है।
   = कित्तिअं दूरं इदो सायरो अत्थि।
6. ये वृक्ष छाया वाले नहीं हैं।
   = इमे तरुणो छायिल्ला ण संति।
7. साधु पर्वत पर अकेला रहता है।
   = साहू सेले एकल्लो वसइ।
8. नये शास्त्र यहाँ नहीं हैं।
   = णवल्लाणि सत्थाणि अत्थ ण संति।
9. अपना पुत्र कहाँ चला गया?
   = अप्पुल्लो पुत्तो कत्थ चलीअ।
10. वह लज्जाशील स्त्री है।
    = सा लज्जिरा इत्थी अत्थि।

(क) अभ्यासः

(अ) ये कितनी वस्तुएँ हैं।
इस कन्या में कितना ज्ञान है।
नये वस्त्र धारण करो।
इतने मनुष्य वहाँ से यहाँ आवें।
जितने साधु यहाँ हैं, उतने ही वहाँ श्रावक हैं।

(ब) नई सासू खुश थी।
यह पर्वत कितना ऊँचा था।
उनके गाँव से हमारा घर इतना दूर था।
सिद्ध शिला यहाँ से कितनी दूर थी।
अपने से कौन कितना दूर था।

(स) अकेला मनुष्य यहाँ आयेगा।
वह नये ग्रन्थ लिखेगा।
क्या वृक्ष छाया वाला होगा।

हम सब गुरु के नये शिष्य को देखेंगे।
दयास्वभाव वाली स्त्री यहाँ आवेगी।

(ख) शुद्ध करें:

1. केद्दहो पमाणं अत्थि।
2. एकल्ल णरो चिट्ठइ।
3. णव सीसो सम्मं णिवसइ।
4. छायिल्लो वत्थं अत्थि।
5. हसिरो इत्थी कदा कत्थ चलीअ।

गृहकार्य: 1. अभ्यास में दिये वाक्यों को अन्य-अन्य कालों में बनावें।
2. आढप्प क्रिया पद को सभी कालों में याद करें।
3. कित्तिअ के रूप स्त्रीलिंग में चलावें।

अर्थ बतावें:

केद्दहं ( ), हसिरो ( )
गव्विरा ( ), एक्को ( )
इत्थी ( ), उज्जाण ( )

उत्तर

(क) (अ) 1. एआइं केत्तिआइं वत्थूइं संति।
2. इमाए कण्णाए कित्तिलं णाणं अत्थि।
3. णवल्लाइं वत्थाइं धारहि।
4. एत्तिआ णरा तत्तो अत्थ आगच्छंतु।
5. जित्तिआ साहुणो अत्थ संत्ति तित्तिआ तत्थ सावया संति।

(ब) 1. णवल्ला सासू हरिसिआ आसि।
2. इमो गिरी केत्तिओ उच्चो आसि।
3. ताणं गामत्तो अम्हाण घरो एत्तिअं दूरं आसि।
4. सिद्धसिला एत्तो केत्तिअं दूरं आसि।
5. अप्पत्तो को केत्तिअं दूरं आसि।

(स) 1. एकल्लो णरो अत्थ आगच्छिहिइ।
2. सो णवल्ले गंथे लिहिहिदि।
3. किं तरू छायिल्लो होहिइ।
4. अम्हे गुरुणो णवल्लं सिस्सं देक्खिहिमो।
5. दयावंता इत्थी अत्थ आगच्छिहिइ।

(ख) 1. केइहं।
2. एक्ल्लो।
3. णवो।
4. छायिल्लं
5. हसिरा।

गृहकार्यः **1.** आसि, आसि, धारीअ, आगच्छीअ, आसि।
हरिसइ, अत्थि, अत्थि, अत्थि, अत्थि।
आगच्छउ, लिहउ, होउ, पासमो, आगच्छउ।

2. **आढप्प क्रिया**-वर्तमान-आढप्पइ, आढप्पंति। आढप्पसि, आढप्पह। आढप्पामि, आढप्पामो।
भूत-आढप्पीअ सभी पुरुष, वचनो में यही रूप।
भविष्यत्-आढप्पिहिइ, आढप्पिहिंति। आढप्पिहिसि, आढप्पिहिह। आढप्पिहिमि, आढप्पिहिमो।
विधि-आढप्पउ, आढप्पंतु। आढप्पहि, आढप्पह। आढप्पमु, आढप्पमो।

3. **कित्तिअ**-स्त्री.-कित्तिआ, कित्तिआओ। कित्तिअं, कितिआओ। कित्तिआअ-इ-ए, कित्तिआहि-हिं-हिँ। कित्तिआअ-इ-ए, कित्तिआण-णं। कित्तिअत्तो-अ-इ-ए आदि, कित्तिआहिंतो आदि। कित्तिआअ-इ-ए, कित्तिआण-णं। कित्तिआअ-इ-ए, कित्तिआसु-सुं। हे कित्तिआ, हे कित्तिआओ।

अर्थ-कितना, हसने के स्वभाव वाला, गर्व युक्त, अकेला, स्त्री, उद्यान।

अभ्यास 6

अव्यय शब्दः तहिं (वहाँ), तह (वहाँ), कहिं (कहाँ), कह (कहाँ), जहिं (जहाँ), जह (जहाँ), एत्थ (यहाँ), इह (यहाँ), एकसि (एक बार), उवरिं (ऊपर)।

तरह, समानता या उपमा अर्थ में प्रयुक्त होने वाले शब्द -

= मिव, पिव, विव, विअ, व, व्व।

= निश्चय या संभावना अर्थ में- किर, इर, हिर।

अम्हो (आश्चर्य), हु, खु (निश्चय, विस्मय, वितर्क)

ओ (पश्चाताप, सूचन), खलु (निश्चय), हुं(पूछने, रोकने)

च,य,तु,दु (और, तथा), आम (हाँ, स्वीकार करना),

अन्तरेण (बिना), विणा (बिना), अन्तरा (बीच में, मध्य में)।

व्याकरण (वर्तमान काल के हस धातु के पूरे रूप)

प्रत्यय-	**एकवचन**	**बहुवचन**
अन्य पु.-	इ, ए, दि, दे	न्ति, न्ते
मध्यम पु.-	सि, से	ह, इत्था, ध
उत्तम पु.-	मि	मो, मु, म

''हस ''

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्य पु.-	हसइ, हसए, हसदि, हसदे	हसन्ति, हसन्ते
मध्यम पु.-	हससि, हससे	हसह, हसित्था, हसध
उत्तम पु.-	हसमि	हसमो, हसमु, हसम

नियम 1: ''हित्थहास्त्रलः (प्रा.-श. 2.1.7)'' सूत्र से सप्तमी के अर्थ में हिं,त्थ, ह, ये प्रत्यय होते हैं। जैसे- कहिं, कत्थ, कह। जहाँ तहाँ का प्रयोग जहाँ आता है वह पर सदृश प्रत्यय का ही प्रयोग करें। जैसे- जत्थ के साथ तत्थ। कहिं के साथ तहिं।

नियम 2: ''एक बार'' अर्थ में सिआ इया प्रत्यय होते हैं।
एकसिआ, एकइया।

नियम 3: उपरि शब्द से ''ल्ल'' प्रत्यय होता है ऊपर-ऊपर अर्थ यदि है तो उवरिल्लो पासादो अत्थि। किन्तु सामान्य ऊपर अर्थ हो तो उवरिं यह रूप रहेगा। उवरिं णरो अत्थि (ऊपर मनुष्य है)। उवरिल्ल यह विशेषण शब्द हैं। विशेष्य के अनुसार रूप चलेंगे।

नियम 4: अन्तरेण, विणा, अन्तरा, दूर, अंतिय (समीप) इन अर्थ वाले शब्द के साथ भी द्वितीया विभक्ति होती है।

प्रयोग:

1. जहाँ-जहाँ धुआँ है वहाँ-वहाँ अग्नि है।
   = जहिं-जहिं धूमो अत्थि, तहिं-तहिं अग्गी अत्थि।
2. एक बार राजा के महल में चोर आया।
   = एकसि रायस्स पासादम्मि चोरो आगच्छीअ।
3. सौधर्म स्वर्ग के ऊपर माहेन्द्र स्वर्ग है।
   = सोधम्म-सग्गस्स उवरिं माहिंदसग्गो अत्थि।
4. विद्याधर कहता है-हाँ मैंने किया है।
   = विज्जाहरो कहइ-आम अहं करमि।
5. माता की तरह पुत्री का मुख है।
   = माआ विव पुत्तीए मुहो अत्थि।
6. बीजों से पुष्प और पुष्पों से फल उत्पन्न होते हैं।
   = बीजाहिंतो पुप्फाणि पुप्फाहिंतो फलाणि च जायंति।
7. यह कौन! साहस वाला पुरुष है।
   = इमो को खु साहसवंतो पुरिसो अत्थि।
8. अहो! गोम्मटेश की प्रतिमा कितनी मनोहर है।
   = अम्हो! गोमटेसस्स पडिमा केत्तिआ मणोहरा अत्थि।
9. यह धुआँ है, या धूली है।
   = इमो धूमो अत्थि हु धूली अत्थि।
10. वह बालक स्वीकार करता है।
    = सो बालओ आम करइ।
11. रुको! तुम।
    = हुं! तुमं।

(क) अभ्यास:

(अ) 1. क्रोध और माया कहाँ हैं।
2. बालक की तरह इसका कार्य है।
3. वहाँ कहाँ जा रहे हो।
4. अहो! राजा यहाँ आ रहा है।
5. हाँ! मैं अच्छी तरह कार्य नहीं करता हूँ।

(ब) 1. ऊपर-ऊपर मनुष्य था।
2. तुम्हारा मित्र ही वहाँ था।
3. तुम्हारे मुख की तरह उस पुरुष का मुख था।
4. वह एक बार ही यहाँ आया था।
5. अहो! वहाँ पर कोई भी नहीं था।

अर्थ बतावें: कह ( ), विव ( ), आम ( ),
तु ( ), खलु ( ), विणा ( ),
सणिअं ( ), अवस्स ( )।

गृहकार्य: 1. अभ्यास के वाक्यों को जो वर्तमान काल में है उन्हें अन्य कालों में परिवर्तित करें, एवं भूत काल के वाक्यों को भी अन्य कालों में परिवर्तित करें।
2. कोई भी पाँच अव्यय अर्थ सहित लिखें।
3. अकारान्त पु. में किसी भी एक शब्द के रूप पूरे लिखें।

उत्तर

(क) (अ) 1. कोहो माया च कहिं संति।
2. बालओ व्व इमस्स कज्जं अत्थि।
3. तत्थ कहिं गच्छसि।
4. अम्हो! णरिंदो एत्थ आगच्छइ।
5. आम! अहं सम्मं कज्जं ण करामि।

(ब) 1. उवरिं उवरिं णरो आसि।
2. तुज्झ मित्तो एव तत्थ आसि।

3. तुज्झ मुहेण सरिसो तस्स पुरिसस्स मुहं आसि।
4. सो एक्कसि च्चिय अत्थ आगच्छीअ।
5. अहो! तहिं को वि ण आसि।

गृहकार्य: 1. (क) आसि, अत्थि, अत्थि। आसि, अत्थि, अत्थि। गच्छीअ, गच्छिहिसि, गच्छहि। आगच्छीअ, आगच्छिहिइ, आगच्छउ। करीअ, करिहिम, करमु।

(ख) अत्थि, अत्थि, अत्थि। अत्थि, अत्थि, अत्थि। अत्थि, अत्थि, अत्थि। आगच्छइ, आगच्छिहिइ, आगच्छउ। अत्थि, अत्थि, अत्थि।

2. अपनी इच्छा से लिखें।
3. किसी भी शब्द का चयन कर जिण के समान रूप लिखें।

अभ्यास 7

संज्ञा शब्दः गंगा (स्त्री.)- गंगा, जउणा (स्त्री.)-यमुना, पयाग (पु.)- प्रयाग, जइ (पु.)- यति, कलह (पु.)-लड़ाई, दिवायर (पु.)-सूर्य, दुग्ग (पु.)-किला, वय (पु.)-व्रत, णेत्त (नपु.)-नेत्र, मोण (नपु.) मौन, वच (नपु.)-वचन, उदर (नपु.)-पेट, धुआ (स्त्री.)-पुत्री, दुहिदा (स्त्री.)-पुत्री, माअरा (स्त्री.)-माता, अज्झयण (नपु.)- अध्ययन, झाण (नपु.)- ध्यान।

क्रियापदः कुज्झ (क्रोध करना), मग्ग (माँगना), चुण (चुनना, इकट्ठा करना), दुह (दुहना), सुमर (याद करना), उववस (रहना), पच्छाल (धोना, प्रक्षाल करना), रोअ (अच्छा लगना)।

व्याकरण (गंगा)

	एक.	बहु.
प्र.	गंगा	गंगा, गंगाउ, गंगाओ
द्वि.	गंगं	गंगा, गंगाउ, गंगाओ
तृ.	गंगाअ, गंगाइ, गंगाए	गंगाहि, गंगाहिं, गंगाहिँ
च.	गंगाअ, गंगाइ, गंगाए	गंगाण, गंगाणं
पं.	गंगाअ, गंगाइ, गंगाए, गंगत्तो, गंगादो, गंगादु, गंगाओ, गंगाउ, गंगाहिंतो	गंगत्तो, गंगाओ, गंगाउ, गंगादु गंगादो, गंगाहिंतो, गंगासुंतो
ष.	गंगाअ, गंगाइ, गंगाए	गंगाण, गंगाणं
स.	गंगाअ, गंगाइ, गंगाए	गंगासु, गंगासुं

नियम 1.: पंचमी बहुवचन में अकारान्त शब्दों को प्रत्यय परे रहते ए भी होता है। जिणेहिंतो, राआणेसुंतो।

नियम 2.: वर्तमान काल के अन्य पुरुष एकवचन के प्रत्यय 'इ, दि' बहुवचन के 'न्ति' एवं मध्यम पुरुष एकवचन के 'सि', बहु. के 'ह', 'इत्था', 'ध' प्रत्यय परे रहते (बाद में होने पर) अकारान्त धातुओं के अ को ए भी हो जाता है।

अ. पु.- हसइ / हसेइ। हसदि / हसेदि। हसन्ति /हसेन्ति।
म. पु.- हससि /हसेसि। हसह / हसेह। हसित्था / हसेइत्था।
हसध / हसेध।

नियम 3: वर्तमान काल उत्तम पु. एकवचन के प्रत्यय 'मि' के परे रहते अकारान्त धातुओं के अ को आ और ए भी होता है तथा बहुवचन के 'मो, मु व म' के परे रहते अ को आ, इ व ए भी होता है।

उत्तम पु.: हसमि / हसामि / हसेमि। हसमो / हसामो / हसिमो / हसेमो। (इसी प्रकार मु. म में भी करने से हसमु / हसामु / हसिमु / हसेमु। हसम / हसेम / हसाम, हसिम रूप बनते हैं।)

प्रयोग:

1. ज्ञान के बिना सुख नहीं।
   = णाणं विणा सुहं णत्थि।
2. श्रमण के बिना श्रावक नहीं।
   = समणं अन्तरेण सावयो णत्थि।
3. गंगा और यमुना के बीच में प्रयाग है।
   = गंगं जउणं च अन्तरा पयागो अत्थि।
4. धर्म से दुर्जन दूर है।
   = धम्मत्तो दुज्जणं दूरं अत्थि।
5. नदी के समीप यति बसता है।
   = णईए अंतियं जई वसइ।
6. यतियों में क्रोध नहीं होता है।
   = जईसुं कोहो ण होइ।
7. लड़ाई नहीं करो।
   = कलहो ण करहि।
8. पेट में भोजन इकट्ठा होता है।
   = उदरम्मि भोयणं एयट्ठं हवइ।
9. मौन अच्छा लगता है।
   = मोणं रोअइ।
10. भव्य जीव जिनदेव का प्रक्षाल करता है।
    = भव्वजीवो जिणदेवस्स पच्छालं करइ।

(क) अभ्यास:

(अ) 1. गुरु के बिना शिक्षा नहीं है।
2. जल के बिना मनुष्य नहीं जीता है।
3. उसके बिना मैं नहीं हूँ।
4. मेरे घर के पास वह ठहरा है।
5. तुम सब के बिना अध्ययन नहीं है।

(ब) 1. व्रत व ध्यान के बिना मोक्ष नहीं होगा।
2. पुत्री कल माता के निकट होगी।
3. युवतियाँ यति के निकट कलह के बिना रहेगीं।
4. यहाँ का किला अच्छा होगा।
5. कोई भी यति क्रोध नहीं करेगा।
6. वह प्रयाग में मौन धारेगा।
7. मैं गुरू के निकट जाऊँगी।

(ख) शुद्ध करो:

जुवई विणा। गुरुस्स अंतियं। अमूओ आगच्छइ।
अप्पाणं झंति। मौणो अत्थि। वचो ण बोल्लइ।

गृहकार्य: 1. अभ्यास 'क' के वाक्यों को आज्ञा या विधि काल में परिवर्तित करो।
2. अभ्यास 'ख' के वाक्यों को वर्तमान व भूतकाल में परिवर्तित करो।
3. कुज्झ क्रिया पद के पूरे रूप स्मरण करो।

स्वयं की परीक्षा स्वयं करें

पूर्णांक - 100

प्र. 1. प्राकृत में मूल शब्द लिखें। **30**

वह ( ), यह ( ), कौन ( ),
कन्या ( ), मुख ( ), कवि ( ),
इतना ( ), एक बार ( ), कब ( ),
वह ( ), जितना ( ), निश्चय ( ),
युवति ( ), राजा ( ), नदी ( ),
जल ( ), चश्मा ( ), यौवन ( ),
विद्या ( ), शोभा ( ), कथा ( ),
ग्रन्थ ( ), प्यास ( ), स्मृति ( ),
रात ( ), मैं ( ), मरघट ( ),
तृषा ( ), प्राकृत ( ), बुद्धिमान ( ),

प्र. 2. क्रिया पदों के अर्थ लिखें। **10**

थुण ( ), मुण ( ),
थक्क ( ), डर ( ),
उच्छल ( ), कंद ( ),
झा ( ), णे ( ),
बीह ( ), दरिस ( ),

प्र. 3. प्राकृत वाक्यों का हिन्दी में अर्थ लिखें। **10**

1. अहं कल्ल आगच्छीअ।
2. सो पोत्थअं पढेदि।
3. अमू तं बोल्लिहिइ।
4. सव्वे बालआ अत्थ संति।
5. णाणवंता जणा कह अत्थि अज्ज।

प्र. 4. वाक्यों की रचना प्राकृत में करें: 10

1. अरिहंत भगवान् के लिए हम क्या दें।
2. ईर्ष्यालु मनुष्य सब जगह दुःख प्राप्त करते हैं।
3. वीर भगवान् से धर्म तीर्थ चल रहा है।
4. मैं पकाने के लिए वहाँ जाता हूँ।
5. जो जीता था, जो जीता है और जो जीवेगा उसे जीव जानो।

प्र. 5. स्त्री. व नपु. लिंग के उकारान्त शब्द कोई पाँच लिखो। 10

प्र. 6. **क**–विणा के योग में कौन–कौन सी विभक्तियाँ होती हैं। 12
ख–पंचमी विभक्ति कहाँ–कहाँ होती है। कोई दो उदाहरण दो।
ग–अधिकरण या आधार में कौन सी विभक्ति होती है।

प्र. 7. जिण शब्द के पूरे रूप लिखें। 8

उत्तर

(क) (अ) 1. गुरुं विणा सिक्खा णत्थि।
2. जलेण विणा णरो ण जीवइ।
3. तं विणा अहं णत्थि।
4. मज्झ घरस्स अंतियं सो ठाइ।
5. तुमेहिं विणा अज्झयणं णत्थि।

(ब) 1. वयं झाणं च विणा मोक्खो णत्थि।
2. पुत्ती कल्लिं मायाए अंतियं होहिइ।
3. जुवईओ जइं समीवं कलहेण विणा उववसिहिंति।
4. इमस्स दुग्गो सुट्ठु होहिइ।
5. को वि जई कोहं ण करिहिदि।
6. सो पयागे मोणं धारिहिइ।
7. अहं गुरुं समीवे गच्छिहिमि।

गृहकार्य: 1. णत्थि, जीवउ, होमु, ठाउ, णत्थि।

2. होइ, होहीअ। हवइ, हवीअ। णिवसंति, णिवसीअ। होइ, होहीअ, करइ, करीअ। धारइ, धारीअ। गच्छमि, गच्छीअ।

3. कुज्झ-वर्त.-अ.पु.-कुज्झइ-कुज्झेइ, कुज्झदि-कुज्झेदि। कुज्झंति-कुज्झेंति।

म.पु.-कुज्झसि-कुज्झेसि। कुज्झह-कुज्झेह, कुज्झित्था-कुज्झेइत्था, कुज्झध-कुज्झेध।

उ.पु.-कुज्झमि-कुज्झामि-कुज्झेमि। कुज्झमो-कुज्झामो-कुज्झिमो-कुज्झेमो, कुज्झमु-कुज्झामु-कुज्झिमु-कुज्झेमु, कुज्झम-कुज्झाम-कुज्झिम-कुज्झेम।

भूतकाल-कुज्झीअ, कुज्झीअ। कुज्झीअ, कुज्झीअ। कुज्झीअ, कुज्झीअ।

भविष्यत्-कुज्झिहिइ, कुज्झिहिंति। कुज्झिहिसि, कुज्झिहिह। कुज्झिहिमि, कुज्झिहिमो।

विधि-कुज्झउ, कुज्झंतु। कुज्झहि, कुज्झह। कुज्झमु, कुज्झमो।

उत्तर- स्वयं की परीक्षा स्वयं करें:

प्र.1. त, इम, क, बाला, मुह, कवि, इत्तिल, सइ, कदा, अमु, जेत्तिअ, खलु, जुवइ, णरिंद, णई, वारि, एणगो, जोव्वण, विज्जा, सोहा, कहा, गंध, तिसा, सति, रत्ति, अहं, मसाण, तिसा, पाइय, धीवंत।

प्र.2. स्तुति करना, जानना, थकना, डरना, उछलना, रोना, ध्यान करना, ले जाना, डरना, दिखलाना।

प्र.3. 1. मैं कल आया था।

2. वह पुस्तक/ग्रंथ पढ़ रहा है।

3. वह उसको बोलेगा।

4. सभी बालक यहाँ पर हैं।
5. ज्ञानवान् मनुष्य कहाँ हैं आज।

प्र.4. 1. अरिहंत भगवंतस्स अम्हे किं दामो।
2. ईसावंता णदा सव्वत्त दुल्खं पावंति।
3. वीरभगवंतत्तो धम्मतित्थं चलइ।
4. अहं पचिउं तत्थ गच्छामि।
5. जो जीवीअ जो जीवइ जो जीविहिइ च तं जाणहि।

प्र.5. स्वयं चयन करें।

प्र.6. क. द्वितीया, तृतीया।
ख. 'से' के अर्थ में, जिससे अलग हो, उत्पन्न हो, भय हो, रक्षा हो, पढ़ना हो, तुलना से तथा कारण (हेतु) में।
ग. सप्तमी।

प्र.7. जिण के रूप शब्द रूप में देखें।

अभ्यास 8

पु. संज्ञा शब्दः अवराह (अपराध), आगम (शास्त्र), कर (हाथ), चाय (त्याग), दिवायर (सूर्य), पइ (पति), पिआमह (दादा), पोत्त (पोता), कयंत (मृत्यु), पड (वस्त्र), परिहार (त्याग), भव (संसार), माउल (मामा), पिअ (पिता), मेह (मेघ), रहुणंदण (राम), विणय (नम्रता), सक्क (इन्द्र), उदग (पानी), सायर (समुद्र), हणुवंत (हनुमान), मित्त (मित्र), रयण (रत्न), सलिल (पानी)।

क्रियापदः अकर्मक क्रियाः अच्छ (बैठना), उवविस (बैठना), खंज (लंगड़ाना), खास (खांसना), खिस (खिसकना), गल (गलना), गुंज (गूँजना), गज्ज (गरजना), चिट्ठ (बैठना)।
सकर्मक क्रियाः अस (खाना), आरुह (ऊपर चढ़ना), इच्छ (इच्छा करना), गच्छ (जाना), उवयर (उपकार करना), गरह (निन्दा करना), चक्ख (चखना), चुअ (त्याग करना)।

व्याकरण

भूतकालिक कृदन्त व वाच्य

1. अवराह शब्द से लेकर मित्त शब्द के रूप जिण की तरह चलेंगे एवं पइ शब्द पु. इकारान्त णाणि की तरह।
2. मित्त शब्द पु. नपु. दोनों में चलता हैं। पु. में मित्तो एवं नपु. में मित्तं।
3. अच्छ से लेकर चुअ तक के क्रियाओं के रूप चारों कालों में पूर्व की तरह (हस की तरह) चलेगें।

नियम 1: गया, हुआ आदि भूतकाल का भाव प्रकट करने के लिए भूतकालिक क्रिया के अतिरिक्त भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग किया जाता है। क्रिया में अ/य, त, द प्रत्यय लगाकर भूतकालिक कृदन्त बनाये जाते हैं। क्रिया में इन प्रत्ययों के लगाने पर क्रिया के अन्त्य 'अ' का 'इ' हो जाता है।

हस + अ/ हस् + इ+ अ = हसिअ (हँसा)

नियम 2: ये भूतकालिक कृदन्त विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं अर्थात् विशेष्य के अनुसार ही इनके रूप चलते हैं। जैसे-णरो हसिओ। बाला हसिआ। मित्तं हसिअं।

नियम 3: भूतकालिक प्रत्यय सकर्मक व अकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं के साथ जोड़े जाते हैं। सकर्मक- पढ़-पढिअ। अक.-हस-हसिअ।

नियम 4: सकर्मक क्रिया से कर्म वाच्य एवं अकर्मक क्रिया से कर्तृवाच्य. व भाव वाच्य होते हैं।

नियम 5: वाच्य तीन प्रकार के होते है-1. कर्तृ वाच्य 2.कर्म वाच्य 3. भाव वाच्य।

कर्तृ वाच्य- जिस वाक्य में कर्ता की मुख्यता होती है एवं कर्ता के अनुसार ही क्रिया को रखा जाता है। इसमें कर्ता में प्रथमा विभक्ति, कर्म में द्वितीया विभक्ति एवं क्रिया कर्तानुसार रखी जाती है। लेकिन कृदन्त प्रयोग में कर्तृवाच्य में कर्म का प्रयोग नहीं होता है। सो हसिओ।

कर्म वाच्य- जिस वाक्य में कर्म की मुख्यता होती है एवं क्रिया कर्मानुसार होती है। इसमें कर्ता में तृतीया विभक्ति एवं कर्म में प्रथमा विभक्ति तथा क्रिया कर्म के अनुसार होगी। तेण पोत्थअं पढिअं।

भाव वाच्य- इसमें क्रिया का अपने ही रूप में होना मात्र मुख्य है। जैसे- हँसा, सोया। इसमें कर्ता में तृतीया विभक्ति एवं क्रिया अन्य पुरु ष एक वचन में ही होती है। लेकिन कृदन्त प्रयोग में भाव वाच्य में क्रिया नपु. प्रथमा एकवचन की होगी। तेण हसिअं।

प्रयोग: कर्तृवाच्य: वह बैठी-सा अच्छिआ।
वह खाँसा- सो खासिदो।
वस्त्र खिसका - वत्थं खिसियं।
मेघ गरजा-मेहो गज्जितो।
सब पुत्र बैठे- पुत्ता अच्छिआ।

भाव वाच्य: उसके द्वारा बैठा गया(स्त्री.)-ताए अच्छिअं।
उसके द्वारा खांसा गया(पु.)-तेण खासिदं।
सब बालिकाओं के द्वारा बैठा गया-सव्वाहिँ बालाहिँ उवविसिदं।
मेघों के द्वारा गरजा गया-मेहेहिं गज्जिदं।
वस्त्र के द्वारा खिसका गया- वत्थेण खिसियं।

कर्म वाच्य: मेरे द्वारा भोजन खाया गया-मए भोयणं असिदं।
हम सबके द्वारा ग्रन्थों की इच्छा की गई-अम्हेहि गंथा इच्छिआ।
माताओं के द्वारा पुत्र देखा गया-माआहिं पुत्तो देक्खिदो।
पिता के द्वारा पुत्री बुलाई गई-बप्पेणं पुत्ती कोक्किदा।

(क) अभ्यास:

(अ) 1. वह रहा। 2. वह उत्पन्न हुई। 3. वे सब डरे।
4. तुम सब जागे। 5. हम सब नाचे। 6. तुम सब हुए।
7. युवतियाँ प्रसन्न हुई। 8. गुरु ठहरे।

(ब) 1. तुम सब के द्वारा हँसा गया।
2. इन सबके द्वारा जागा गया।
3. माताओं के द्वारा खुश होया गया।
4. दादा के द्वारा घूमा गया।
5. पतियों के द्वारा नाचा गया।
6. वस्त्र के द्वारा गला गया।
7. मामा के द्वारा खाँसा गया।

(स) 1. उन सबके द्वारा फल खाये गये।
2. हम सबके द्वारा जिनालय जाया गया।
3. दुर्जन के द्वारा अपराध का त्याग किया गया।
4. पोतों के द्वारा पितामह को बुलाया गया।
5. हनुमान के द्वारा राम पूजा गया।

(ख) शुद्ध करोः

1. सो इच्छिआ।
2. सक्को सग्गं गच्छिदं।
3. पोत्तेणं अवराहो चुअया।
4. तेण खंजिआ।
5. मए खासितो।

गृहकार्यः 1. अभ्यास 'क' के वाक्यों को भाववाच्य मे परिवर्तित करें।

2. अभ्यास 'ख' के वाक्यों को कर्तृवाच्य में बनावें।
3. सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं की पहचान बतावें।

उत्तर

(क) (अ) 1. सो वसिओ।

2. सा उप्पण्णा।
3. ते भीया।
4. तुम्हे जग्गिआ।
5. अम्हे णच्चिआ।
6. तुम्हे हुवया।
7. जुवईओ हरिसिआओ।
8. गुरुणो ठाआ।

(ब) 1. तुम्हेहिं हसिअं।

2. एदेहिं जग्गिअं।
3. मायाहिं उल्लसिअं।
4. पिआमहेण घुमिअं।
5. पईहिं णच्चिअं।
6. वत्थेण गलिअं।
7. माउलेण खासिअं।

(स) 1. तेहिं फलाणि खाइआणि।
2. अम्हेहिं जिणालयो गच्छिओ।
3. दुज्जणेण अवराहो चुइदो।
4. पोतेहिं पिआमहो कोक्किओ।
5. हणुमंतेण रहुणंदणो अच्चिओ।

(ख) 1. ओ
2. दो
3. यो
4. अं
5. दं

गृहकार्य: 1. तेण वसिअं। ताए जासिदं। तेहि बीहियं। तुम्हेहिं जग्गिअं। अम्हेहिं णच्चिदं। तुम्हेहिं हवियं। जुवईहिँ हरिसिअं। गुरुणा ठादं।

2. तुम्हे हसिआ। इमे जग्गिदा। माआओ हरिसियाओ। पिआयहो घुमितो। पइणो णच्चिदा। वत्थं डालियं। माउलो खासिओ।

3. **सकर्मक**-जिसमें क्रिया का प्रभाव कर्म पर पड़े या जिसमें किसका, किसकी की ओर लगाने पर कर्म का ज्ञान या अपेक्षा होवे वह सकर्मक क्रिया है।

अकर्मक-जिसका कोई कर्म नहीं होता। जिसमें क्रिया का प्रभाव कर्त्ता पर पड़े या किसकी, किसका इन प्रश्नों की अपेक्षा न रहे वह अकर्मक क्रिया है।

अभ्यास 9

त, द, अ, य इन भूतकालिक कृदन्त प्रत्ययों से भिन्न कुछ बने हुये भूतकालिक कृदन्त क्रियाएँ:

अ: **अकर्मक क्रिया**- मुअ (मरा), थिअ (ठहरा), संतुट्ठ (प्रसन्न हुआ), णट्ठ (नष्ट हुआ), सुत्त (सोया), बद्ध (बंधा), भीय (डरा), पसण्ण (प्रसन्न हुआ)।

ब: गअ/गय (गया), पत्त (पहुँचा)।

स: **सकर्मक क्रिया** - दड्ढ (जलाया गया), दिण्ण (दिया गया), दिट्ठ (देखा गया), दुम्मिय (कष्ट पहुँचाया गया), णीय (ले जाया गया), लुअ (काट दिया गया), वुत्त (कहा गया), हय (मारा गया), णिहिय (रक्खा गया), किय (किया गया), खद्ध (खा लिया गया), छुद्ध (डाल दिया गया), संपुण्ण (पूर्ण कर दिया गया), पवण्ण (प्राप्त किया गया), पत्त (प्राप्त हुआ), णिदिट्ठ (कहा), लद्ध (प्राप्त)।

व्याकरण (भूतकालिक कृदन्त)

ऊपर दी हुई मुअ से लेकर लद्ध तक के भूतकालिक कृदन्त अपने-अपने संज्ञारूप विशेष्य के लिंगों के अनुसार चलेंगे:

पु. में = मुओ । गओ । दड्ढो आदि।
नपु. में = मुअं । गअं । दड्ढं आदि।
स्त्री. में = मुआ। गआ । दड्ढा आदि।
सामान्य भूतकाल के प्रत्यय-

	एक.	बहु.
अ.पु.	ईअ, इत्था, इंसु, सी, ही, हीअ।	ईअ, इत्था, इंसु, सी, ही, हीअ
म.पु.-	ईअ, इत्था, इंसु, सी, ही, हीअ।	ईअ, इत्था, इंसु, सी, ही, हीअ
उ.पु.-	ईअ, इत्था, इंसु, सी, ही, हीअ।	ईअ, इत्था, इंसु, सी, ही, हीअ

'हस' धातु

	एकवचन	बहुवचन
अ.पु.	हसीअ, हसित्था, हसिंसु	हसीअ, हसित्था, हसिंसु
म.पु.	हसीअ, हसित्था, हसिंसु	हसीअ, हसित्था, हसिंसु
उ.पु.	हसीअ, हसित्था, हसिंसु	हसीअ, हसित्था, हसिंसु

नियम 1: गति अर्थ वाली क्रियाओं से बने भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग कर्तृवाच्य में किया जाता हैं। अतः कर्ता में प्रथमा विभक्ति, कर्म में द्वितीया विभक्ति एवं क्रिया कर्तानुसार चलेंगी। जैसेः वह स्वर्ग गया - सो सग्गं गओ।

नियम 2: गत्यर्थ क्रियाएँ (गच्छदि) सकर्मक होने से कर्मवाच्य में भी चलती हैं। तेण सग्गो गओ।

नियम 3: इकारान्त (इ,ई), उकारान्त (उ,ऊ) पुल्लिंग वाची शब्दों से परे प्रथमा विभक्ति के बहुवचन (जस्) को अउ, अओ ये दो आदेश होते हैं। जैसेः णाणि-णाणउ, णाणओ। वाउ- वाअउ, वाअओ।

नियम 4: पु. में इकारान्त, उकारान्त शब्दों से परे प्रथमा व द्वितीया वि. के बहुवचन को 'णो' यह आदेश होता हैं। णाणिणो, वाउणो।

नियम 5: उकारान्त पु. शब्दों से परे प्रथमा विभक्ति के बहु. को (ऽवो) यह भी आदेश होकर रूप बनता हैं। साहू-साहवो।

नियम 7: अकारान्त क्रियाओं में भूतकाल के ईअ, इत्था, इंसु प्रत्यय सभी वचनों एवं सभी पुरुषों में लगाये जाते हैं। गच्छीअ, गच्छित्था, गच्छिंसु।

नियम 8: आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं में सभी वचनों व पुरुषों में भूतकाल के सी, ही, हीअ, इत्था एवं इंसु प्रत्यय लगाये जाते हैं। ठासी, ठाही, ठहीअ, ठाइत्था, ठाइंसु।

प्रयोगः अकर्मक क्रिया से कर्तृवाच्य-

1.	पुत्र प्रसन्न हुए	-	पुत्ता संतुट्ठा।
2.	गांव का मुखिया सोया	-	गामणी सुत्तो।
3.	सेनापति ठहरा	-	सेणावई थिओ।
4.	माताएं डरी	-	माआओ भीयाओ।
5.	कौन मरा	-	को मुओ।

गत्यर्थ से कर्तृवाच्य-

1.	कवि घर गया	-	कई घरं गओ / गयो।
2.	पोते गाँव गये	-	पोत्ता गामं गआ।
3.	माता खेत पहुँची	-	माया खेत्तं पत्ता।

अकर्मक क्रिया से भाववाच्य-

1. तुम सबके द्वारा प्रसन्न हुआ गया - तुम्हेहिं संतुट्ठं।
2. युवतियों के द्वारा ठहरा गया - जुवईहिँ थिअं।
3. दुर्जन के द्वारा डरा गया - दुज्जणेणं भीयं।
4. शत्रु के द्वारा नष्ट हुआ गया - रिउणा णट्ठं।

सकर्मक क्रिया से कर्मवाच्यः

1. जीवों के द्वारा मोक्ष प्राप्त किया गया।
   = जीवेहि मोक्खो पत्तो।
2. तुम्हारे द्वारा कल क्या कहा गया था।
   = तुमए कल्ल किं णिदिट्ठं।
3. जिन के द्वारा सब देखा गया।
   = जिणेण सव्वो दिट्ठो।
4. मेरे द्वारा विद्यालय में छात्र ले जाया गया।
   = मए विज्जालये छत्तो णीयो।

(क) अभ्यासः

(अ) 1. पोता दादा के लिए (चतुर्थी वि.) घर पहुँचा।
2. हनुमान बंधा।
3. वह समुद्र गया।
4. इन सब के द्वारा नष्ट हुआ।
5. चोरों के द्वारा डरा गया।
6. गुरु प्रसन्न हुए।
7. कर्म नष्ट हुए।
8. राजा नहीं मरा।
9. मामा यहाँ ठहरा।
10. संसारी जीव सोया।

(ब) 1. मुनि के द्वारा पिता को शास्त्र दिए गए।
2. सज्जन के द्वारा दुर्जन देखा गया।
3. राम व हनुमान के द्वारा त्याग किया गया।
4. सेनापति के द्वारा सत्य कहा गया।
5. अपराध के द्वारा उसे कष्ट पहुँचा।

गृहकार्य: 1. सकर्मक व अकर्मक क्रियाओं की पहचान करें।
खिस, अस, इच्छ, गल, गुंज, गच्छ, हस, चक्ख, गज्ज, चुअ।
2. कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य की पहचान याद करें।
3. मित्त शब्द के पु. एवं नपु. के पूरे रूप याद करें।

उत्तर

(क) (अ) 1. पोत्तो पिआमहस्स घरं गयो।
2. हणुमंतो बंधिओ।
3. सो सायरं गयो।
4. एदेहिं णट्ठं।
5. चोरेहिं भीयं।
6. गुरुणो संतुट्ठा।
7. कम्माइं णट्ठाइं।
8. णरिंदो ण मुओ।
9. माउलो अत्थ थिओ।
10. संसारी जीवो सुत्तो।

(ब) 1. मुणिणा बप्पस्स गंथा दिण्णा।
2. सज्जणेण दुज्जणो दिट्ठो।
3. रहुणंदणेण हणुवंतेण य चाअं किअं।
4. सेणावइणा सच्चं वुत्तं।
5. अवराहेण सो कट्ठं गदो।

गृहकार्य: 1. **अकर्मक**-खिस, अस, गल, गुंज, हस, गज्ज।

सकर्मक-इच्छ, गच्छ, चक्ख, चुअ।

2. **कर्त्तृवाच्य**-कर्त्ता में पु.वि., कर्म में द्वि.वि., क्रियाकर्त्तानुसार।

कर्मवाच्य-कर्त्ता में तृ.वि., कर्म में प्र.वि., क्रिया कर्मानुसार।

भाववाच्य-कर्त्ता में तृ.वि., कर्म नहीं होता, क्रिया अन्य पु. एक व.। (विशेष-भाव वाच्य के कृदन्त प्रयोग में न.पु. एक व. ही क्रिया में।)

3. मित्त शब्द के दोनों लिंगों के रूप संज्ञा शब्द रूप में देखें। पु. में जिण के समान एवं नपु. में दिये हैं।

अभ्यास 10

संज्ञा शब्दः **पु. इकारान्त**- णरवइ (राजा), मंति (मंत्री), रवि (सूर्य), विहि (विधि), करि (हाथी), अरि (शत्रु), केसरि (सिंह), गिरि (पर्वत), जोगि (योगी), कइ (कवि), तवसि/तवस्सि (साधु), मुणि (मुनि), रिसि (मुनि), ससि (चन्द्रमा), सेणावइ(सेनापति), हरि(हरि)।

पु. ईकारान्तः काउस्सग्गी (कायोत्सर्गी), विज्जत्थी (विद्यार्थी), सक्खत्थी (शिक्षार्थी), गामणी (गांव का मुखिया), रूवी (रूपी), णाणी (ज्ञानी), केवली (केवली)।

क्रियापदः अकर्मक क्रियाः उच्छह (उत्साहित होना), उड्ड (उड़ना), फुर (प्रकट होना), रम (रमना), लज्ज (शरमाना), फुल्ल (खिलना), वड्ढ (बढ़ना)।

सकर्मक क्रियाः कट्ट (काटना), आयर (आचरण करना), मइल (मैला करना), चोराव (चुराना), सद्दह (श्रद्धान करना) मण्ण (मानना)।

व्याकरण (विधिकृदन्त)

णरवइ आदि शब्दों के रूप णाणि की तरह एवं काउस्सग्गी आदि शब्द गामणी की तरह चलेगें।

उच्छह आदि धातुओं के रूप गच्छ की तरह चलेंगे।

नियम 1: विधि कृदन्तः चाहिए, योग्य या विधि / आज्ञा के भावों को प्रकट करने के लिए विधि कृदन्त का प्रयोग किया जाता है।

नियम-2: इसका प्रयोग भाववाच्य एवं कर्मवाच्य में ही होता है। अकर्मक क्रियाओं में भाववाच्य एवं सकर्मक क्रियाओं में कर्मवाच्य होता है। क्रिया में अव्व/यव्व, तव्व, दव्व, णीय, णिज्ज, प्रत्यय लगाकर विधि कृदन्त बनाये जाते हैं। हस+अव्व।

नियम 3: इसमें अव्व/यव्व, तव्व, दव्व प्रत्यय अकारान्त व आकारान्त क्रियाओं

में लगते हैं। 'हस+अव्व। हा+अव्व' और अकारान्त क्रिया के अन्त्य अ को इ और ए हो जाता है। हस+इ+अव्व- हसिअव्व।

नियम 4: णीय व णिज्ज प्रत्यय केवल अकारान्त क्रियाओं में ही लगते हैं।
हसिअव्व। हसेअव्व। ठाअव्व। पढिअव्व। पढेअव्व।
हसणिज्ज। हसणीय। पढणिज्ज। पढणीय।

नियम 5: करना चाहिए अर्थ में 'कादव्व' भी प्रयोग देखा जाता है।
जैसेः कज्जं (करने योग्य), गेज्झं (ग्रहण योग्य)।

नियम 6: योग्य अर्थ में ज्ज एवं ज्स प्रत्यय भी देखे जाते हैं।

नियम 7: आकारान्त धातु से योग्य अर्थ में 'य' प्रत्यय भी होता है।
झा = झेयं (ध्यान करने योग्य)
ज्ञा = णेयं (जानने योग्य)

प्रयोगः

भाववाच्यः1. विद्यार्थी के द्वारा उत्साहित होना चाहिए।
= विज्जत्थिणा उच्छहिअव्वं।
2. शत्रुओं द्वारा शरमाना योग्य है।
= रिऊहिँ लज्जिदव्वं।
3. सिंह द्वारा गरजा जाना चाहिए।
= केसरिणा गज्जियव्वं।
4. ऋषियों के द्वारा रमना योग्य है।
= रिसीहिं रमिदव्वं।
5. ज्ञानी के द्वारा ठहरा जाना चाहिए।
= णाणिणा ठादव्वं।
6. उनके द्वारा थकना योग्य है।
= अमूहिं थक्कणीयं / थक्कणिज्जं।

कर्मवाच्यः 1. मेरे द्वारा यह पुस्तक पढ़ने योग्य है।
= मए इमं पोत्थयं पढिदव्वं।

2. अहिंसा धारण करना चाहिए।
   = अहिंसा धारेदव्वा / धारिदव्वा।
3. इस समय क्या करना चाहिए।
   = दाणिं किं करणीयं।
4. दिगम्बर गुरु पूजनीय हैं।
   = दिअम्बरा गुरुणो पुज्जणिज्जा।
5. तत्वों की श्रद्धा करना चाहीए।
   = तच्चाणं सद्धा करणीया / कादव्वा।
6. पिता की आज्ञा मानने योग्य है।
   = बप्पस्स आणा मण्णणिज्जा।
7. भव्य जीवों के द्वारा आत्मा ध्यान करने योग्य है।
   = भव्वजीवेहिं अप्पा झाइअव्वो।

(क) अभ्यास:

(अ) 1. उसके द्वारा होना चाहिए।
2. मेरे द्वारा नहीं लड़ना चाहिए।
3. शिष्य द्वारा प्रसन्न होना चाहिए।
4. सत्य के द्वारा जीतना चाहिए।
5. गुरु द्वारा शांत होना योग्य है।

(ब) 1. सेनापति द्वारा राजा की रक्षा करना योग्य है।
2. श्रावकों द्वारा व्रत ग्रहण करना चाहिए।
3. बहुओं के द्वारा सासु की आज्ञा मानना चाहिए।
4. ज्ञानी के द्वारा तत्त्व श्रद्धान करने योग्य है।
5. तुम सबके द्वारा इस समय सत्य बोलना चाहिए।

(ख) पूर्ति करो:

1..... अच्छिदव्वं।
2..... गज्जियव्वं।

3. तेण ..... (घुम)।
4. ..... चिट्ठणीयं।
5. अमुणा ..... आगच्छेदव्वं।
6. मए गंथो ..... (लिह)।

गृहकार्य: 1. अभ्यास में दिये वाक्यों को सामान्य कर्तृवाच्य के वाक्यों में परिवर्तित करें।
2. दस सकर्मक एवं अकर्मक क्रियाओं को अर्थ सहित लिखें।
3. भूतकालिक कृदन्त प्रत्यय एवं विधि कृदन्त प्रत्यय लिखें।

उत्तर

(क) (अ) 1. तेण होअव्वं।
2. मइ ण जुज्झिअव्वं।
3. सिस्सेण हरिसिदव्वं।
4. सच्चेण जिणिअव्वं।
5. गुरुणा उवसमिदव्वं।

(ब) 1. सेणावइणा णरिंदो रक्खिदव्वो।
2. सावयेहिं वया गिण्हिअव्वा।
3. बहूहिं सासूए आणा पालिदव्वा।
4. णाणिणा तच्चसद्धाणं करणीयं।
5. तुमेहिं दाणिं सच्चं बोल्लिअव्वं।

(ख) 1. मए।
2. मेहेहिं।
3. घुमिअव्वं।
4. तुब्भेहिं।
5. अत्थ।
6. लिहिअव्वो।

गृहकार्य: 1. 1. सो हवइ। 2. अहं ण खंजेमि। 3. सीसो हरिसेइ। 4. सच्चं जयेई। 5. गुरू उवसमइ।

1. सेणावई णरवईणो रक्खेदि।
2. सावया वये गिण्हंति।
3. बहूओ सासूइ आणं मण्णेंति।
4. णाणी तच्चं सद्दहइ।
5. तुम्हे दाणिं सच्चं वदह।

2. स्वयं चयन करके लिखें।

3. **भूत.कृ.**-अ, य, त, द।
वि.कृ.-अव्व, यव्व, तव्व, दव्य, णीय, णिज्ज।

अभ्यास 11

संज्ञा शब्दः इकारान्त नपु.- अच्छि (आँख), अट्ठि (हड्डी), सप्पि (घी), सालि (चावल), अविभागि (अविभागी), आभिणि (मतिज्ञान), सुरहि (सुरभि)।

उकारान्त नपु.: आउ (आयु), जाणु (घुटना), दारु (लकड़ी), महु (मधु)।

अव्ययः त्ति (इस प्रकार), इइ (इस प्रकार), संपइ (इस समय), किंचण (कुछ भी), सक्खं (प्रत्यक्ष)।

विशेषणः सीयल (शीतल), उण्ह (गर्म), सुण्ण (शून्य), किस (दुर्बल), णिम्मल (निर्मल), पण्डुर (सफेद)।

क्रिया पदः उग (उगना), उवरम (विरत होना), विअस (खिलना), ववहर (आचरण करना), छुव (स्पर्श करना), छल (ठगना), ठव (स्थापना)।

व्याकरण (वर्तमान कृदन्त)

अच्छि से लेकर सुरहि तक के रूप वारि शब्द की तरह।
आउ से लेकर महु तक के रूप वत्थु की तरह।
उगादि क्रियापदों के चारों कालों के रूप गच्छ की तरह।

विधि / आज्ञा काल

	एक.	बहु.
अ.पु.	उ, दु, ए, एज्जा	न्तु, एज्जा
म.पु.	हि, सु, धि, 0, इज्जसु, इज्जहि, इज्जे	ह, ध, एज्जाह
उ.पु.	मु, एज्जा, एज्जामि	मो, इज्जाम

	एक.		बहु.
अ.पु.	हसउ, हसदु, हसए, हसेज्जा	-	हसंतु, हसेज्जा
म.पु.	हसहि, हससु, हसधि, हस, हसिज्जसु, हसिज्जहि, हसिज्जे	-	हसह, हसध, हसेज्जाह
उ.पु.	हसमु, हसेज्जा, हसेज्जामि	-	हसमो, हसिज्जाम

नियम 1: वर्तमान कृदन्तः जो क्रिया सोते हुए, जाते हुए आदि भावों को प्रकट करे उसमें वर्तमान कालिक कृदन्त का प्रयोग किया जाता है। कर्त्ता जब एक क्रिया को करके दूसरी क्रिया करता है, तब पहली क्रिया में वर्तमान कृदन्त का प्रयोग होता है। जैसेः करता हुआ जाता है।

नियम 2: वर्तमान कृदन्त 'न्त' और 'माण' प्रत्यय लगाकर प्रयोग होते हैं। ये विशेषण के रूप में प्रयोग होते हैं। अतः विशेष्य के अनुसार ही इसके रूप चलेंगे।

हस + न्त / माण = हसन्त / हसमाण

वह हँसता हुआ जाता है- सो हसंतो गच्छइ।

नियम 3: पु., नपु. के इकारान्त, उकारान्त शब्दों से परे पंचमी व षष्ठी के एक वचन में प्रत्यय को 'णो' आदेश होता है। कविणो, वत्थुणो।

नियम 4: नपु. शब्दों से परे प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के बहुवचन को णि, इं, इँ आदेश होते हैं। वणाणि, वणाइं, वणाइँ । वारीणि, वारीइं, वारीइँ।

नियम 5: विधि, आज्ञा काल में अन्य पुरुष एकवचन के उ, दु तथा बहुवचन के 'न्तु' प्रत्यय परे रहते क्रिया के अन्त्य 'अ' को 'ए' भी होता हैं। हसउ/हसेउ। हसदु/हसेदु। हसन्तु/हसेन्तु।

नियम 6: विधि, आज्ञा काल में मध्यम पुरुष एकवचन के '0' प्रत्यय को छोड़कर शेष प्रत्ययों के एवं बहुवचन के 'ह, ध' प्रत्यय के परे रहते क्रिया के अन्त्य 'अ' को 'ए' भी होता है।

हसहि / हसेहि। हसिज्जसु / हसेइज्जसु। हसह / हसेह।

नियम 7: '0' इज्जसु, इज्जहि, इज्जे प्रत्यय केवल अकारान्त क्रियाओं से ही लगते हैं। शेष प्रत्यय सभी से लगते है।

नियम 8: विधि, आज्ञा काल में उत्तम पुरुष एकवचन के 'मु' प्रत्यय परे रहते अन्त्य क्रिया के अन्त्य अ को 'इए ए' भी होते हैं तथा बहुवचन के 'मो' प्रत्यय के परे रहते अ को आ, ए और इज्जाम प्रत्यय परे रहते अन्त्य अ को ए भी होता है।

प्रयोगः 1. हँसता हुआ बालक इधर आ रहा है।
= हसंतो बालओ इदो आगच्छइ।
2. पढ़ती हुई श्राविका हस रही है।
= पढंता साविआ हसइ।
3. पढ़ते हुए गुरु को मैंने नमस्कार किया।
= पढमाणं गुरुं अहं पणमीअ।
4. हम सब हँसते हुए जीते है।
= अम्हे हसमाणा जीवमो।
5. राजा हँसता हुआ उठा।
= णरिंदो हसंतो उट्ठीअ।
6. वह आचरण करता हुआ रहता है।
= सो ववहरमाणो णिवसेइ।
7. फूल खिलते हुए शोभते हैं।
= पुप्फाइं विअसंताइं सोहेंति।

(क) अभ्यासः

(अ) 1. मैं विरक्त होता हुआ जिन को पूज रहा हूँ।
2. वे सोते हुए जागते हैं।
3. जो उगते हुए सूर्य को देखते हैं वे खुश होते हैं।
4. ये सब छल करते हुए आ रहे हैं।
5. फूलों का स्पर्श करता हुआ बालक प्रसन्न हो रहा है।

(ब) 1. चावल उग रहे हैं।
2. वह शीतल जल को छू रही है।
3. उसके दुर्बल घुटने मैं देखता हूँ।
4. वह गर्म घी नहीं छूता है।
5. मतिज्ञान वाले संसारी जीव हैं।

(स) 1. ज्ञान शून्य होता हुआ जीव भ्रमण कर रहा है।
2. शून्यवादी का मत सत्य नहीं हैं।

3. वह खाली जगह को देखता हुआ प्रसन्न होता है।
4. हम सब गौशाला में गोधन देखते हुए खुश हुए।
5. झगड़ते हुए जीवों को मैंने देखा।

(ह) 1. घी को पीता हुआ बालक यहाँ आ रहा है।
2. जीवों की रक्षा करते हुए श्रमण चल रहे हैं।
3. आते हुए मुझसे तुमको नहीं डरना चाहिए।
4. सोते हुए पुत्र को माता जगाती है।
5. जलती हुई आग में प्रवेश करें।

(ख) जोड़ी बनावें:

1. सयंतं = बाला
2. विअसंताइँ = पुत्तं
3. हसंता = पुप्फाइँ
4. पिवमाणो = णरिंदेणं
5. रक्खमाणेणं = सिसू

गृहकार्य: 1. वर्तमान कृदन्त की पहचान बतावें।
2. वर्तमान कृदन्त प्रत्यय से कोई पाँच शब्द बनावें।
3. अच्छि व दारु शब्द के रूप याद करें।

उत्तर

(क) (अ) 1. अहं उवरमंतो जिणं अच्चेमि।
2. ते सयमाणा जग्गंति।
3. जे उगमाणं दिवायरं पासंति ते उल्लसंति।
4. एदे छलं कुणंता आगच्छन्ति।
5. पुप्फाइं छूवंतो बालओ हरिसइ।

(ब) 1. सालीइं उगंति।
2. सा सीयलं जलं छूवइ।
3. तस्स किसाइं जाणूइं अहं देक्खामि।

4. सो उण्हं घयं ण छूवइ।
5. मईणाणवंता संसारीजीवा संति।

(स) 1. णाणसुण्णो हवंतो जीवो भमइ।
2. सुण्णवंतस्स पद्धई सच्चं णत्थि।
3. सो सुण्णं ठाणं देक्खंतो हरिसइ।
4. अम्हे गोसालाए गोधणं देक्खंता हरिसिआ।
5. जुज्झंता जीवा अहं देक्खीअ।

(ह) 1. घयं पिबंतो बालओ अत्थ आगच्छइ।
2. जीवे रक्खंता समणा चलंति।
3. आगच्छंततो ममत्तो तुमं मा डरहि।
4. सयंतं पुत्तं माया जग्गावइ।
5. जलंतम्मि अग्गिम्मि (ते) पवेसंतु।

(ख) 1. सयंतं पुत्तं।
2. विअसंताइँ पुप्फाइँ।
3. हसंता बाला।
4. पिवमाणो सिसू।
5. रक्खमाणेणं णरिंदेणं।

गृहकार्य: 1. जो क्रिया सोते हुए, जाते हुए आदि भावों को प्रगट करे उसमें वर्तमान कृदन्त का प्रयोग होता है।
2. स्वयं चयन करके बनावें। जैसे-हसन्त, हसमाण आदि।
3. अच्छि वारि के व दारु वत्थु के समान चलावें।

अभ्यास 12

संज्ञा शब्दः स्त्रीलिंग (इ / ई) - इड्ढि (ऋद्धि), अवहि (अवधि), खंति (क्षमा), उप्पत्ति (जन्म), थुइ (स्तुति), तत्ति (तृप्ति), रत्ति (रात), रिद्धि (वैभव), पुढवी (पृथ्वी), धत्ती (दाई), लच्छी (लक्ष्मी), समणी (श्रमणी)।

विशेषणः समत्थ (समर्थ), अंजु (सरल), असढ (निष्कपट), महुर (मधुर), उग्ग (उग्र)।

अव्ययः काहे (कब), जइया (जब), तइया (तब), जाव (जब तक), ताव (तब तक), पुणो (फिर), कल्लि (कल), सुवे (आगामी कल), एक्कसि (एक समय में)।

क्रिया पदः वल (मुड़ना), विज्ज (उपस्थित होना), संभव (उत्पन्न होना), पला (भाग जाना), अग्घ (सूँघना), खंड (टुकड़ा करना), चर (चरना), गण (गिनना), दह (जलाना), णिरक्ख (देखना)।

व्याकरण (प्रेरणार्थक धातु)

इड्ढि आदि शब्दों के रूप जुवइ व णई की तरह चलेंगे।

वल आदि धातुओं के रूप गच्छ धातु की तरह चलेंगे।

भविष्यत् काल

	एकवचन	बहुवचन
अ. पु.	हि, स्स, स्सि	हि, स्स, स्सि
म. पु.	हि, स्स, स्सि	हि, स्स, स्सि
उ. पु.	हि, स्सा, हा, स्सि	हि, स्सा, हा, स्सि

सूचनाः भविष्यत् काल के प्रत्यय लगने के बाद वर्तमान काल के प्रत्यय भी जोड़े जाते है। जैसेः हस + हि / हस + हि + इ = हसहिइ एवं अन्त्य अ को इ भी हसिहिइ।

	एकवचन		बहुवचन
अ. पु.	हसिहिदि, हसिस्सदि, हसिस्सिदि	–	हसिहिंति, हसिस्सिंति, हसिस्संति
म. पु.	हसिहिसि, हसिस्ससि, हसिस्सिसि	–	हसिहिह, हसिस्सह, हसिस्सिह
उ. पु.	हसिहिमि, हसिस्सा, हसिहामि, हसिस्सिमि	–	हसिहिमो, हसिस्सामो, हसिहामो, हसिस्सिमो

नियम 1: प्रेरणार्थक: किसी भी कार्य को प्रेरित करके करवाना। इसमें अ, ए, आव और आवे प्रत्यय लगाकर क्रिया के रूप बनते हैं। हँसाना, रुलाना, पढ़वाना आदि अर्थों में। अ व ए प्रत्यय लगने पर क्रिया के उपान्त्य (अन्त से पहले) अ को आ एवं इ को ए, उ को ओ भी होता है। जैसे हस + अ यहाँ हस धातु के ह का अ उपान्त्य है उस अ का आ होकर 'हास' यह रूप बनता है। हस+ए=हासे(हँसाना), लिह+अ=लेह(लिखवाना), मुण+अ=मोण(जनवाना)।

नियम 2: ये प्रत्यय अकर्मक व सकर्मक दोनों क्रिया पदों से लगाये जाते हैं। हासे / पाढ़े।

नियम 3: कर्तृवाच्य व कर्मवाच्य में इनका प्रयोग होता है।
= सो ममं हासेइ।
= तेणं सो हासेइज्जइ।

नियम 4: प्रेरणार्थक क्रिया में सभी कालों का प्रयोग होता है। हासेइ। हासेहिइ। हासीअ। हासउ।

नियम 5: (आदीतः सोश्च, प्रा.-श. 2.1.33) स्त्री. वाची ईकारान्त शब्दों से परे प्रथमा विभक्ति के एकवचन बहुवचन एवं द्वितीया विभक्ति के बहुवचन को 'आ' प्रत्यय होता है- णई + सु / जस् /शस् णई + आ = णईआ।

नियम 6: (शो शु स्त्रियां तु, प्रा.-श. 2.2.32) स्त्री. वाची शब्दों से परे प्रथमा एवं द्वितीय विभक्ति के बहुवचन को शो (ओ), और शु (उ) प्रत्यय होते हैं = बाला+जस् / शस् - बाला + ओ / उ = बालाओ / बालाउ। जुवईओ / जुवईउ।

नियम 7: भविष्यत् काल के सभी वचनों एवं सभी पुरुषों के प्रत्ययों मे से 'स्सि' प्रत्यय को छोड़कर शेष प्रत्ययों के परे रहते अकारान्त क्रिया के अन्त्य अ को इ व ए होता है। हसिहिइ/ हसेहिइ।

नियम 8: भविष्यत् काल के सभी वचनों एवं पुरुषों के स्सि प्रत्यय परे रहते अन्त्य अ को इ होता है। हसिस्सिदि।

नियम 9: भविष्यत् काल के अन्य पुरुष एकवचन के स्सि प्रत्यय में वर्तमान काल के केवल दि और दे प्रत्यय ही लगते हैं।
हसिस्सिदि / हसिस्सिदे।

नियम 10: भविष्यत् काल के उत्तम पुरुष के एकवचन में 'स्सं' यह प्रत्यय भी लगता है। इसके लगने पर वर्तमान काल का 'मि' प्रत्यय नहीं लगता। लेकिन क्रिया के अन्त्य अ को इ व ए होता है- हसिस्सं / हसेस्सं।

प्रयोग:

1. वह तुमको हँसाता है।
   = सो तुमं हासइ।
2. मैं उसको उपस्थित कराता हूँ।
   = अहं तं विज्जेमि।
3. माता पुत्र को बुलवाती है।
   = माआ पुत्तं कोक्कइ।
4. तुम मुझको रुलाओ।
   = तुमं ममं रुवावहि।
5. वह पुत्री को पढ़वाता है।
   = सो पुत्तिं पाढेइ।
6. मैं किसको कब डरवाता हूँ।
   = अहं कं काहे बिहावेमि।
7. पुत्री माता को सुनावेगी।
   = पुत्ती माअं सोणिहिइ।
8. उसको वैभव दिखाया।
   = तं रिद्धी णिरक्खीअ।

(क) अभ्यास:

(अ) 1. तप ऋद्धि उत्पन्न कराता है।
2. वह दाई को भगाती है।
3. आचार्य शिष्य से उग्र तप करवाते हैं।
4. केवलज्ञान एक समय में सब वस्तु दिखाता है।
5. निष्कपट पुरुष गिनवाता है।

(ब) 1. उसने मुड़वाया।
2. अग्नि जलवाई।
3. अपराधी को उपस्थित कराया।
4. सत्य पर हमको चलवाया।
5. गोधन को चरवाया।

(स) 1. लकड़ी के टुकड़े करवायेगा।
2. जिनालयों को दिखायेगा।
3. गुरु मेरे मान को भगायेंगे।
4. जब तक वह आयेगा तब तक मैं बुलवाऊगां।
5. एक समय में क्या गिनवाओगे।

(ह) 1. वह क्षमा के द्वारा क्रोध को भगाये।
2. ऋद्धि से वैभव उत्पन्न करायें।
3. गुरु भव्य जीवों को मार्ग दिखावें।
4. मैं तुमको जिन आज्ञा में चलाऊं।
5. तब तक सभी सत्य आचरण करावें।

(ख) अर्थ लिखें:

रत्ति ( ), उग्ग ( ), इड्ढि ( ),
सुवे ( ), पुणो ( ), जाव ( ),

गृहकार्य: 1. अभ्यास के वर्तमान काल के प्रयोगों को भविष्य काल में परिवर्तित करें।
2. अभ्यास के भविष्य काल को वर्तमान काल में बदलें।
3. प्रेरणार्थक क्रिया पदों की पहचान एवं प्रत्यय को बतावें।

उत्तर

(क) (अ) 1. तवो इड्ढिं संभवावेइ।
2. सा धत्तिं पलावेइ।
3. आयरिया सिस्सेण उग्गं तवं करावंति।
4. केवलणाणं एक्कसि सव्वाइं वत्थूइं दरिसइ।
5. असढो पुरिसो गणावइ।

(ब) 1. सो वलावीअ।
2. अग्गी जलावीअ।
3. अवराहं विज्जावीअ/उवट्ठावीअ।
4. सच्चम्मि अम्हं चलावीअ।
5. गोधणं चरावीअ।

(स) 1. दारुं खंडाविहिइ।
2. जिणालया णिरक्खाविहिइ/देक्खाविहिदि।
3. गुरुणो मज्झ माणं दूरं करिहिंति।
4. जाव सो आगच्छिहिइ ताव अहं कोक्काविहिमि।
5. एक्कसि किं गणाविहिसि।

(ह) 1. सो खंतीए कोहं णासउ।
2. रिद्धीए विहवं संभवावंतु।
3. गुरुणो भव्वजीवे मग्गं देक्खावंतु।
4. अहं तुं जिणस्स आणाए चलावमु।
5. ताव सव्वे सच्चस्स आचरणं करावंतु।

(ख) रात, उग्र, ऋद्धि, आगामी फल, फिर, जब तक।

गृहकार्य: 1. 1. जाणेहिइ। 2. पालहिइ। 3. कारेहिंति। 4. वस्सावहिइ। 5. गाणेहिदि

2. 1. खंडावइ। 2. णिरक्खेइ। 3. पालेइ। 4. कोक्कमि। 5. गाणावलि।

3. किसी भी कार्य को प्रेरित करके करवाना जैसे-हसाना, रूलाना।
प्रत्यय-अ, ए, आव, आवे।

अभ्यास 13

संज्ञा शब्दः चंचु (चोंच), जंबू (जामुन का पेड़), चमू (सैन्य),

स्त्री.: रज्जु (रस्सी), कण्डु (खाज), सस्सू (सास)।

विशेषणः किविण (कंजूस), दुल्लह (दुर्लभ), वल्लह (प्रिय), वुह (विद्वान), वराय (बेचारा), विसाल (विशाल)।

क्रिया पदः परिवड (पड़ना), मर (मरना), फुल्ल (खिलना), डुल (डोलना), तव (तपना), णियत्त (निवृत्त होना), परी (घूमना), धाव (दौड़ना), जोअ (प्रकाशित करना)।

व्याकरण (कर्तृवाच्य)

चंचु आदि शब्दों के रूप धेणु एवं बहु की तरह चलेंगे।

परिवड धातु (वर्तमान काल)

	एक.		बहु.
अ. पु.	परिवडइ, परिवडए, परिवडदि, परिवडेदि, परिवडदे	=	परिवडंति, परिवडेंति
म. पु.	परिवडसि, परिवडेसि	=	परिवडह, परिवडित्था, परिवडध, परिवडेह, परिवडेइत्था, परिवडेध
उ. पु.	परिवडमि, परिवडामि परिवडेमि	=	परिवडमो, परिवडामो, परिवडिमो, परिवडेमो, परिवडमु, परिवडामु, परिवडिमु, परिवडेमु, परिवडम, परिवडाम, परिवडिम परिवडेम

नियम 1: जहाँ करने वाले कर्त्ता की मुख्यता होती है वह कर्तृवाच्य होता है। इसमें कर्त्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा, क्रिया कर्त्तानुसार होता है। सकर्मक व अकर्मक दोनों प्रकार के क्रिया पदों में इसका प्रयोग होता है।

नियम 2: स्त को थ होता है। थ होने पर ध्वनि के लिए त् (त्थ) बोला जाता है। मस्तक- मत्थय।

नियम 3: संयुक्ताक्षर के पहिले यदि दीर्घ स्वर हो तो वह ह्रस्व हो जाता है। बाला - बालत्तो। ठान्ति - ठन्ति।

प्रयोग:

1. वे दौड़ते हैं।
   = अमुणो धावंति।
2. मुनि तप रहे हैं।
   = मुणिणो तपंति।
3. राजा सैन्य को देखता है।
   = राआ चमुं णिरक्खेइ।
4. सासू रस्सी को घुमाती है।
   = सस्सू रज्जुं परीइ।
5. कंजूस मनुष्य दान नहीं करता है।
   = किविणो णरो दाणं ण करेदि।
6. हम सब को बेचारी महिला देख रही है।
   = अम्हे वराया महिला पेक्खदि।

1. तुम सब ठहरो।
   = तुम्हे ठाह।
2. माताएं जावें।
   = माआओ गच्छंतु।
3. मित्र मित्रों को बुलावें।
   = मित्ता मित्ते कोक्कंतु।
4. भव्य आत्मा जिन को पूजे।
   = भव्वआदा जिणं पुज्जउ।
5. श्रमण और श्रावक धर्म को फैलावें।
   = समणा सावया य धम्मं पसरेंतु।

1. हम गुरु के साथ ठहरे थे।
   = अम्हे गुरुणा सह ठाहीअ।

2. मामा और बहिन हँसे।
   = माउलो धुआ य हसीअ।
3. उन सबने उन सबको देखा।
   = ते ता देक्खीअ।
4. माताओं ने सभी के लिए कथाएं कही।
   = मायाउ सव्वाणं कहाउ कहीअ।
5. गुरु ने शिष्य को धर्म की शिक्षा दी।
   = गुरु सिस्सं धम्मस्स सिक्खं दाहीअ।

S.no.

1. कल सूर्य उगेगा।
   = कल्लिं दिवायरो उगिहिइ।
2. हम सब गुरु को सुनेगें।
   = अम्हे गुरुं सुणिहिमु।
3. तुम सब किसको देखोगे।
   = तुम्हे कं देक्खिहिह।
4. वह गुरु को पूजेगा तो सुखी रहेगा।
   = सो गुरुं पुज्जिहिदि तो सुही हविहिइ।
5. हा! हम सब जिनदेव को ही मानेंगे और प्रणाम करेगें।
   = आम! अम्हे जिणदेवं एव मुणिहिमो पणमिहिमो य।

(क) अभ्यास:

1. वह खाता है।
2. वह किसको खाता है।
3. वह किसके द्वारा खाता है।
4. किसके लिए खाता है।
5. किसका खाता है।
6. कहाँ पर खाता है।

गृहकार्य: 1. अभ्यास के वाक्यों को अन्य काल में एवं अन्य क्रियापदों के साथ में भी वाक्य बनावें।

2. कोई पाँच क्रियाएँ अर्थ सहित लिखें।
3. अपनी-अपनी दिनचर्या में से पाँच वाक्य अवश्य बनावें।

उत्तर

(क) 1. सो भुंजइ।
2. सो किं खादइ।
3. सो केण खादइ।
4. कस्स हेउं खाइ।
5. कस्स खादइ।
6. कत्थ असइ।

गृहकार्य: 1. 1. खाहीअ, खाहिइ, खाउ। 2. भुंजीअ, भुंजिहिदि, भुंजउ। 3. भुंजीअ, भुंजिहिदि, भुंजउ। 4. खाहीअ, खाहिदि (दि), खाउ। 5. भुंजीअ, भुंजिहिइ, भुंजउ। 6. भुंजीअ, भुंजिहिइ, भुंजउ। इसी प्रकार सय, ढा आदि क्रियापदों के साथ वाक्य बनावे।
2. स्वयं चयन करें।
3. स्वयं बनावें।

अभ्यास 14

संज्ञा शब्दः स्त्री.: माअरा (माता), दुहिदा (पुत्री), ससा (बहिन), णणंदा (ननद), पिआमही (दादी), बहिणी (बहन), मायामही (नानी), माउसिआ (मौसी)।

पु.: भत्तार (पति, स्वामी), भायर (भाई), पिअर (पिता), अणुअ (छोटा भाई), पिइज्ज (चाचा), अग्गअ (बड़ा भाई), देवर (देवर), भाइणेअ (भानजा), णत्तिअ (नाती), साल (साला), ससुर (ससुर)।

संख्यावाची विशेषणः एक्कारह (11), बारह (12), तेरह (13), चउद्दह (14), पण्णरह (15), सोलह (16), सत्तरह (17), अट्ठारह (18), एगूणवीस (19), वीस (20), तीस (30), चालीस (40), पण्णास (50), सट्ठि (60), सत्तरि (70), असीइ (80), णवइ (90), सय (100), सहस्स (1000), लक्ख (लाख), कोडि (करोड़)।

व्याकरण (कर्मवाच्य, भाववाच्य)

सूचनाः प्राकृत में ऋकारान्त शब्द नहीं होते हैं फिर भी नियम में ऋकारान्त शब्दों से सिद्धि करके भर्तृ से भत्ता /भत्तार आदि सिद्ध किए जा रहे हैं जो प्राकृत में हैं।

भत्ता (भर्तृ)

	एक.	बहु.
प्र.	भत्ता, भत्तारो	भत्तारा
द्वि.	भत्तारं	भत्तारा
तृ.	भत्तारेण, भत्तारेणं	भत्तारेहि, भत्तारेहिं, भत्तारेहिँ
च.	भत्तारस्स	भत्ताराण, भत्ताराणं
पं.	भत्तारत्तो, भत्ताराहिंतो,	भत्तारत्तो, भत्ताराहिंतो, भत्ताराउ

	भत्ताराओ, भत्ताराउ, भत्तराहि, भत्तारा, भत्तारादो, भत्तारादु	भत्ताराओ, भत्ताराहि, भत्तारेहिंतो, भत्तारेलुंतो, भत्तरेहि, भत्तरादो, भत्तारादु
ष.	भत्तारस्स	भत्ताराण, भत्ताराणं
स.	भत्तारम्मि, भत्तारे	भत्तारेसु, भत्तारेसुं

नियम 1: जहाँ पर कर्म की प्रधानता हो वहाँ कर्म वाच्य एवं जहाँ केवल क्रिया के भावों की मुख्यता हो वहाँ भाववाच्य होता है।

नियम 2: सकर्मक क्रिया से कर्मवाच्य गच्छ, पढ़ व अकर्मक क्रिया से भाववाच्य होता है। हस, उट्ठ।

नियम 3: कर्मवाच्य व भाववाच्य बनाने के लिए क्रिया से इज्ज, ईअ, ईय प्रत्यय लगाये जाते हैं हस+इज्ज। पश्चात् जिस काल का रूप बनाना है, उस काल संबंधी प्रत्यय जोड़े जाते हैं।
हस + इज्ज + इ = हसिज्जइ।

नियम 4: भाववाच्य में केवल अन्य पुरुष एकवचन की क्रिया का ही प्रयोग होगा। कर्त्ता में तृतीया वि.। कर्मवाच्य-कर्त्ता में तृतीया विभक्ति, कर्म प्रथमा विभक्ति, क्रिया कर्मानुसार होगी।
तेण हसिज्जदि / हसीयदि / हसीअदि।
तेणं गंथो पढिज्जइ / पढीयइ / पढीअइ।

नियम 5: कर्मवाच्य व भाववाच्य में जब भविष्य काल का प्रयोग होगा तब इज्जादि प्रत्यय नहीं लगेगा, सामान्य रूप ही रहेगा। गच्छिहिइ। हसिहिइ।

नियम 6: (आरः सुपि, प्रा.-श. 2.2.49) ऋकारान्त शब्दों को विभक्ति परे रहते आर होता है- भत्तार।

नियम 7: ऋकारान्त शब्दों को विभक्ति परे 'उ' भी होता है। प्र. एक., द्वि. एक. और षष्ठी बहु. को छोड़कर। प्र. बहु. - भत्तू, भत्तुणो।

नियम 8: (मातुरा अरा, प्रा.-श. 2.2.50) मातृ शब्द को आ और अरा होता है विभक्ति के परे रहते। मातृ + सु = माआ, माअरा।

नियम 9: (संज्ञायामरः, प्रा.-श. 2.2.51) ऋकारान्त शब्दों को विभक्ति परे रहते, संज्ञा में अर होता है। पितृ + सु = पिअर + सु = पिअरो।

नियम 10: (आ सौ वा, प्रा.-श. 2.2.52) ऋकारान्त शब्दों को आ विकल्प से होता है प्र. वि. मे। पिआ। माआ। भत्ता। कत्ता।

प्रयोगः

1. उसके द्वारा विद्यालय जाया जाता है।
   = तेणं विज्जालयो गच्छिज्जइ।
2. छोटे भाई के द्वारा बहिन देखी जाए।
   = अणुएण बहिणा पेक्खिज्जउ।
3. मौसी के द्वारा माता बुलाई गई।
   = माउसियाए माअरा कोक्किज्जीअ।
4. एक सत्य के द्वारा सौ असत्य नष्ट होयेंगे।
   = एक्केण सच्चेण सयाणि असच्चाणि णासिहिंति।

भाववाच्यः

1. नानी के द्वारा हँसा जाता है।
   = मायामहीआ हसिज्जदि।
2. सासू के द्वारा भागा जावे।
   = सस्सूअ पलाईअउ।
3. हम सब के द्वारा आया गया।
   = अम्हेहिं आगच्छिज्जईअ।
4. चारों मनुष्यों के द्वारा कल वहाँ ठहरा जाएगा।
   = चदुहिं णरेहिं कल्ल तत्थ ठाहिंति।

(क) अभ्यासः

1. नाती के द्वारा गुरु की सेवा की जाए।
2. सूर्य के द्वारा तपा जाएगा।
3. गुरु के द्वारा वहाँ दो छात्र देखे गए।
4. श्रमणों के द्वारा यहाँ श्रावक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।
5. युवतियों के द्वारा कब कहाँ प्रसन्न हुआ गया।

6. भारत में बहुओं द्वारा सासुओं को आदर दिया जाता है।
7. हा! रत्नत्रय के द्वारा ही मोक्ष प्राप्त किया जाता है।
8. दुर्बल लोगों के द्वारा रोया जाएगा।
9. सामर्थ्यवान् पुरुष के द्वारा ही कार्य किया जावे।
10. बड़ेभाई के द्वारा छोटाभाई भेजा गया।

(ख) सामान्य वाक्यः

1. वह जल पीता है।
2. मैं दान देता हूँ।
3. वह गाँव में रहता है।
4. रमा कार्य को करती है।
5. माता वस्त्र को धोती है।
6. मैं भोजन नहीं करूँगी।
7. मैं नहीं रोऊँगी।
8. मुनिराज एक बार ही भोजन करेंगे।
9. मामा गाये।
10. मौसी नाचे।
11. माता देखें।
12. शत्रु को जीता।
13. अग्नि को जलाया।
14. दुर्जन को बांधा।
15. आज प्रातः श्री मुनिसुव्रत नाथ भगवान् की पूजा की एवं नमस्कार किया।

गृहकार्यः 1. सामान्य वाक्यों को कर्मवाच्य एवं भाववाच्य में बदलें।
2. गच्छ व पेक्ख क्रियाओं में कर्मवाच्य, भाववाच्य के प्रत्यय लगाकर चारों कालों के रूप बनावें।
3. कर्मवाच्य और भाववाच्य की पहचान याद करें।

उत्तर

(क) 1. णत्तिएण गुरू सेविज्जउ।
2. दिवायरेण तविहिइ।
3. गुरुणा तत्थ बे छत्ता देक्खिज्जीअ/दिट्ठा।
4. समणेहिं एत्थ सावया सिक्खं लहिज्जंति/गेण्हंति।
5. जुवईहिं कया कत्थ हरिसिज्जीअ/हरिसिअं।
6. भारहे बहूहिं सस्सूओ माणिज्जंति।
7. आम! रयणत्तयेण च्चिय मोक्खो लहिज्जदि/लब्भइ।
8. दुब्बलेहिं रुविहिइ।
9. समत्थेण पुरिसेण एव कज्जं करिज्जउ।
10. अग्गएण अणुओ पेसिओ।

(ख) 1. सो जलं पिबइ।
2. अहं दाणं दामि।
3. सो गामे वसइ।
4. रमा कज्जं करइ।
5. माया वत्थं धोअइ।
6. अहं भोयणं ण करिहिमि।
7. अम्मि ण रुविहिमि।
8. मुणिराया एगया एव भोयणं करिहिंति।
9. माउलो गाअउ।
10. माउसी णच्चदु।
11. मायाओ देक्खंतु।
12. सत्तुं जिणीअ।
13. अग्गिं पजालीअ।
14. दुज्जणं बंधीअ।
15. अज्ज पच्चूसे सिरी मुणिसुव्वणाह-भगवंतं अच्चीअ पणमीअ य।

गृहकार्य: 1. कर्मवाच्य (केवल सकर्मक क्रियाओं से)-1. तेण वारिं पिविज्जइ। 2. मए दाणं दाइज्जइ। 3., 4. रमाअ कज्जं करिज्जदि। 5. माआइ वत्थं धोविज्जइ। 6. मए भोयणं ण करिहिइ। 7. । 8. मुणिरायेण एकइया एव भोयण करिहिइ। 9. माउलेणं गाइअउ। 10 । 11. माआए पेक्खिज्जउ। 12. रिऊ जयियीअ। 13. अग्गी जलिज्जीअ। 14. दुज्जणो बंधिज्जीअ। 15. अज्ज पातो सिदि मुणिसुव्वयणाह भगवंतस्स अच्चियीअ णमियीअ च।

2. भाव वाच्य (अकर्मक क्रियाओं से) 3. तेण गाये वस्सिजदि। 7. मए ण कंदिहिइ। 10. माउसिआइ णच्चियीउ।

गच्छ-वर्तमान-अ.पु.-गच्छीअइ-गच्छीएइ, गच्छीअए, गच्छीअदि-गच्छीएदि, गच्छीअदे। गच्छीअंति-गच्छीएंति।

म.पु.-गच्छीअसि-गच्छीएसि। गच्छीअह-गच्छीएह, गच्छीइत्या-गच्छीएइत्था, गच्छीअध-गच्छीएधा।

उ.पु.-गच्छीअमि-गच्छीआमि-गच्छीएमि। गच्छीअमो-गच्छीआमो- गच्छीश्यो-गच्छीएमो, गच्छीअमु-गच्छीआमु- गच्छीइमु-गच्छीएमु, गच्छीअम-गच्छीआम-गच्छीइम-गच्छीएम।

विधि आज्ञा-अ.पु.-गच्छीअउ, गच्छीअदु, गच्छीअए, गच्छीएज्जा। गच्छीअन्तु, गच्छीएज्जा।

म.पु.-गच्छीअहि, गच्छीअसु, गच्छीअधि, गच्छीअ, गच्छीइज्जसु, गच्छीइज्जहि, गच्छीइज्से। गच्छीअह, गच्छीअ, गच्छीएज्जाह।

उ.पु.-गच्छीअमु, गच्छीएज्जा, गच्छीएज्जामि। गच्छीअमो, गच्छीइज्जाम।

भूतकाल-अ.पु.-गच्छीईअ, गच्छीइत्था, गच्छीइसु। गच्छीईअ, गच्छीइत्था, गच्छीइंसु। यही रूप म.पु. व उ.पु. एक.व बहु. वचन में बनेंगे।

भविष्यत् काल–अ.पु.–गच्छिहिदि, गच्छिहिइ, गच्छिहिए, गच्छिहिदे। गच्छिहिंति।

म.पु.–गच्छिहिसि। गच्छिहिह।

उ.पु.–गच्छिहिमि। गच्छिहिमो, गच्छिहिमु, गच्छिहिमो। इसी तरह 'हि' के स्थान पर 'रस' आदि प्रत्यय लगा कर रूप बनावें।

इसी प्रकार वेक्ख धातु के रूप बनावें। ये दोनों सकर्मक धतुएं कर्मवाच्य में चलेगी। भाव वाच्य में अकर्मक 'वस' धातु के रूप–

वर्तमान–वसिज्जइ–वसिज्जेइ, वसिज्जदि, वसिज्जेदि, वसिज्जए, वसिज्जदे।

भूत–वसिज्जीअ।

विधि–वसिज्जउ।

भविष्यत्–वसिहिह, वसिहिदि, वसिहिए, वसिहिदे।

3. **कर्मवाच्य**–कर्त्ता में तृतीया, कर्म में प्र., क्रिया कर्म के अनुसार एवं सकर्मक क्रियाएं ही होती हैं।

भाववाच्य–कर्त्ता में तृतीया, क्रिया अन्य पुरुष एक वचन एवं अकर्मक क्रियाएं ही होती हैं।

अभ्यास 15

संज्ञा शब्दः साड़ी (साड़ी), उत्तरीयं (दुपट्टा), सिरत्थं (टोपी), माला (माला), कुंडलं (कुण्डल), कं चुअं (कुर्ता, कमीज), णासा (नाक), अंगुली (अगुँली), णहो (नाखून), अहर (ओठ), कड़ी (कमर), हिदयं (हृदय, कलेजा), सोत्तं (कान), वसा (चर्बी), जीहा (जीभ), वच्छं (छाती), सागो (साग), पडोलो (परवल), कोसातई (तरोई), पेरूओ (अमरूद), दाडिमो (अनार), णारिएलं (नारियल), अंबं (आम), महूरेंडो (पपीता), रोट्टगो (रोटी), सूवो (दाल), घयचोरी (पराठा)।

व्याकरण (सर्वनाम)

सूचनाः विभक्तियों के परे रहते ऋकारान्त शब्दों को 'उ' (ऋ को उ) भी होता है। प्र., द्वि. का एक. एवं बहु. को छोड़कर।

भर्तृ से भत्तु यह रूप भी बनता है।

भत्तु- स्वामी / पति

	एक.	बहु.
प्र.	×	भत्तुणो, भत्तू, भत्तओ, भत्तउ, भत्तणो
द्वि.	×	भत्तुणो
तृ.	भत्तुणा	= भत्तूहि, भत्तूहिं, भत्तूहिँ
च./ष.	भत्तुणो, भत्तुस्स	= भत्तूण, भत्तूणं
पं.	भत्तुणो, भत्तुत्तो, भत्तूओ	= भत्तुत्तो, भत्तूदो, भत्तूदु, भत्तूओ
	भत्तूउ, भत्तूदो, भत्तूदु भत्तूहिंतो	= भत्तुउ, भत्तूहिंतो, भत्तूसुंतो
स.	भत्तुम्मि	= भत्तूसु, भत्तूसुं
सं.	×	हे भत्तुणो, हे भत्तू, हे भत्तओ, हे भत्तउ, हे भत्तवो

नियम 1: (सर्वादेर्जसोऽतो डे, ङेस्त्थसिंस्मि प्रा.-श. 2.2.62-63) अकारान्त सर्वादि सर्वनाम शब्दों से परे प्र. बहु. को डे (ए) एवं सप्तमी एक. को त्थ, स्सिं, म्मि, एवं हिं प्रत्यय होते हैं। सव्वे। सव्वत्थ, सव्वस्सिं, सव्वम्मि, सव्वहिं।

नियम 2: इदं, एतद् को छोड़कर किं, यत्, तद् शब्दों से परे तीनों लिंगों में सप्तमी एक. को हिं प्रत्यय होता है। किं-कहिं, काहिं। यत्- जहिं, जाहिं। तत्- तहिं, ताहिं।

नियम 3: (आमां डेसिं, प्रा.-श. 2.2.65) सर्वादि सर्वनाम शब्दों से परे ष. बहु. को डेसिं (एसिं) प्रत्यय होता है। स्त्री. लिंग में भी होगा। सव्वेसिं। केसिं। जेसिं। तेसिं।

नियम 4: (किंतद्भ्यां सश्, प्रा.-श. 2.2.66) किं, तद् शब्दों से परे ष. बहु. को सश् (स) प्रत्यय भी होता है- किं-कास। तत् - तास।

नियम 5: (किंयत्तद्भ्यो ङस्, प्रा.-श. 2.2.67) किं, यत्, तद् शब्दों से परे ष. एक. को सश् (स) प्रत्यय होता है- किं-कास। यद् - जास। तत् - तास।

प्रयोगः
1. मनुष्य के मुख में जीभ है।
   = णरस्स मुहे जीहा (स्त्री.) अत्थि।
2. वह दाल रोटी खाता है।
   = सो सूवं रोट्टगं य खादेदि।
3. मैं मंदिर में बैठी हूँ।
   = अहं मंदिरम्मि चिट्ठमि/अच्छमि।
4. वे दोनों पहले स्नान करते हैं फिर जिनालय जाते हैं।
   = ते पुव्वं ण्हंति पुणो जिणालयं गच्छंति।
5. श्रमण सबको क्षमा करता है।
   = समणो सव्वं खमइ।

(क) अभ्यासः

1. पंच गुरु ही मंगल, शरण व श्रेष्ठ हैं।
2. शिष्य का सौभाग्य गुरु चरणों में है।

3. हे भव्य! अपनी आत्मा का हित सोचो।
4. निराशा और वैराग्य में भेद है।
5. आदिनाथ भगवान् की पूर्व पर्याय का नाम जयवर्मा है।
6. वृषभनाथ भगवान् प्रथम तीर्थंकर हैं।
7. मेरा हृदय भगवान् के चरणों में रहे।
8. मेरे कान प्रभु की वाणी को सुनें।
9. मेरे ओठ वीर भगवान् के गुणगान गावें।
10. हम सब की जिह्वा प्रभु के गुणगान का रस पीवे।

(ख) काल एवं वाच्य की पहचान करें।

1. अहं रोट्टगं खादमु।
2. तेणं सूवो खादिज्जइ।
3. सो पोत्थअं पढेदि।
4. तुमं गामं गच्छिहिसि।
5. अम्हेहि हसीअदि।
6. तुमए हसिज्जइ।
7. तेण हसिज्जदि।

गृहकार्य: 1. सर्वनाम शब्द सम्बन्धी इस अभ्यास के नियम याद करें।
2. कोई पाँच सर्वनाम शब्द लिखें।
3. यहाँ तक की शिक्षा का अनुभवन प्राकृत भाषा में लिखें या बोलें।

उत्तर

(क) 1. पंच गुरुणो एव मंगलं सरणं सेट्ठं च संति।
2. सिस्सस्स सोहग्गं गुरुचरणेसु अत्थि।
3. हे भव्व! णियअप्पाणं हियं चिंतहि।
4. णिरासाए वेरग्गे य अंतरं अत्थि।
5. आदिणाहभगवंतस्स पुव्वपज्जायस्स णामो जयवम्मो अत्थि।

6. उसहणाहो भगवंतो पढमो तित्थयरो अत्थि।
7. मम हिदयं भगवंतस्स चरणेसु चिट्ठउ।
8. मम सोत्ताणि पहुणो वाणिं सुणंतु।
9. मम अहरा वीरभगवंतस्स गुणगाणं गायंतु।
10. अम्हे जीहा पहुणो गुणगाणस्स रसं पिबउ।

(ख) 1. विधि आज्ञा कर्तृवाच्य।
2. वर्तमान काल कर्मवाच्य।
3. वर्तमान काल कर्तृवाच्य।
4. भविष्यतकाल कर्तृवाच्य।
5. वर्तमान काल भाववाच्य।
6. वर्तमान काल भाववाच्य।
7. वर्तमान काल भाववाच्य।

गृहकार्य: 1. स्वयं करें।
2. स्वयं लिखें।
3. स्वयं लिखें।

अपनी परीक्षा करें 100

(क) **(10×5=50)**

1. कर्तृवाच्य किसे कहते है एवं पहचान क्या है?
2. कर्मवाच्य किसे कहते है एवं पहचान क्या है?
3. भाववाच्य किसे कहते है एवं पहचान क्या है?
4. पुरुष कितने होते हैं?
5. वचन कितने होते हैं?
6. विभक्तियाँ कितनी होती हैं?
7. काल कितने होते हैं और कौन-कौन से?
8. सकर्मक क्रिया क्या कहलाती है?
9. अकर्मक क्रिया क्या कहलाती है?
10. वर्तमान काल के प्रत्यय कौन से हैं?

(ख) प्राकृत में बनावें। **(5×3=15)**

1. वह क्या करता है।
2. मैं यहाँ कब क्या करूँगा।
3. तुम क्या करते हो?
4. बालक माता को क्यों बुलाता है?
5. पति पत्नि को मनायेगा।

(ग) सकर्मक पाँच धातुएँ अर्थ सहित लिखें। **(5×2=10)**

(घ) अकर्मक पाँच धातुएँ अर्थ सहित लिखें। **(5×2=10)**

(ङ) भविष्य काल के प्रत्यय लिखें। **(5)**

(च) जिण शब्द के रूप लिखें। **(5)**

(छ) गच्छ धातु के विधि आज्ञा के रूप लिखें। **(5)**

उत्तर

(क) 1. जिसे कर्त्ता की मुख्यता होती है उसे कर्तृ वाच्य कहते हैं। पहचान-कर्त्ता में प्रथमा वि., कर्म में द्वि.वि. एवं क्रिया कर्त्ता के अनुसार।

2. जिसमें कर्म की प्रधानता होती है वह कर्मवाच्य है। पहचान-कर्त्ता में तृतीया वि., कर्म में प्रथमा वि. एवं क्रिया कर्म के अनुसार।

3. जिसमें केवल क्रिया के भाव (परिणति) ही मुख्य हो वह भाव वाच्य है।

   पहचान-कर्त्ता में तृतीया वि. एवं क्रिया में अन्य पुरुष एक वचन।

4. 3।

5. 2।

6. 8 (संबोधन सहित)।

7. 4। वर्त., भूत, भविष्य, विधि आज्ञा काल।

8. कर्म सहित जो क्रिया होती है वह सकर्मक क्रिया है। या किसको, किसका प्रश्न करने पर समाधान प्राप्त हो वह सकर्मक क्रिया है।

9. जो कर्म रहित क्रिया होती है वह अकर्मक क्रिया है। या किसको, किसका प्रश्न करने पर समाधान प्राप्त नहीं होता वह अकर्मक क्रिया है।

10. र, दि, ए, दे। न्ति।
    सि। ह, इत्था ध।
    मि। मो, मु., म।

(ख) 1. सो किं करेइ। 2. अहं अत्थ कदा किं करिहिइ। 3. तुमं कि करसि। 4. वालओ माअं कधं कोक्कइ। 5. पई भज्जं मण्णिहिइ।

(ग) स्वयं लिखे।

(घ) स्वयं लिखे।

(ङ) अ.पु. हि, स्स, स्सि। हि, स्स, स्सि
म.पु.-हि, स्स, स्सि। हि, स्स, स्सि
उ.पु.-हि, स्सा, हा, स्सि। हि, स्सा, हा, स्सि

(च) संज्ञा शब्द रूप में देखें।

(छ) गच्छ-विधि आज्ञा

म.पु.	गच्छउ, गच्छहु, गच्छए, गच्छेज्जा	गच्छन्तु, गच्छेज्जा
म.पु.	गच्छहि, गच्छसु, गच्छधि, गच्छ, गच्छिज्जसु, गच्छिज्जहि गच्छिज्जे	गच्छह, गच्छध, गच्छेज्जाह
उ.पु.	गच्छमु, गच्छेज्जा, गच्छेज्जामि	गच्छमो, गच्छिज्जाम

संज्ञा शब्द रूप

पु. अ. (1) जिण = जिन / जिनेन्द्र भगवान्

	एक.	बहु.
प्र.	जिणो	जिणा
द्वि.	जिणं	जिणा / जिणे
तृ.	जिणेण / जिणेणं	जिणेहिं / जिणेहि / जिणेहिँ
च.	जिणस्स / जिणाय	जिणाण / जिणाणं
पं.	जिणत्तो, जिणादो, जिणाउ, जिणाओ, जिणादु, जिणा, जिणाहि, जिणाहिंतो	जिणत्तो, जिणादो, जिणाओ जिणादु, जिणाउ, जिणाहि, जिणासुंतो, जिणाहिंतो (हि, सुंतो और हिंतो प्रत्यय में अ को ए भी होता है।) जिणेहि, जिणेसुंतो, जिणेहिंतो
ष.	जिणस्स	जिणाण, जिणाणं
स.	जिणे, जिणम्मि	जिणेसु, जिणेसुं
सं.	हे जिण, हे जिणो	हे जिणा

पु. इ. (2) णाणि = ज्ञानी

	एक.	बहु.
प्र.	णाणी	णाणिणो, णाणी, णाणउ, णाणओ
द्वि.	णाणिं	णाणिणो / णाणी
तृ.	णाणिणा	णाणीहि / णाणीहिं / णाणीहिँ
च.	णाणिणो / णाणिस्स	णाणीण / णाणीणं
पं.	णाणिणो, णाणित्तो, णाणीओ, णाणीउ, णाणीदो, णाणीदु, णाणीहिंतो	णाणित्तो, णाणीओ, णाणीउ, णाणीदो, णाणीदु, णाणीहिंतो, णाणीसुंतो
ष.	णाणिणो / णाणिस्स	णाणीण / णाणीणं
स.	णाणिम्मि	णाणीसु / णाणीसुं
सं.	हे णाणी / हे णाणि	हे णाणिणो / हे णाणी / हे णाणउ / हे णाणओ

पु. ई. (3) गामणी = ग्रामणी

	एक.	बहु.
प्र.	गामणी	गामणिणो / गामणउ / गामणओ / गामणी
द्वि.	गामणिं	गामणिणो / गामणी
तृ.	गामणिणा	गामणीहि / गामणीहिं / गामणीहिँ
च.	गामणिणो / गामणिस्स	गामणीण / गामणीणं
पं.	गामणिणो / गामणित्तो / गामणीओ/गामणीउ गामणीहिंतो/गामणीदो/गामणीदु	गामणित्तो / गामणीओ / गामणीउ / गामणीओ / गामणीउ / गामणीदो / गामणीदु / / गामणीसुंतो / गामणीहिंतो
ष.	गामणिणो / गामणिस्स	गामणीण / गामणीणं
स.	गामणिम्मि	गामणीसु / गामणीसुं
सं.	हे गामणि	हे गामणिणो / हे गामणउ / हे गामणओ / हे गामणी

पु. उ. (4) साहु = साधु

	एक.	बहु.
प्र.	साहू	साहूणो / साहू / साहउ / साहओ/ साहवो
द्वि.	साहुं	साहुणो / साहू
तृ.	साहुणा	साहुहि / साहूहिं / साहूहिँ
च.	साहुणो / साहुस्स	साहूण / साहूणं
पं.	साहुणो, साहुत्तो साहूओ, साहूउ, साहूदो, साहूदु, साहूहिंतो	साहुत्तो, साहूदो, साहूदु, साहूओ, साहूउ, साहूहिंतो, साहूसुंतो
ष.	साहुणो / साहुस्स	साहूण / साहूणं
स.	साहुम्मि	साहूसु / साहूसुं
सं.	हे साहु	हे साहूणो / हे साहू / हे साहउ / हे साहओ / हे साहवो

पु. ऊ . (5) सयंभू (स्वयंभू)

	एक.	बहु.
प्र.	सयंभू	सयंभुणो / सयंभू / सयंभओ / सयंभउ / सयंभवो
द्वि.	सयंभुं	सयंभुणो, सयंभू
तृ.	सयंभुणा	सयंभूहि / सयंभूहिं / सयंभूहिँ
च.	सयंभुणो / सयंभुस्स	सयंभूण / सयंभूणं
पं.	सयंभुणो / सयंभुत्तो / सयंभूउ / सयंभूदो / सयंभूदु /	सयंभुत्तो / सयंभूदो / सयंभूदु / सयंभूओ / सयंभूहिंतो / / सयंभूसुंतो / सयंभूउ / सयंभुहिंतो
ष.	सयंभुणो / सयंभुस्स	सयंभूण / सयंभूणं
स.	सयंभुम्मि	सयंभूसु / सयभूसुं
सं.	हे सयंभु	हे सयंभुणो / हे सयंभू / हे सयंभओ / हे सयंभउ / हे सयंभवो

(6) पितृ = पिअर (पिता)

पिअर शब्द के रूप जिण शब्द की तरह - पिअरो, पिअरा। ऋकारान्त को उ होने पर पिउ (पिता)

पिअर

	एक.	बहु.
प्र.	पिआ / पिअरो	पिअरा (शेष सुगम हैं)

पिउ (पिता)

	एक.	बहु.
प्र.	×	पिउणो, पिअवो, पिऊ, पिअओ, पिअउ
द्वि.	×	पिउणो
तृ.	पिउणा	पिऊहि, पिऊहिं, पिऊहिँ
च.	पिउणो, पिउस्स	×
पं.	पिउणो, पिउत्तो, पिऊदो, पिऊदु, पिऊउ, पिऊओ, पिऊहिंतो	पिउत्तो, पिऊदो, पिऊदु, पिऊओ, पिऊउ, पिऊहिंतो पिऊसुंतो

ष.	पिउणो, पिउस्स	×
स.	पिउम्मि	पिऊसु, पिऊसुं
सं.	×	हे पिउणो, हे पिअवो, हे पिऊ, हे पिअओ, हे पिअउ

भ्रातृ = भाअर

पिअर के समान इसी तरह कर्तृ, जामातृ आदि शब्दों के रूप चलेगें।

''राआ''

	एक.	**बहु.**
प्र.-	राआ	राआणो, राइणो, राआ
द्वि.-	राअं, राइणं	राआणो, राइणो, राआ
तृ.-	राइणा, रण्णा, राएण राएणं	राईहि, राईहिं, राईहिँ, राएहि, राएहिं, राएहिँ
च.-	राइणो, रण्णो, राअस्स	राइणं,राईणं, राआणं, राआण
प.-	राइणो, रण्णो, राआहिंतो, राअत्तो, राआओ, राआउ, राआ, राआहिं, राआदो राआदु	राईहिंतो, राईसुंतो, राईहि, राइत्तो, राईओ, राईउ, राईदो, राईदु, राआहिंतो, राआसुंतो, राअत्तो, राआदो, राआदु, राआओ, राआउ, राआहि
ष.-	राइणो, रण्णो, राअस्स	राइणं, राईणं, राआणं, राआण
स.-	राइम्मि, राअम्मि	राईसु, राईसुं, राएसु, राएसुं

नोटः राय या राअ शब्द के रूप जिण शब्द के समान भी चलते हैं- रायो। राओ, राया। रायं। राया, राये आदि।
= राआण शब्द के रूप अभ्यास 5 में देखें।

व्याकरण (राजन्-राआण)

	एक.	**बहु.**
प्र.	राआणो	राआणा
द्वि.	राआणं	राआणा, राआणे
तृ.	राआणेण, राआणेणं	राआणेहि, राआणेहिं, राआणेहिँ
च.	राआणस्स	राआणाण, राआणाणं
पं.	राआणाहिंतो, राआणत्तो	राआणाहिंतो, राआणासुंतो

	राआणादो, राआणादु, राआणा	राआणाओ,राआणाउ
	राआणाओ, राआणाउ	राआणादो, राआणत्तो
	राआणाहि	राआणादु, राआणाहि
ष.	राआणस्स	राआणाण, राआणाणं
स.	राआणम्मि, राआणे	राआणेसु, राआणेसुं

(1) नपु. अकारान्त - मित्त = मित्र

	एक.	**बहु.**
प्र.	मित्तं	मित्ताणि, मित्ताइं, मित्ताइँ
द्वि.	मित्तं	मित्ताणि, मित्ताइं, मित्ताइँ
तृ.	मित्तेण, मित्तेणं	मित्तेहि, मित्तेहिं, मित्तेहिँ
च.	मित्तस्स, मित्ताय	मित्ताण / मित्ताणं
		मित्तत्तो, मित्तादो, मित्तादु, मित्ताओ
पं.	मित्तत्तो, मित्तादो, मित्ताउ	मित्ताउ, मित्ताहि, मित्ताहिंतो
	मित्तादु, मित्ताओ	मित्तासुंतो, मित्तेहि, मित्तेहिंतो,
	मित्ता, मित्ताहि, मित्ताहिंतो	मित्तेसुंतो
ष.	मित्तस्स	मित्ताण, मित्ताणं
स.	मित्ते, मित्तम्मि	मित्तेसु, मित्तेसुं
सं.	हे मित्तं, हे मित्त	हे मित्ताणि, हे मित्ताइं, हे मित्ताइँ

(2) नपु. इ. - वारि (जल)

	एक.	**बहु.**
प्र.	वारिं	वारीणि, वारीइं, वारीइँ
द्वि.	वारिं	वारीणि, वारीइं, वारीइँ
तृ.	वारिणा	वारीहि, वारीहिं, वारीहिँ
च.	वारिस्स, वारिणो	वारीण, वारीणं
पं.	वारिणो, वारित्तो,	वारित्तो, वारीदो, वारीदु,
	वारीदो, वारीदु, वारीओ,	वारीओ, वारीउ, वारीहिंतो,
	वारीउ, वारीहिंतो	वारीसुंतो
ष.	वारिस्स, वारिणो	वारीण, वारीणं
स.	वारिम्मि	वारीसु, वारीसुं
सं.	हे वारिं, हे वारि	हे वारीणि, हे वारीइं, हे वारीइँ

(3) नपु. उ. वत्थु (वस्तु)

	एक.	बहु.
प्र.	वत्थुं	वत्थूणि, वत्थूइं, वत्थूइँ
द्वि.	वत्थुं	वत्थूणि, वत्थूइं, वत्थूइँ
तृ.	वत्थुणा	वत्थूहि, वत्थूहिं, वत्थूहिँ
च.	वत्थुणो, वत्थुस्स	वत्थूण, वत्थूणं
पं.	वत्थुणो, वत्थुत्तो, वत्थूदो, वत्थूदु, वत्थूओ, वत्थूउ, वत्थूहिंतो	वत्थुत्तो, वत्थूदो, वत्थूदु, वत्थूओ, वत्थूउ, वत्थूहिंतो, वत्थूसुंतो
ष.	वत्थुणो, वत्थुस्स	वत्थूण, वत्थूणं
स.	वत्थुम्मि	वत्थूसु, वत्थूसुं
सं.	हे वत्थु	हे वत्थूणि, हे वत्थूइं, हे वत्थूइँ

(1) स्त्री. आकारान्त बाला (बालिका)

	एक.	बहु.
प्र.	बाला	बाला, बालाउ, बालाओ
द्वि.	बालं	बाला, बालाउ, बालाओ
तृ.	बालाअ, बालाइ, बालाए	बालाहि, बालाहिं, बालाहिँ
च.	बालाअ, बालाइ, बालाए	बालाण, बालाणं
पं.	बालाअ, बालाइ, बालाए, बालत्तो, बालादो, बालादु, बालाओ, बालाउ, बालाहिंतो	बालत्तो, बालादो, बालादु, बालाओ, बालाउ, बालाहिंतो, बालासुंतो
ष.	बालाअ, बालाइ, बालाए	बालाण, बालाणं
स.	बालाअ, बालाइ, बालाए	बालासु, बालासुं
सं.	हे बाला	हे बाला, हे बालाउ, हे बालाओ

(2) स्त्री. इ. जुवइ (युवती)

	एक.	बहु.
प्र.	जुवई	जुवईओ, जुवईउ, जुवई
द्वि.	जुवइं	जुवईओ, जुवईउ, जुवई
तृ.	जुवईअ, जुवईआ, जुवईइ, जुवईए	जुवईहि, जुवईहिं, जुवईहिँ
च.	जुवईअ, जुवईआ जुवईइ, जुवईए	जुवईण, जुवईणं
पं.	जुवईअ, जुवईआ, जुवईइ, जुवईए, जुवइत्तो, जुवईदो, जुवईदु, जुवईओ, जुवईउ, जुवईहिंतो	जुवइत्तो, जुवईदो जुवईदु, जुवईओ, जुवईउ, जुवईहिंतो, जुवईसुंतो
ष.	जुवईअ, जुवईआ, जुवईइ, जुवईए	जुवईण, जुवईणं
स.	जुवईअ, जुवईआ, जुवईइ, जुवईए	जुवईसु, जुवईसुं
सं.	हे जुवइ, हे जुवई	हे जुवईओ, हे जुवईउ, हे जुवई

(3) स्त्री. ई. णई (नदी)

	एक.	बहु.
प्र.	णई, णईआ	णईओ, णईउ, णईआ, णई
द्वि.	णइं	णईओ, णईउ, णईआ, णई
तृ.	णईअ, णईआ, णईइ, णईए	णईहि, णईहिं, णईहिँ
च.	णईअ, णईआ, णईइ, णईए	णईण, णईणं

पं..	णईअ, णईआ, णईइ, णईए, णइत्तो णईदो, णईदु, णईओ, णईउ, णईहिंतो	णइत्तो, णईदो, णईदु, णईओ, णईउ, णईहिंतो, णईसुंतो
ष.	णईअ, णईआ, णईइ, णईए	णईण, णईणं
स.	णईअ, णईआ, णईइ, णईए	णईसु, णईसुं
सं.	हे णइ	हे णईओ, हे णईउ, हे णईआ, हे णई

(4) स्त्री. उ. धेणु (गाय / धेनु)

	एक.	**बहु.**
प्र.	धेणू	धेणूओ, धेणूउ / धेणू
द्वि.	धेणुं	धेणूओ, धेणूउ / धेणू
तृ.	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूहि, धेणूहिं, धेणूहिँ
च.	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूण, धेणूणं
पं.	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए, धेणुत्तो, धेणूदो, धेणूदु, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिंतो	धेणुत्तो, धेणूदो, धेणूदु, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिंतो, धेणूसुंतो
ष.	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूण, धेणूणं
स.	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूसु, धेणूसुं
सं.	हे धेणु / हे धेणू	हे धेणूओ, हे धेणूउ / हे धेणू

(5) स्त्री. ऊ. बहू (बहू / वधु)

	एक.	बहु.
प्र.	बहू	बहूओ, बहूउ / बहू
द्वि.	बहुं	बहूओ, बहूउ / बहू
तृ.	बहूअ, बहूआ, बहूइ, बहूए	बहूहि, बहूहिं, बहूहिँ
च.	बहूअ, बहूआ, बहूइ, बहूए	बहूण, बहूणं
पं.	बहूअ, बहूआ, बहूइ, बहूए, बहूत्तो, बहूदो, बहूदु, बहुओ, बहूउ, बहूहिंतो	बहुत्तो, बहूदो, बहूदु, बहूओ, बहूउ, बहूहिंतो, बहूसुंतो
ष	बहूअ, बहूआ, बहूइ, बहूए	बहूण, बहूणं
स.	बहूअ, बहूआ, बहूइ, बहूए	बहूसु, बहूसुं
सं.	हे बहु	हे बहूओ, हे बहूउ / हे बहू

(6) स्त्री. ऋ. मातृ से माआ, माअरा रूप बनते हैं।

माआ (माता), माअरा (माता) के रूप बाला की तरह।

बोधकहा

1. महापण्हो

को वि एगं धणियजणं कहेदि-जं चागस्य जीवणम्मि जहत्थ पसण्णदा अत्थि। तेण तहा कादुं णिच्छओ कदो। असेसधणं रयणं सुवण्णं अण्णं महंत्थवत्थुं य संभूय एगसूदम्मि जोगिणो चरणेसु ठवेदि। सामि! अहं सव्वध णविहवं तव चरणेसु रक्खेमि। संपहि एदेसु विहवेसु कस्स वि पओजणं णत्थि किंतु मणस्स संतिं पसण्णदं य खलु वंछामि। 'कत्थ संती अत्थि' एवं कहिय सो जोगिचरणेसु पुण्णसमप्पणेण णिवडदि।

जोगी खिप्पं सूदस्सुग्घादणं किच्चा पासेइ जं इमम्मि अणग्धरयणसुवण्णादियं अत्थि। तं सूदं बंधिय गहिय च सो धावइ। धणिओ अच्चंतविम्महं पत्तो। अहो! मए सव्वधणं कवडिजोगिणे समप्पिदं। किं अवराहो कदो त्ति चिंतिय पढमं दुक्खीहूओ पच्छा कोहेण जोगिणं अणुधावइ। जोगी अइ- वेगेण ध ाविदुं असमत्थो जादो। सो इदो तदो घुम्मिय तत्थ आगदो जत्थ पुव्वं चिट्ठदि। धणिओ वि तत्थ आगच्छइ।

धणिगस्स कहणादो पुव्वं हि जोगी बोल्लदि-किं तुमं चिंतहि-"हं तव धणं गिण्हिदूण गच्छिहिमि? गिण्हहि इणं। मे अस्स धणस्स आवस्सदा णत्थि। तदाणिं जोगी तद्धणसूदं तस्स देदि। धणिगो हरिसइ-जं विगदधणं तेण पुणु लद्धं। जोगी कहेदि 'संती अत्थ अत्थि', पेक्खसि तुमं, इदं सव्वधणं अत्थ आगमणादु पुव्वं वि तुमए सह हि वट्टइ किंतु तेण धणेण सुहं ण पत्तं। तं धणं हि संपहि सुहं देदि। अदो चिंतहि-"सुहं काओ ठाणादो आगच्छइ-धणादो वा हिययादो वा?"

2. गुरुसमप्पणं

भारदीअसंकिए भयवं गुरू य समाणभावेण मण्णदे। तहा वि गुरू खलु भयवंतादो अहियं महत्तं धरेदि। गुरू जीवणस्स सहाअगो सम्मदिसाणिद्देसगो य भवदि। तं कधमिदि पुच्छे एगाए घडणाए पडिबोहव्वा खलु।

बोधकथा

1. महाप्रश्न

कोई व्यक्ति एक धनिक व्यक्ति को कहता है कि–त्याग के जीवन में यथार्थ (वास्तविक) प्रसन्नता है। इसलिए उसने उसी प्रकार करने का निश्चय किया। वह समस्त धन, रत्न, स्वर्ण और अन्य बहुमूल्य वस्तु को इकट्ठा करके एक थैले में रखकर योगी के चरणों में रख देता है। 'स्वामिन!' मैं सर्व धन-वैभव को आपके चरणों में रखता हूँ। अब मुझे इन वैभवों में किसी का भी प्रयोजन नहीं है किन्तु मन की शान्ति और प्रसन्नता ही वास्तव में चाहता हूँ। शान्ति कहाँ है?' इस प्रकार कहकर वह योगी के चरणों में पूर्ण समर्पण से गिर पड़ता है।

योगी शीघ्र ही उस थैले को खोलकर देखता है कि इसमें बहुमूल्य (अनर्घ) रत्न स्वर्ण आदि हैं। उस थैले को बांधकर और लेकर वह दौड़ जाता है। धनिक अत्यन्त विस्मय को प्राप्त हुआ। अहो! मैंने सारा धन कपटी योगी को समर्पित कर दिया। क्या अपराध किया? ऐसा विचार कर पहले दु:खी हुआ बाद में क्रोध से योगी के पीछे दौड़ता है। योगी अति वेग से दौड़ने में असमर्थ हो गया। वह यहाँ-वहाँ से घूमकर वहीं आ गया जहाँ पहले बैठा था। धनिक भी वहीं आ जाता है।

धनिक के कुछ कहने से पहले ही योगी बोलता है कि तुम सोच रहे हो–मैं तुम्हारा धन लेकर चला जाऊँगा। लो इसे पकड़ो। मुझे इस धन की आवश्यकता नहीं है। तब योगी उस धन के थैले को उसे दे देता है। धनिक हर्षित होता है कि गया हुआ धन उसने पुन: प्राप्त कर लिया। योगी कहता है–'शान्ति यहाँ है', देख रहे हो तुम, यह सारा धन यहाँ आने से पहले भी तुम्हारे ही साथ है किन्तु उस धन से सुख प्राप्त नहीं हुआ। वह धन ही अब सुख दे रहा है। इसलिए विचार करो–"सुख किस स्थान से आता है, धन से अथवा हृदय से।"

2. गुरु समर्पण

भारतीय संस्कृति में भगवान और गुरु समान भाव से माने जाते हैं। फिर भी गुरु वास्तव में भगवान से अधिक महत्त्व धारण करते हैं। गुरु जीवन के सहायक और सम्यक् दिशा निर्देशक होते हैं। वह कैसे होते हैं, इस प्रकार पूछने पर एक घटना के द्वारा जानना चाहिए।

एगो गुरू रायकुमारं अणुसासणस्स पाढं पढावीअ। अज्झयणस्स समत्तीए गुरू कहेदि-कल्ल आगंतव्वं अंतिमपाढं पाठेहिमि। पुच्छे कहेदि-सिक्खा पडिपुण्णा जादा।

अवरदिणे सो रायकुमारो गुरुसमीवं आगदो। तं गहिय एगकुडीए पविसिय दत्तकुंडिओ गुरू दण्डेण मारेदुं लग्गदि। रायकुमारस्स सरीरे पीडा संजादा तहावि सो ताव पीडिदो जाव ण मुच्छाए पडिवडिदो।

अणेयजणेहि जदा एवं दिट्ठं तदा रायसयासं कहिदं- गुरू विक्खित्तो जादो जेण णिद्दओ होऊण कुमारं मारेदि। कुमारो दु उच्चसरेण विलवइ।

रायसहाए गुरुसहिदो रायकुमारो आगदो रायकुमारस्स सरीरे दण्डचिण्हाणि देक्खिय राया भणइ-किं कदं? केण कारणेण एसो ववहारो? किं तुवं विक्खित्तोसि। गुरुणा भासियं-राय! रायकुमारो भविस्सकाले राया होहिदि। अवराहिणस्स दण्डं य पदाहिदि। सो तस्स दण्डविहाणं कधं करिस्सइ जदि तस्स सयं वेयणाअ अणुहवणं ण हवे। जहा कोवि वरागो कस्स पत्तं चोरइ तद्दुं दण्डविहाणं तस्स परिट्ठिदिं आवस्सयदं य परिलक्खिय होहिदि अण्णहा भणिस्सए जं पंचसयमुक्केहिं पीडिदव्वं सहस्समुक्केहिं वा। तेण तस्स पाणिवहस्स संभावणा अण्णाए पउत्ती य ण हवे त्ति कारणेण मए एवं कदं। सयं पीडाए अणुहवणं विणा अण्णस्स पीडा कहं जाणेज्जा?

राया गुरुणो दूरदिट्ठिं विलोइय अइपसण्णो जादो। सच्चमेव-गुरू सया सव्वस्स कल्लाणट्ठं वट्टइ। जो पुण्णरूवेण अप्पाणं समप्पइ तस्सेव कल्लाणं होइ; ण अण्णस्स। तदो गुरुसमप्पणं कल्लाणयरं हिदयरं य होइ।

3. संत्तीए उवाओ

एगदा एगा इत्थी एगं साहुसमीवं गच्छइ कहेइ य-भयवं। पडिदिणं मे भत्तारो मज्झुवरि कोपइ। सगकज्जालयकज्जादो उववण्णखिण्णदा पमुहं कारणं अत्थि। तक्काले अहं वि सहावियादो कोहेण पडिउत्तरं पदामि। सणियं सणियं

एक गुरु राजकुमार को अनुशासन का पाठ पढ़ाते थे। अध्ययन की समाप्ति पर गुरु कहते हैं–कल आना, अंतिम पाठ पढ़ाऊँगा। शिष्य के पूछने पर गुरु ने कहा–शिक्षा परिपूर्ण हो गई है।

दूसरे दिन वह राजकुमार गुरु के समीप आया। उसे लेकर एक कुटी में प्रवेश कर गुरु ने कुंडी लगा ली और और डण्डे से उसे मारने लगा। राजकुमार के शरीर में पीड़ा हो गई फिर भी वह तब तक पीड़ित किया गया जब तक कि राजकुमार मूर्छा से गिर नहीं गया।

अनेक लोगों ने जब यह देखा तो राजा के पास जाकर कह दिया–कि गुरु विक्षिप्त हो गया है जिससे कि निर्दय होकर वह कुमार को मार रहा है। कुमार तेज आवाज से रो रहा है।

राजसभा में गुरु सहित राज कुमार आया। राजकुमार के शरीर में डण्डे के निशान देखकर राजा कहता है–यह क्या किया? किस कारण से यह व्यवहार किया? क्या तुम पागल हो गए हो? गुरु ने कहा–राजन्! राजकुमार भविष्य में राजा होगा और अपराधी को दण्ड भी देगा। वह उसके लिए दण्ड विधान कैसे करेगा, यदि उसके लिए स्वयं वेदना का अनुभव नहीं हो। जैसे कोई बेचारा किसी का बर्तन (पात्र) चुरा लेता है तो उसके लिए दण्ड का विधान उसकी परिस्थिति और आवश्यकता को देखकर होगा, अन्यथा यह राजकुमार कहेगा कि–इसे पाँच सौ मुक्कों से या हजार मुक्कों से पीटना चाहिए। इसलिए उसके प्राणी के वध की संभावना और अन्याय से प्रवृत्ति न हो, इस कारण से मैंने ऐसा किया। स्वयं पीड़ा का अनुभव किए बिना कोई अन्य की पीड़ा कैसे जानेगा?

राजा गुरु की दूरदृष्टि को देखकर अति प्रसन्न हुआ। सत्य ही है,–गुरु सदा सभी के कल्याण के लिए कार्य करता है। जो पूर्ण रूप से अपने आप को समर्पित करता है। उसका ही कल्याण होता है, और किसी दूसरे का नहीं। इसलिए गुरु समर्पण कल्याणकारी और हितकारी होता है।

3. शान्ति का उपाय

एक बार एक स्त्री एक साधु के समीप जाती है और कहती है–हे भगवान! प्रतिदिन मेरा पति मेरे ऊपर क्रोध करता है। अपने कार्यालय के कार्य से उत्पन्न खिन्नता उसका प्रमुख कारण है। उस समय पर मैं भी

परिट्ठिदी अइविवरीदा संजादा। घरे हिंसाए वादावरणं घिणाभावो परोप्परं कलहो वा मे मणं पीडेदि। अहुणा दु णियणजणा वि किलिसिदूण घरम्मि आगच्छंति कलहुवसमट्ठं पेरयंति य। जदि कं वि समाहाणं हवे तो सिग्घं भण; तुम्हं महं उवरि महोवयारो होज्ज। साहुणा खणं चिंतिय अप्पविस्सासेण भणियं-अवस्सं अत्थि अवस्सं अत्थि। जगे एसा कावे समस्सा णत्थि जस्स समाहाणं मम समीवं ण हवे। साहू पुरदो ट्ठिदस्स रुक्खस्स अहोट्ठिदं पत्तं गिण्हिदूण तस्स जलं अण्णपत्तम्मि पाडिदूण कहेदि-इणं जलं अइपवित्तं अत्थि। ओसहसरूवेण कज्जं कुणइ। जदा तुज्झ पई कलहेज्जा तदा इणं पवित्तजलं सगमुहे धरिय घुमावेदव्वं। जदा तस्स कोहो उवसमइ तदा पिबेदव्वं। ताए एवं हि कदं। दोतियदिणणंतरं कलहे ऊणदा जादा।

णियडजणा वि कहेंति-केण कारणेण कलहो इदाणिं ण सुणिज्जइ त्ति विम्महो। अप्पदिणेहि घरं संतिमयवादावरणं समुववण्णं। एगदिवसे सा पुण साहुसमीवं गच्छिय कहेदि-तए दिण्णं पवित्तजलं अइच्चमक्कारकरं पुणो वि अहियं पदादव्वं।

साहू सहासेण बोल्लइ-ओ भगिणी! पवित्तदा जले णत्थि किंतु मोणेत्थि तेण पडियारो ण कायण्वो त्ति संत्तीए उवाओ।

4. सगजोग्गदा

एगो जुवओ संतसमीवं गच्छिऊण भासइ- हं बहुगाणं संताणं णियडं गच्छामि तहावि मज्झ समस्साए समाहाणं ण जादं। दाणिं तव समीवं अइआसाए आगदोमि। संतो भणइ-अहं जलट्ठं कूवसमीवं गच्छामि तुमं वि आगच्छसु। तत्थ एगो विसेसोत्थि सो झायव्वो। ते समस्साए समाहाणं अवस्सं होहिदि किंतु जाव हं कूवादो जलं बाहिर णिस्सरामि ताव किंचि ण वत्तव्वं। जदि ते मणो णियंतिदो होज्ज तो समाहाणं हवे। जुवओ चिंतेदि ण हं ताव वदामित्ति संकप्पो।

स्वाभाविक रूप से क्रोध से प्रति उत्तर देती रही। धीरे-धीरे परिस्थिति अति विपरीत हो गई। घर में हिंसा का वातावरण, घृणा का भाव और परस्पर में कलह मेरे मन को दु:खी करता है। अब तो पड़ोसी लोग भी कलह को सुनकर घर में आ जाते हैं और कलह को शान्त करने की प्रेरणा करते हैं। यदि कोई भी समाधान हो तो शीघ्र बताओ आपका मेरे ऊपर महा उपकार होगा। साधु ने क्षण भर विचार कर आत्म विश्वास से कहा–अवश्य है, अवश्य है। संसार में ऐसी कोई भी समस्या नहीं है जिसका समाधान मेरे समीप न हो। साधु सामने स्थित वृक्ष के नीचे रखे हुए बर्तन को लेकर उसका जल दूसरे पात्र (बर्तन) में गिराकर कहता है कि–यह जल अति पवित्र है। यह जल औषध का काम करता है। जब तुम्हारा पति कलह करे तब यह पवित्र जल अपने मुख में रखकर घुमाना। जब पति का क्रोध शान्त हो जाए तो वह जल पी जाना। उस स्त्री ने यही किया। दो-तीन दिन के बाद कलह कम हो गया। पड़ोसी भी कहने लगे–किस कारण से अब कलह सुनाई नहीं देता है। यह विस्मय की बात है। थोड़े ही दिनों में घर में शान्तिमय वातावरण हो गया। एक दिन वह स्त्री फिर साधु के पास जाकर कहती है - आपके द्वारा दिया गया पवित्र जल अति चमत्कार करने वाला है, फिर से और प्रदान कर दो।

साधु हास्य सहित बोला–ओ बहिन! पवित्रता जल में नहीं है किन्तु मौन में है। इसलिए प्रतीकार नहीं करना, यही शान्ति का उपाय है।

4. स्व योग्यता

एक युवक संत के समीप जाकर कहता है– मैं बहुत संतों के निकट जाता हूँ फिर भी मेरी समस्या का समाधान नहीं हुआ। इस समय आपके समीप अति आशा से आया हूँ। संत कहते हैं–मैं जल लेने के लिए कुएँ के पास जा रहा हूँ, तुम भी आ जाओ।

उसमें एक विशेष बात है उसे ध्यान रखना। तुम्हारी समस्या का समाधान अवश्य होगा किन्तु जब तक मैं कुएँ से जल लाकर निकालूँ तब तक कुछ भी बोलना नहीं। यदि तुम्हारा मन नियंत्रित रहा तो समाधान हो जाएगा। युवक सोचता है– तब तक मैं नहीं बोलूँगा, ऐसा मेरा संकल्प है।

कूवादो जदा सो संतो जलं णिगच्छइ ताव जुवएण दिट्ठं-तस्स पत्ते अणेयाणि छिद्दाणि संति। संतो तम्मि पत्तं णिवडइ किंतु पत्तं तु जलरहियं उवरि आगच्छइ। तेण एसो एगवारं बेवारं अणेयवारं विहिदो। अंते अधीरत्तेण तेण भणियं-'जदि आजीविदं वि एमेव करेज्ज तो वि जलं पत्तभरिदं ण पावेज्ज।'

संतो भणइ-'तुमए संकप्पो तुट्टिदो। तुं मे सिस्सजोग्गो ण हवेहि। अम्ह सरणं सिग्घं मुंच। जदि तुह एत्तियं अहियं जाणसि तरिहि किमट्ठं एत्थ आगदो।'

जुवएण तदाणिं संगई चत्ता। ताए रत्तीए गुरुवयणेण आहदो सो ण सयीअ। अवरदिणे सो जुवओ वुण आगच्छइ, गुरुं च कहेइ-भयवं! खमसु मं, तुम्ह संकप्पो मए ण पूरिदो त्ति खेद-विसओ।

संतेण करुणाए वुत्तं-मए गुत्तसंदेसो दिण्णो। जहा छिद्दसहियपत्ते जलं ण चिट्ठइ तहा तव मणम्मि सम्मणाणं संदेहलोहकोहादिवियारजुत्ते वि ण चिट्ठइ। पढमं दु सगजोग्गदाए परिक्खा कादव्वा पच्छा गुरुसमीवं णाणं गेण्हिदव्वं।

5. पिउणो मंजूसा

कस्सचि पिअरस्स तिण्णि सुदा संति। एगदा ते सुदा पिउसमीवं णिवेदेइ-पिअर! सगसंपत्तीए समाणभागं करिय मज्झ बंधूणं वियरसु। अम्हे सया णेहेण तुमे सेविस्साम। पुत्तवयणाणि सुणिय वीसासं करिय पिअरेण तहा कदं। सव्वेहिं णिण्णओ कदो जं वयं सव्वे बे-बे मासं सगगिहे पिअरं सेविहिमु। जदा संपत्तीए भागा जादा तदा पिअरो जेट्ठस्स पुत्तस्स गिहं गदो। तत्थ वि कइवयदिणणंतरं हि पिअरेण अणादरो अणुभूदो। पडिणियत्तिऊण सो कणिट्ठस्स गिहं गदो। तत्थ वि सत्त-अट्ठदिवसेसु तेण अप्पियं अणुभूदं। दुक्खी-हूओ सो एगे आसमे पविट्ठो। आसमे गुरुणा सो संबोहिदो। एगमासणंतरं सो तालपिहिदमंजूसा-सहिदो

कूप से जब वह संत जल निकालता है तब युवक ने देखा–उसके पात्र (बर्तन) में अनेक छिद्र हैं। संत उस कुएँ में पात्र गिरा देता है किन्तु वह पात्र तो बिना जल के ऊपर आ जाता है। उस संत ने ऐसा एक बार, दो बार, अनेक बार किया। अन्त में अधीर होकर युवक ने कहा–'यदि जीवन पर्यन्त तक भी ऐसे ही करोगे तो कभी भी जल पात्र में भरा हुआ नहीं पाओगे'।

संत कहते हैं–'तुमने संकल्प तोड़ दिया। तुम मेरे शिष्य योग्य नहीं हो। मेरी शरण शीघ्र छोड़ दो। यदि तुम इतना अधिक जानते हो तो किसलिए यहाँ आए हो'। युवक ने उसी समय संगति त्याग दी। उस रात्रि में गुरु वचनों से आहत हुआ वह नहीं सोया। दूसरे दिन वह युवक पुनः आता है और गुरु को कहता है भगवन्! मुझे क्षमा करो। आपका संकल्प मैंने पूरा नहीं किया, इस बात का मुझे खेद है।

संत ने करुणा से कहा–मैंने गुप्त संदेश दिया है। जिस प्रकार छिद्र सहित पात्र में जल नहीं टिकता है उसी प्रकार आपके मन में सम्यग्ज्ञान संदेह, लोभ, क्रोध आदि विकारों से सहित होने पर भी नहीं ठहरता है। पहले तो स्वयोग्यता की परीक्षा करनी चाहिए बाद में गुरु के समीप ज्ञान ग्रहण करना चाहिए।

5. पिता की पेटी

किसी पिता के तीन बेटे हैं। एक बार वे बेटे पिता के समीप निवेदन करते हैं–– पिता जी! आप अपनी संपत्ति के समान भाग करके मेरे बंधुओं (भाइयों) को वितरण कर दो। हम लोग सदा स्नेह से आपकी सेवा करेंगे। पुत्र के वचनों को सुनकर विश्वास करके पिता के द्वारा वैसा ही कर दिया गया। सभी पुत्रों ने निर्णय किया कि हम सभी लोग दो-दो महीने पिता की सेवा करेंगे। जब संपत्ति के भाग हुए तब पिता ज्येष्ठ पुत्र के घर गए। एक सप्ताह के बाद पुत्र के भावों में अंतर देखकर पिता वापस लौट आया। पिता मध्यम पुत्र के घर गया। वहाँ पर भी कुछ दिनों के बाद ही पिता ने अपना अनादर महसूस किया। वहाँ से लौटकर पिता फिर सबसे छोटे पुत्र के घर गया। वहाँ भी सात-आठ दिनों में पिता ने अप्रिय (वातावरण) अनुभव किया। दुःखी होकर वह एक आश्रम में प्रविष्ट हुआ। आश्रम में

घरं पडिणियत्तो। ते सव्वे णाउं समुस्सुगा भवंति जं-मंजूसब्भंतरे किमत्थि। पिअरो भणइ-'अम्मि अणग्घरयणाणि संति, ताणि ण ताव पदाहिम जाव ण हं मरेज्जामि। मे मरणोवरंतं कोवि तेसिं सामी होदु।'

पिउणो वयणं सुणिऊण तेसिं सुदाणं भावणा परिवट्टिदा। ते सहसा अइणेहेण पिउसेवं करिउं उज्जुदा। पच्चेयं सुदो पिअरस्स गिहं णेदुं मिट्ठवयणेण आमंतेइ। सो पिअरो वि सगिच्छाए पुत्ताणं गेहेसु णिवसइ। एगदिवसे पिअरो मुओ। खणणंतरं हि ते सुदा मंजूसं उग्घाडिय दिस्संति। अइविम्हओ तेसिं जादो जदो मंजूसब्भंतरे पासाणमेत्ताणि तेहिं दिट्ठाणि। संसारियसंबंधेसु बंधुबंधवाणं णेहो सट्ठपरो खलु होदि त्ति वुत्तघडणाए णादव्वं।

गुरु ने उसे संबोधन दिया। एक महीने के बाद वह ताले से बंद मंजूषा (पेटी) लेकर घर लौटा। वे सभी बेटे जानने के लिए उत्सुक हुए कि मंजूषा के भीतर क्या है? पिता कहते हैं–इसमें बहुमूल्य रत्न हैं, उन्हें तब तक नहीं दूँगा जब तक मैं मर न जाऊँ। मेरे मरने के बाद कोई भी इन रत्नों का मालिक होवे।

पिता के वचनों को सुनकर उन पुत्रों की भावना परिवर्तित हो गई। वे सहसा अत्यन्त स्नेह से पिता की सेवा करने के लिए तैयार हो गए। प्रत्येक बेटा पिता को घर ले जाने के लिए मीठे वचनों से आमंत्रण देता है। वह पिता भी अपनी इच्छा से पुत्रों के घरों में रहने लगता है। एक दिन पिता की मृत्यु हो गई। एक क्षण में ही वे पुत्र पेटी को खोलकर देखते हैं। उन बेटों को बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि उस पेटी के भीतर उन्होंने पत्थर मात्र देखे। सांसारिक सम्बन्धों में बंधु-बांधवों का स्नेह स्वार्थपरक ही होता है, यह इस घटना से जानना चाहिए।

वर्ण विकार के कुछ सामान्य नियम

1. प्राय: जिन शब्दों में 'रेफ' किसी अक्षर के ऊपर होती है उसमें र का लोप होकर जिस अक्षर पर रेफ लगी है उसका द्वित्व हो जाता है। जैसे-

   धर्म- ध + र् + म

   इसमें 'र' का लोप होकर 'म' को द्वित्व होगा

   धर्म- धम्म

   इसी तरह-

   कर्ण- क + र् + ण - कण्ण।

   कर्म- क + र् + म - कम्म।

   चर्म- च + र् + म - चम्म।

   मार्ग- मा + र् + ग - मारग-मग्ग।

2. इसी तरह रेफ के अक्षर के नीचे होने पर होता है, जैसे-

   शक्र- श + क् + र

   यहाँ 'र' का लोप होकर 'क' को द्वित्व होता है।

   शक्क

   वक्र- व + क् + र - वक्क।

   तक्र- त + क् + र - तक्क।

3. भिन्न वर्ग वाले संयुक्त व्यंजनों में प्राय: पूर्ववर्ती व्यंजनों का लोप होकर शेष को द्वित्व होता है। जैसे-

   - उत्कष्ठा- त् का लोप होकर 'क' को द्वित्व हुआ - उक्कंठा।
   - उल्का - ल् का लोप, 'क' को द्वित्व - उक्का।
   - वल्गा - ल् का लोप, 'ग' को द्वित्व - वग्गा।
   - उत्सव - त् का लो 'स' को द्वित्व -उस्सव।
   - उत्पल - त् का लोप 'प' को द्वित्व - उप्पल।
   - दुग्ध - ग् का लोप ध को द्वित्व - दुध्ध या दुद्ध।
   - गुप्त - प् का लोप 'त' को द्वित्व - गुत्त।
   - निश्चल - श् का लोप 'च' को द्वित्व - णिच्चल।

4. प्रारम्भ में आया हुआ आधा 'स' लोप हो जाता है।
   - स्नेह - नेह - णेह
   - स्थिति - थिति
5. 'स्त' का थ में परिवर्तन होता है।
   - स्तुति - थुति, थुइ
   - स्तव- थव
6. 'स्प' का 'फ' में परिवर्तन होता है -
   - स्पन्द - फंद
   - स्पर्श - फर्श - फ + र + श --फस्स या फास।
7. आदि 'य'कार का प्राय: 'ज' में परिवर्तन होता है
   योग्य - जोग्ग
   यजमान - जजमाण
   याचना - जाचणा
   अयोग्य - अजोग्ग
   युग - जुग
   यस्य - जस्स
8. शब्द के आदि में ऋकार का अकार होता है - जैसे-
   कृतं - कतं - कदं
   तृणं - तणं
   घृतं - घदं
   वृषभ - वसह
   शब्द के आदि में ऋकार का इकार भी होता है-
   दृष्टि - दिट्ठी
   ऋद्धि - इद्धि - इड्ढि
   ऋषि - इसि
   सृष्टि - सिट्ठि
   कृति - किदि
   कृपण - किवण,
   घृणा - घिणा

9. 'ष्ट' का 'ट्ठ' होता है -
   - इष्ट - इट्ठ
   - पृष्ट - मिट्ठ
   - वरिष्ठ - वरिट्ठ
   - दृष्ट - दिट्ठ
10. 'द्धि' के स्थान पर ड्ढि होता है।
   वृद्धि - वड्ढि
   ऋद्धि - इड्ढि
11. 'ऋ'कार का उ कार भी होता
   ऋषभ - उसह
   प्राभृत - पाहुड
   ऋजु - उजु
   ऋतु - उडु
12. 'त' कार का लोप होता है, य कार होता है और ड कार भी होता है।
   - अजित - अजिअ, अजिय
   - ऋतु - उडु
   - प्राभृत - पाहुड
13. ख, ध, घ भ, थ अक्षरों का प्रायः ह हो जाता है।
   - सुख - सुह
   - शुभ - सुह
   - बोधि - बोहि
   - लाभ - लाह
   - तथा - तहा

प्राकृत-शब्दकोश

संक्षिप्त संकेत सूची

ध.पु.	– धवल पुस्तक	स्त्री.	– स्त्री लिंग
पृ.	– पृष्ठ	अ.	– अव्यय
ज.ध.पु.	– जय धवल पुस्तक	वि.	– विशेषण
भ.आ.	– भगवती आराधना	स.	– सर्वनाम 'पद'
जी.का.	– जीव काण्ड	सं.वि.	– सम्बन्ध विशेषण
क.पा.	– कषाय पाहुड	एक.	– एकवचन
मूला.	– मूलाचार	बहु.	– बहुवचन
वि.कृ.	– विधि कृदन्त	प्र. वि.	– प्रथमा विभक्ति
अ.पु.	– अन्य पुरुष	द्वि. वि.	– द्वितीय विभक्ति
उ.पु.	– उत्तम पुरुष	तृ. वि.	– तृतीय विभक्ति
भवि.	– भविष्यत्कालिक	च. वि.	– चतुर्थी विभक्ति
व.	– वर्तमानकालिक	पं. वि.	– पंचमी विभक्ति
भू.	– भूतकालिक	ष. वि.	– षष्ठी विभक्ति
नपुं.	– नपुंसक लिंग	स. वि.	– सप्तमी विभक्ति
पु.	– पुरुष लिंग	भू.क.कृ	– भूत कालिक कृदन्त

प्राकृत शब्द कोश

(श्रीधवल, जयधवल, जीवकाण्ड एवं भगवती आराधना आदि में प्रयुक्त शब्द कोश)

अहियार (पुं.)-अधिकार, ग्रन्थ का एक भाग या सर्ग-ध.पु. 13, पृ. 1

अणियोगद्दारं (नपुं.)-अनुयोग द्वार-ध.पु. 13, पृ. 1

अत्थाहियार (पुं.)-अर्थाधिकार--ध.पु. 13, पृ. 2

अवगम (पु.)-ज्ञान, जानकारी अवगमोवायाभावादो--ध.पु. 13, पृ. 2

अणुपेहणा (स्त्री.)-अनुप्रेक्षणा-मूला. 693

अल्लय-अदरक सूरजणल्लय-ध.पु. 13, पृ. 19

अहियरणं-अधिकरण, णेरइयभवाणमहियरणभावेण-ज.ध.पु. 12/51-106

अहिप्पाय-अभिप्राय-सिस्साहिप्पायं-ज.ध.पु. 12/, पृ. 2

अवयार (पुं.)-अवतार-ज.ध.पु. 12, पृ. 7

अज्झाहार-अध्याहार-अज्झाहारं कादूण-ज.ध.पु. 12, पृ. 10

अवयारणं (नपुं.)-अवतरण-ज.ध.पु. 12, पृ. 10

अप्पयर (वि.)-अल्पतर-ज.ध.पु. 12/154

अवलेहणी-अवलेखनी, जीभी, जीभ के मन का शोधन करने वाली-ज.ध. पु. 12/155

अक्खमल-रथ के चक्के के धुरा के भीतर भरा काला ओंगन-ज.ध.पु. 12/155

अविभागपलिच्छेद-अविभाग प्रतिच्छेद-ज.ध.पु. 12/162

अह-अथ-ज.ध.पु. 12/173

अणंतरं-अनंतर पूर्व, जो अभी पहले कहा है-ज.ध.पु. 12/177

अंतोमुहुत्तिगं-अन्तर्मुहूर्त काल तक-ज.ध.पु. 12/180

अंतो-भीतर-अंतो अद्धमासस्स-ज.ध.पु. 12/181

अणिद्धारिद-अनिर्धारित-ज.ध.पु. 12/194

अंतदीवय-अंतदीपक--ज.ध.पु. 13/16

अत्थावत्ति-अर्थापत्ति--ज.ध.पु. 13/39

अहिमुहीभाव-अभिमुख होना-ज.ध.पु. 13/115

असुभ-अशुभ-असुभाणं पुण कम्माणं-ज.ध.पु. 13/115

अवइण्ण (भू.क.कृ.)-आया, अवतीर्ण हुआ-ज.ध.पु. 13/193

अदिच्छिद (भू.क.कृ.)-व्यतीत हुआ, गया हुआ, एदम्मिकाले अदिच्छिदे-ज. ध.पु. 13/235

अव्वोगाढ-सघन-ज.ध.पु. 13/309

अज्ज वि (अ.)-अभी भी-ज.ध.पु. 14/12

अणूणाहिअ (वि.)-न्यूनाधिक-ज.ध.पु. 14/52

अब्भुस्सरणं (नपुं.)-उत्सर्पण-ठिदिबंधब्भुस्सरणाणि-ज.ध.पु. 14/82

अणुविहाइणी (स्त्री.)-अनुसार होने वाली-ज.ध.पु. 14/183

अंगारकम्मं-अंगारकर्म-चु.सू.ज.ध.पु. 15, पृ. 140

अज्झाहार-अध्याहार-वक्काज्झाहारं कादूण-ज.ध.पु. 15, पृ. 162

अणंतर (अ.)-अनंतर पूर्व-अणंतरणिद्दिट्ठेहिं-ज.ध.पु. 12, पृ. 88

अरिहंत-योग्य-णोमाणववएसारिहं तेणावलंबणादो-ज.ध.पु. 12, पृ. 94

अदो-इसलिए-अदो चेब-ज.ध.पु. 12, पृ. 126

अब्भुवगम (पुं.)-स्वीकार-ज.ध.पु. 12, पृ. 129

अण्णारिस-अन्यादृश, अन्य प्रकार का-ज.ध.पु. 12, पृ. 138

अणुसारि (वि.)-अनुसार-जीव रासिसंचओ वि तदणुसारिओ-ज.ध.पु. 12, पृ. 145

अणुसारित्त-अनुसारित्व-ज.ध.पु. 12, पृ. 146

अहिकय (वि.)-अधिकृत-ज.ध.पु. 12, पृ. 62

अक्कमेण (अ.)-अक्रम से, एक साथ-ज.ध.पु. 12, पृ. 80

अण्णदर (वि.)-अन्यतर-जी.का. 19

अण्णारिस (वि.)-(स्त्री.-अण्णारिसी)-अन्य प्रकार का, अन्यादृश-ज.ध.पु. 12, पृ. 29

अवच्छिण्ण (वि.)-युक्त, सहित-ज.ध.पु. 12, पृ. 55

आगरिस (पु.)-परिवर्तनवार आगरिसेसु-ज.ध.पु. 12/50-104

आगाइद (भू.क.कृ.)-ग्रहण किया-ज.ध.पु. 12/271

आधेयत्त-आधेयत्व-ज.ध.पु. 13/173

आवासयं (नपुं.)-आवश्यक-ज.ध.पु. 14/53

आसाण, सासण-सासादन-ज.ध.पु. 14/100

आवित्ती (स्त्री.)-आवृत्ति, बार-बार-ज.ध.पु. 14/222

आयदणं (नपुं.)-आयतन, घर, जिनालय-बोध पा. 3

आदी-आदि-ज.ध.पु. 12, पृ. 143

आश्रय, आधार-कालजोणी कायव्वा-काल के आश्रय से करना चाहिए-चु. सु.ज.ध.पु. 12, पृ. 91

आदिम (वि.)-पहला आदिमसम्मत्तद्धा-जी.का. 19

आयरण (वि.)-आचरण, चित्तलायरणो-जी.का. 33

आदिल्ल (वि.)-पहले का-आदिल्लदुगं-ज.ध.पु. 12, पृ. 19

आगरिस (पुं.), आगरिसा (स्त्री.)-परिवर्तन बार-ज.ध.पु. 12, पृ. 29

ओगाहण (नपुं.)-अवगाहन, अवकाश, स्थान सेसदव्वाणमोगा हणदाणभावेण-ध. पु. 13, पृ. 43

ओलुत्त (भू.क.कृ.)-अवशिष्ट रहने पर-ज.ध.पु. 13/43

ओट्टद्ध (भू.क.कृ.)-ब्याप्त-संकिलेसमारेणोट्टद्धो-ज.ध.पु. 13/131

ओट्टुद्ध-गिरता हुआ-ज.ध.पु. 13/176

ओगाढ-अवगाहित-ओगाढविसयादो-ज.ध.पु. 14/123

इच्चादि-इत्यादि-ज.ध.पु. 12/166, इच्चेदेण-12/167

इदं-यह-इदमाह-ज.ध.पु. 12/170

इच्चेदं (नपुं.) (इच्च+इदं)-इच्चेदं सुत्तपदं-ज.ध.पु. 12/233

इदं-यह-इदमाह-ज.ध.पु. 13/84

इच्चासंका (स्त्री.)-इस प्रकार की आशंका-केण पयदभिच्चासंकाए-ज.ध. पु. 14/9

इह-यहाँ-ज.ध.पु. 14/126

इच्चादि (अ.)-इत्यादि-ज.ध.पु. 14/222

इय-ही, 'एव' अर्थ में-भ.आर. 21

इय-इस प्रकार, एवं-भ.आ. 141

इदाणिं (अ.)-इस समय अणंतरमिदाणिं-ज.ध.पु. 12, पृ. 68

इच्चासंकाए-इस आशंका से-ज.ध.पु. 12, पृ. 85

उवसग्ग (पुं.)-उपसर्ग-सयलोवसग्ग-ध.पु. पृ. 1

उवाय (पुं.)-उपाय, तरीका-ध.पु. 13, पृ. 2

उद्ध (वि.)-ऊर्ध्व-उद्धाधोमज्झभागाणं-ध.पु. 13, पृ. 23

उवजोगिगा (बहु.)-उपयोग वाले-ज.ध.पु. 12/51-106
उवसंदरिसणा (स्त्री.)-निर्णयकरना-ज.ध.पु. 12/51-107
उवरिम (पुं.)-ऊपर का, आगे-उवरियं सुत्तपबंधं-ज.ध.पु. 12, पृ. 18
उदइल्ल-उदय से सहित-जीवाणं तदुदइल्लाणं-ज.ध.पु. 12/217
उप्पादिद (भू.क.कृ.)-उत्पादित-ज.ध.पु. 12/281
उव्वराविद (भू.कृ.) शेष बचा-ज.ध.पु. 13/79
उवइट्ठत्त-उपदिष्टत्व-तहोवइट्ठत्तादो-ज.ध.पु. 13/106
उवरुवरि (अ.)-ऊपर-ऊपर-ज.ध.पु. 13/108
उट्ट (पुं.)-उष्ट्र, ऊँट-ज.ध.पु. 15, पृ. 34
उवण्णास (पुं.)-उपन्यास-उत्तरसुत्तोवण्णासो-ज.ध.पु. 12, पृ. 99
उवजोगिग-उपयोग वाले-संखेज्जोवजोगिगभवा-ज.ध.पु. 12, पृ. 58
उवरिं (अ.)-ऊपर-तहा उवरिं-जी.का. 13, 14
उवसंदरिसणा (स्त्री), उसंदरिसणं, (नपुं.)-उपसंदर्शना, निदर्शन, निर्णय-ज. ध.पु. 12, पृ. 51, 52
उवसंदरिसद (वि.) (भू.क.कृ.) निर्णय किया गया-ज.ध.पु. 12, पृ. 53
एत्थ (अव्य.)-यहाँ, इस जगह--ध.पु. 13, पृ. 2
एक्कदो-एक साथ-ज.ध.पु. 12/222
एद्दूरं-इतने दूर तक--ज.ध.पु. 12/248
एयार-एकादस-जी.का. 359
एम्महंता (वि.)-इतना बड़ा-ज.ध.पु. 13/79
एवडिअ (वि.)-इतना-एवडिओ चेव गुणसेढिणिक्खेवो-ज.ध.पु. 14/49
एवं पयारेण/एवं विहेण-इस प्रकार से-ज.ध.पु. 14/185
एत्तिग (वि.)-इतना-एत्तिगे मूलगाहाए-ज.ध.पु. 14/241
एवदि (अं.)-इतना-एवदिगुणमिदि-ज.ध.पु. 14/339
एवमि हावि (अ.)-इस प्रकार यहाँ भी-ज.ध.पु. 15, पृ. 34
एस (स.) यह-कुदो एस णियमो-ज.ध.पु. 12, पृ. 122
एरिस (वि.)-इस प्रकार का, ऐसा-ज.ध.पु. 12, पृ. 126
किरिकम्म (नपुं.)-कृतिकर्म-जी.का. 367
किमाहो (अ.)-अथवा क्या-ज.ध.पु. 13/129

किलेस-क्लेश-परिहाणीदो किलेसस्स-जी.का. 501

किस-कृश, थोड़ा, किसं कम्मं-चु.सू-ज.ध.पु. 15, पृ. 62

किसं थोवयरं-ज.ध.पु. 15, पृ. 62

किण्णु (अ.)-दो चीजों में से एक पूछने के लिए, क्या ऐसा है या ऐसा, क्या, प्रश्नवाची अव्यय-किण्णु भूदपुव्वा किं माणोवजुत्ता-ज.ध.पु. 12, पृ. 92

किं पि (अ.प.)-कुछ, थोड़ा-किं पि अट्ठपदं-ज.ध.पु. 12/51-107

किंचि-कुछ, कुछ भी-किंचि संजमघादं कुणइ-ज.ध.पु. 12/180

किंतु (अ.)-किन्तु-ज.ध.पु. 14/293

किंदाइं-(किमिदानीं)-क्यों इस समय-भ.आ. 18

किंचि-(अन्य)-कुछ, थोड़ा-किंचि बीजपदमुवइट्ठं-ज.ध.पु. 12, पृ. 92

किंतु (अ.)-परन्तु, पिछले वाक्य से कुछ विशेषता बताने के लिए-ज.ध. पु. 12, पृ. 79

कंध-स्कन्ध, वृक्षों का मोटा भाग-ध.पु. 13, पृ. 19

कथंचि-कथंचित्-किसी प्रकार, किसी अपेक्षा से-ज.ध.पु. 12, पृ. 8

कदाइं-कदाचित्, कभी भी-ज.ध.पु. 12/153

कइत्थ-कितना-कइत्थं भागं-ज.ध.पु. 12/198

कुलिस-वज्र-ज.ध.पु. 13/105

कम्मं (नपुं.)-कर्म-जं कम्मं-ज.ध.पु. 13/210

कुत्तो-किससे-ज.ध.पु. 13/312

कदर (वि.)-कौन सा-कदरेण उवजोगेण-ज.ध.पु. 14/157

कदाइं (अ.)-कदाचित्-ज.ध.पु. 14/162

कइत्थ-कितना भाग-ज.ध.पु. 14/333

कंड (पुं.)-काण्ड, बाण-रहिओ कंडस्स-बोध पा. 20

कट्ठंगार-काष्ठंगार-ज.ध.पु. 15, पृ. 140

कुड्डु-दीवाल-ज.ध.पु. 15, पृ. 141

कदाइं-कदाचित्-कदाइमुवलंभादो-ज.ध.पु. 15, पृ. 172

कदाइं (अ.)-कदाचित्-ज.ध.पु. 12, पृ. 115

कदम (वि.)-कौन सा-कदमो वियप्पो-ज.ध.पु. 12, पृ. 69

कत्तो (पं.एक.पुं.)-किससे-ज.ध.पु. 12, पृ. 87

केत्तियमेत्ती (स्त्री.)-कितने मात्र केत्तियमेत्तीयो लहामो-ज.ध.पु. 12/52-108
केणिचि-किसी कारण से-ज.ध.पु. 12/154
केद्दूरं-कितने दूर तक-ज.ध.पु. 12/250
केवचिरं-कितना काल-ज.ध.पु. 12/192 चु.सू. 118
केद्देही (अ.)-कितने प्रमाण वाला-केद्दिहित्ति-ज.ध.पु. 14/111
केरिसं (वि.)-किस प्रकार का-ज.ध.पु. 14/154
केम्महंत (वि.)-कितना बड़ा-केम्महंतो एत्थ गुणगारो-ज.ध.पु. 15, पृ. 7
केवचिर (वि.)-कितना-केवचिरेण कालेण-ज.ध.पु. 12, पृ. 118
केरिसी (स्त्री.)-किस प्रकार की-केरिसी का पुच्छा-ज.ध.पु. 12, पृ. 73
केवडिय (वि.)-कितना, कितने-जीवा केवडिया होति-ज.ध.पु. 12, पृ. 86
खेत्त-क्षेत्र--ध.पु. 13, पृ. 2
खीरं (नपुं.)-क्षीर, दूध-बोध पा. 14
गच्छ-गुच्छा गच्छाण-ध.पु. 13, पृ. 19
गुणहर-गुणधर नामके आचार्य जिन्होंने कसायपाहुड गाथा सूत्रों की प्राकृत में सर्वप्रथम रचना की। ज.ध.पु. 12, पृ. 150
गहिय-गृहीत-ज.ध.पु. 12/167
गाउयं-गव्यूति, कोश-तह गाउयं मुहूत्तं तु-जी.का. 405
गउरव-गौरव-ज.ध.पु. 13/14
गवेसणं (नपुं.)-गवेणा, खोज
घडावणं (नपुं.)-घटित करना-सुत्तत्थघडावणं कीरदे-ज.ध.पु. 12, पृ. 8
घायण-घातन-सव्वघायणसत्तीए-ज.ध.पु. 12/165
घडण-घड़ना, बनाना-ज.ध.पु. 15, पृ. 141
चे (अव्य.)-यदि, प्रश्नवाचक अर्थ में सरिसत्तमुवलब्भदि त्ति चे-होदुणाम-ध.पु. 13, पृ. 42
चेट्ठा (स्त्री.)-चेष्टा, इच्छा-पणट्ठकम्मट्ठदुट्ठरिवुचेट्ठं-ज.ध.पु. 12, पृ. 149
चउदालं-चबालीस-जी.का. 358
चेदिहरं (नपुं.)-चैत्यगृह-बोध पा. 3
चेदयं (नपुं.)-चैतन्य-अप्पाणं चेदयाइं अण्णं च-बोध पा.
चेय (अ.) अवधारणार्थ अव्यय, ही अर्थ में-सहावदो चेय-ज.ध.पु. 12, पृ. 122

चत्तारि (सं.वि.) चार-चत्तारिरूवमेत्तमिदि-ज.ध.पु. 12, पृ. 126
छद्धा-षोढा, छह प्रकार का-गुणपच्चइगो छद्धा-जी.का. 372
ज (स.वि.)-(पु.-जो, नपुं.-जं)-जो, वह-जमणिओगद्दारं-ज.ध.पु. 12, पृ. 150
जरद-पुराना-ज.ध.पु. 12/155
जसगित्ति-यश कीर्ति-ज.ध.पु. 12/210
जाधे (अ.)-जब-ज.ध.पु. 12/276
जहारिहं (अ.)-यथायोग्य-ज.ध.पु. 12/306
जोगवह-योगवाह-चत्तारि य जोगवहा-जी.का. 352
जहागमं-यथागम-ज.ध.पु. 13/114
जाणिद (भू.क.कृ.)-जाना हुआ-ज.ध.पु. 13/170
जत्त-जाता हुआ-जत्तस्स पहं-जी.का. 567
जद्देही-(अ.)-जितने प्रमाण वाला-चु.सु.ज.ध.पु. 14/102
जाणिदजाणावण-जाने हुए का ज्ञान कराना-जाणिदजाणाविदे फलविसेसाणुवलंभादो-ज.ध.पु. 14/145
जहाकमसो (पु.)-यथा क्रमशः, यथा क्रम से-बोध पा. 4
जारिस (वि.)-जैसा-ज.ध.पु. 15, पृ. 8
जहासंभवं (अ.)-यथा संभव-ज.ध.पु. 12, पृ. 94
जोजणा (स्त्री.)-योजना-ज.ध.पु. 12, पृ. 95
जइ-यदि-ज.ध.पु. 12, पृ. 137
जहाकमेण (अ.)-यथाक्रम से-ज.ध.पु. 12, पृ. 144
जहापविभागं (अ.)-यथा प्रविभाग--ज.ध.पु. 12, पृ. 75
जोणी (स्त्री.)-योनि, उत्पत्ति-स्थान
जरिद (वि.)-ज्वरित, ज्वर वाला-जहा जरिदो-जी.का. 17
जाणावण (वि.)-जानना, ज्ञान-जाणावणफलं-ज.ध.पु. 12, पृ. 41
जोइद (वि.)-योजित, देखना-जोइदे-ज.ध.पु. 12, पृ. 52
झाण-ध्यान-मूला. 693
ठत्त-ठहरा हुआ-ठत्तस्स आसणं-जी.का. 567
णिवह (पुं.)-समूह, समुदाय
णिक्खेव (पुं.)-निक्षेप, न्यास फासणिक्खेवे-ध.पु. 13, पृ. 1

णिदरिसणं (नपुं.)-निर्णय करना-ज.ध.पु. 12/51-107
णिप्पडिकार (पुं.)-निष्प्रतीकार-ज.ध.पु. 12/153
णियमसा (अ.)-नियम से-क.पा.गा. 80
णिरारेगीकरण-निराकरण करना-ज.ध.पु. 12/169
णिसहिय (नपुं.)-निषिद्धिका-णिसिहियमिदि-जी.का. 368
णिद्धारिद-निर्धारित-जहाणिद्धारिदेण-ज.ध.पु. 13/29
णियामिद (वि.)-नियामित, नियम किया गया-ज.ध.पु. 14/100
णिम्मिविय (भू.क.कृ.)-निर्मित हुआ-णिम्मिविया जंगमेण रूवेण-बोध पा. 12
णिव्वत्तिद (वि.)-रचे गए-ज.ध.पु. 15, पृ. 140
णिहालणं (नपुं.)-निर्णय-णिहालणट्ठं-ज.ध.पु. 12, पृ. 101
णिस्संसयं-संशय के बिना-ज.ध.पु. 12, पृ. 135
णिण्णीय (द)त्त (वि.)-निर्णीयत्व-पुव्वमेव णिण्णीयत्तादो-ज.ध.पु. 12, पृ. 60, 151
णिक्खित्त (वि.)-निक्षिप्त, रखा हुआ-जी.का. 37
णिक्खेव (पु.)-निक्षेप-पिडं पडि णिक्खेवो-जी.का. 38
णिक्खमणं (नपुं.)-निष्क्रमण-ज.ध.पु. 16
णिरुंभण (पुं.)-रोककर, विवक्षित करके-णिरुंभणं कादूण-ज.ध.पु. 12, पृ. 45
णिप्पडिबंध-प्रतिबंध से रहित, बाधा के बिना-ज.ध.पु. 12, पृ. 47
णिदरिसणं (नपुं.)-निदर्शन
णाय (पुं.)-न्याय-'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायादो-ध.पु. 13, पृ. 2
णग-पर्वत-ज.ध.पु. 12/151
णदी (स्त्री.)-नदी-ज.ध.पु. 12/153
णइ-नदी-महाणइस्स-जी.का. 415
णीद (वि.)-प्राप्त किया, ले जाया गया-ज.ध.पु. 15, पृ. 14
णाम (पुं.)-सासण णामो-जी.का. 20
णवरि, णवरिं (अ.)-विशेष यह है किए विशेषता बताने के लिए- णवरि--ज.ध.पु. 12, पृ. 130, णवरिं तु-जी.का. 30
तिधा (अ.)-तीन प्रकार का-तिधा ओही-जी.का. 372
तिरिच्छ-तिर्यक् रूप-तिरिच्छेण-ज.ध.पु. 13/13

तिवीस-तेवीस-जी.का. 359
तिविहत्तं (नपुं)-त्रिविधत्व-ज.ध.पु. 13/111
तिहाविहत्त (वि.)-तीन प्रकार से विभाजित-ज.ध.पु. 13/146
तित्थं (नपुं.)-तीर्थ-तित्थमिह य अरहंतं-बोध पा. 3
तेरस (वि.)-तेरह तेरसेसु अत्थेसु-ध.पु. 13, पृ. 2
तेरस अत्था त्ति-ध.पु. 13, पृ. 3
तेरसविह (वि.)-तेरह प्रकार का-ध.पु. 13, पृ. 3
तय-त्वक्, त्वचा तयफासे--ध.पु. 13, पृ. 3
तत्-तत सर्वनाम पद के साथ संधि भी होती है-तदवसरकरणट्ठमाह-ज.ध. पु. 12/50-105
तो वि (अव्य)-तो भी-तो वि पबंधवसेण-ज.ध.पु. 12, पृ. 147
तक्खणं-तत्क्षण-ज.ध.पु. 12/154
तारतम्म-तारतम्य-ज.ध.पु. 12/180
ताधे (अ.)-तब, उसी समय-ज.ध.पु. 12/276, 281
तो-ततः, उससे, आगे-जी.का. 357
तइज्ज (वि.)-तीसरा-ज.ध.पु. 13/114, तइज्जा गाहा-ज.ध.पु. 13/215
तदित्थ-वहाँ सम्बन्धी-तदित्थाणुभागखंडय-ज.ध.पु. 13/122
तहा चेय (अ.)-उसी प्रकार-ज.ध.पु. 13/203
तदोप्पहुडि (अ.)-वहाँ से लेकर-ज.ध.पु. 14/90
तद्देही-(अ.)-उतने प्रमाण वाला-चु.सु.ज.ध.पु. 14/102
तारिस (वि.)-तैसा-ज.ध.पु. 15, पृ. 8
तत्थतण (अ.)-वहाँ का, उस संबंधी-तत्थतणसव्व अद्धट्ठाणाणि-ज.ध.पु. 12, पृ. 113
तत्तो (पं.एक.) उससे-किंतु तत्तो-ज.ध.पु. 12, पृ. 122
तरिहि (अ.)-तो फिर, तर्हि-ज.ध.पु. 12, पृ. 131
तदो (अ.)-इसके बाद, इससे-ज.ध.पु. 12, पृ. 84
तहाभाव-तथाभाव, उसी प्रकार-तहाभाव सिद्धीए-ज.ध.पु. 12, पृ. 47
थोरुच्चयेण-थोड़े फर्क से-ज.ध.पु. 14/76
थंभ-स्तम्भ-ज.ध.पु. 15, पृ. 141

थद्धत्तं (नपुं.)-स्तब्धता-माणस्सभावो थद्धत्तं-ज.ध.पु. 12/180
दिट्ठंत (पुं.)-दृष्टान्त-ज.ध.पु. 12/179
दिट्ठंत (नपुं.)-दृष्टान्त-एदं दिट्ठंतवयणं-ध.पु. 13, पृ. 21
दरिसणं (नपुं.)-दिखाना, निर्देश करना दिसादरिसणमेदेण कयं-ध.पु. 13, पृ. 3
दीह (वि.)-दीर्घ-मूला. 693
दह (वि.)-दश-मूला. 693
दो (वि.)-दो संख्या-मूला. 693, दोपयडीओ-ज.ध. पृ. 12
दुवार-द्वार, माध्यम, उपाय-पुसणदुवोरण-ध.पु. 13, पृ. 16
दुवे (बहु.)-दो दुवे भवा लद्धा भवंति-ज.ध.पु. 12, पृ. 6
दरिसिद-दर्शित, दिखलाया-ज.ध.पु. 12/170
दुवार-द्वारा-ज.ध.पु. 12, पृ. 138
दो (वि.)-दो-दोहिं पयारेहिं-ज.ध.पु. 12, पृ. 61
दु (वि.)-दो अंक के लिए जैसे दुकसायो-ज.ध.पु. 12, पृ. 69
देसामासय-देशामर्षक-ज.ध.पु. 12, पृ. 87
दरिसी (पुं.)-दर्शी, दर्शन वाला जैसे बौद्ध दर्शन का अनुयायी बुद्धदरिसी (जी.का. 16)
द्दय (वि.)-द्वय-सुत्तद्दयमोइण्णं--ज.ध.पु. 12, पृ. 62
घिय-घृत, घी-भवदि हु खीरं घियमयं-बोध पा. 14
पुव्व-पूर्व, पहले पुव्वमादिट्ठं-ध.पु. 13, पृ. 1
पच्चय (पुं.)-प्रत्यय--ध.पु. 13, पृ. 2
पढम (वि.)-प्रथम, पहला-ध.पु. 13, पृ. 2
पप्पद-पपड़ी, छाल के ऊपर का भाग-ध.पु. 13, पृ. 19
पिंडत्थ (पुं.)-पिण्डार्थ, समुदायरूप अर्थ-सुत्तस्स पिंडत्थो-ज.ध.पु. 12, पृ. 63
पलंडु-प्याज--ध.पु. 13, पृ. 19
पुसणं (नपुं.)-स्पर्शन एचक्खेत्तपुसणदुवारेण-ध.पु. 13, पृ. 16
पाएण (अव्व.)-प्रायः, बहुलता से पाएण सरिसत्तुवलंभादो-ध.पु. 13, पृ. 42
पओअ (पु.)-प्रयोग-तत्थ मणपओओ चउव्विहो-ध.पु. 13, पृ. 44
परिवाडी-परिपाटी-ज.ध.पु. 12/50-104
पुच्छिद (भू.क.कृ.), पूछा हुआ-ज.ध.पु. 12, पृ. 2

परमेट्ठी (पुं.)-परमेष्ठी-जिणपरमेट्ठिं-ज.ध.पु. 12, पृ. 149
पइण्णाद (भू.क.कृ.)-प्रतिज्ञा की गई, प्रतिज्ञात-ज.ध.पु. 12, पृ. 151
पयट्ट (वि.)-परिणत हुआ, प्रवृत्त हुआ-ज.ध.पु. 12/153
पाउसकाल (पुं.)-वर्षाकाल-ज.ध.पु. 12/153
पुलिण-पुल, कूल-ज.ध.पु. 12/153
पेल्लिद (वि.)-प्रेरित-ज.ध.पु. 12/154
पाणीय-पानी, जल-ज.ध.पु. 12/154
पवंचिद (भू.क.कृ.)-कहा गया-ज.ध.पु. 12/177
पयरिस-प्रकर्ष-ज.ध.पु. 12/180
परोप्पर-परस्पर-ज.ध.पु. 12/216
पवंचीकरण-कथन करना-पवंचीकरणट्ठं-ज.ध.पु. 12/218
पोराणिय-पुराना, पौराणिक-ज.ध.पु. 12/279
पेरंत-पर्यंत-पंचमखिदिपेरंतं-जी.का. 431
पच्छिल्ल-पिछले-ज.ध.पु. 13/25
पण्ह-प्रश्न-जी.का. 357
पवंचिद (भू.क.कृ.)-विस्तार किया हुआ-ज.ध.पु. 13/120
पायाल-पाताल-ज.ध.पु. 13/131
पयरण-प्रकरण-ज.ध.पु. 13/134
परिच्छिण्ण (भू.क.कृ.)-जाना, ज्ञात हुआ-ज.ध.पु. 13/135
परिक्खा (स्त्री.)-परीक्षा-ज.ध.पु. 13/139
पडिलंभ-प्राप्ति-ज.ध.पु. 13/166
पयद-प्रकृत-ज.ध.पु. 13/168
परामरस-परामर्श-ज.ध.पु. 13/191
पाय-पाया, स्थान-तत्तो पाए--ज.ध.पु. 13/206
पत्थिद (भू.क.कृ.)-प्रारम्भ हुआ-चु.सू.ज.ध.पु. 13/279
परिसेसिदत्त (वि.)-अवशिष्ट बचा हुआ-ज.ध.पु. 14/182
पडिमा (स्त्री.)-प्रतिमा, जिनबिंब-जिणपडिमा-बोध पा. 3
पुट्ठी (स्त्री.)-पीठ-जहा उट्टस्स पुट्ठी-ज.ध.पु. 15, पृ. 34
पुरिमद्ध (वि.)-पूर्वार्द्ध-चु.सु.ज.ध.पु. 15, पृ. 64

पारिसेस-पारिशेष्य, अन्याय का एक भेद-पारिसेसणाएण-ज.ध.पु. 15, पृ. 135
पडाय-पताका, ध्वज-आराहणापडायं-भ.आ. 23
पइण्णा (स्त्री.)-प्रतिज्ञा-ज.ध.पु. 12, पृ. 101
पयदय (पयद+य)-प्रकृत-पयदयमग्गणट्ठं-ज.ध.पु. 12, पृ. 114
पुरदो (पं.वि.एक.)-आगे-ज.ध.पु. 12, पृ. 126
पयारंतर (पुं.)-प्रकारान्तर-ज.ध.पु. 12, पृ. 129
परिहाविद (भू.क.कृ.)-घटा हुआ-परिहाविदेसु-ज.ध.पु. 12, पृ. 131
पास-पास, निकट-पासे विरलिय-ज.ध.पु. 12, पृ. 135
पुरिमद्ध-पूर्वार्ध-ज.ध.पु. 12, पृ. 140
पवेसणयं-प्रवेशकाल-चु.सू.ज.ध.पु. 12, पृ. 143
परिसमत्ती (स्त्री.)-परिसमाप्ति-ज.ध.पु. 12, पृ. 147
पच्छाणुपुव्वी-पश्चातानुपूर्वी-ज.ध.पु. 12, पृ. 59
पदरिसिओ (वि.)-प्रदर्शित, दिखालाया है-ज.ध.पु. 12, पृ. 75
पडुच्च (अ.)-प्रतीत्य-अपेक्षा करके, आश्रय लेकर के दंसणमोहं पडुच्च भणिदा हु-जी.का. 12
पव्वय (पुं.)-पर्वत-रयणपव्वय-जी.का. 20
प्रभृति (अ.)-आदि, किसी प्रसंग के आगे-जीवो तदो पहुदि-जी.का. 28
पंचमअ (वि.)-पाँचवाँ देसवदो होदि पंचमओ-जी.का. 30
परियट्टण-परिवर्तन-जी.का. 35
पमद, पमाद (पुं.)-प्रमाद-जी.का. 35, 34
पवाइज्जंत (पुं.)-प्रवहमान-ज.ध.पु. 17
परिवज्जणं (नपुं.)-निषेध, परिवर्जन-ज.ध.पु. 12, पृ. 24
परिवाडी (स्त्री.)-परिपाटी, परम्परा-ज.ध.पु. 12, पृ. 29
पारंभ-प्रारंभ-पारभदंसणादो-ज.ध.पु. 12, पृ. 48
पादेक्कं (अ.)-पृथक्-पृथक्-ज.ध.पु. 12, पृ. 55
परिहीणत्त-परिहीनत्व-ज.ध.पु. 12, पृ. 55
पुव्विल्ल (वि.)-पूर्व का-ज.ध.पु. 12, पृ. 56
पाहण्णिय (वि.)-प्रधानता, प्राधान्य-पाहण्णियाभावादो-ज.ध.पु. 12, पृ. 58
परिवत्त-परिवर्तन-भवपरिवत्तेहिंतो-ज.ध.पु. 12, पृ. 58

फुल्लं (नपुं.)-फूल, पुष्प-जह फुल्लं गंधमयं-बोध पा. 14
फास (पुं.)-पार्श्व, पार्श्वनाथ भगवान
फासस्स तस्स णमिउं-ध.पु. 13 मंगलाचरण
फास (पुं.)-स्पर्श
फासणियोअं परूवेमो-ध.पु. 13। मंगला.
बहुब्बीहिसमास-बहुव्रीहि समास-ध.पु. 13, पृ. 23
बालुग-बालक, बालू-ज.ध.पु. 12/151
बादालं-ब्यालीस-जी.का. 358
बाहियत्त-बाह्यत्व, बाहर-ज.ध.पु. 13/73
बाहिरत्त-बाह्यत्व, बाहिर-ज.ध.पु. 13/80
बहुगी (स्त्री.)-बहुत-बहुगीजादा-ज.ध.पु. 13/83
बम्ह (पुं.)-ब्रह्म, ब्राह्मण-'विवरीओ बम्ह'-जी.का. 16
भविय (पुं.)-भव्य, भवियफासे-ध.पु. 13, पृ. 3
भव (क्रि.)-होना
भयवदी (स्त्री.)-भगवती-ज.ध.पु. 14/147
भयणा (स्त्री.)-भजना, भजनीय-ज.ध.पु. 14/244
भयणिज्जत्तं (नपुं.)-भजनीयत्व-ज.ध.पु. 14/247
भण्णण-कथन-ज.ध.पु. 14/355
मिलेच्छ-म्लेच्छ-ज.ध.पु. 13/184
मिच्छ (पुं.)-मिथ्यादृष्टि-मिच्छो सासणमिस्सो-जी.का. 9
मिच्छाइट्ठी (पुं.)-मिथ्यादृष्टि-जी.का. 18
मज्झे-मध्य, बीच-मज्झे सत्तमं-ज.ध.पु. 12, पृ. 2
मेत्तं (नपुं.)-मात्र-चउव्विहमेत्तं-ज.ध.पु. 12, पृ. 151
मज्झदीवय-मध्यदीपक-ज.ध.पु. 12/199
मज्जादा-मर्यादा-ज.ध.पु. 12/250
मेत्ती (स्त्री.) (वि.) पात्र-अंतोमुहुत्तमेत्ती-ज.ध.पु. 12/266
मणुसजोणिय-मनुष्य योनि वाला-ज.ध.पु. 13/147
मज्झिम-मध्यम-ज.ध.पु. 13/184
मेत्त (वि.)-मात्र-गहिदमेत्ती-पढमट्ठिदी-ज.ध.पु. 14/112

मुणिय (भू.क.कृ.)-मनन किया हुआ-ज.ध.पु. 14/147
मुद्दा (स्त्री.)-मुद्रा-जिणमुद्दा-बोध पा. 3
महरिसी (ईका. पु.)-महर्षि-बोध पा. 5
मूसाकम्म-धातु गलाने का कर्म-ज.ध.पु. 15, पृ. 141
मंसु-श्मश्रु, दाढ़ी, मूंछ-भ.आ. 92
मण (पुं.)-मन-आणभासमणो-जी.का. 5
मग्गण (पुं.)-मार्गण, खोजना, मार्गणा-गदिमग्गो आऊ.जी.का. 5
महव्वई (पुं.)-महाव्रती-जी.का. 33
रुइ-रुचि-ज.ध.पु. 15, पृ. 49
राइ, रायि, राई-राजी, रेखा-ज.ध.पु. 12/151, क.पा.गा. 71
रेहा (स्त्री.)-रेखा, लकीर-ज.ध.पु. 12/154
रासी (पुं.)-राशि, समूह-एसोवि रासी-ज.ध.पु. 12, पृ. 79
रूक्ख-वृक्ष रूक्खाणं--ध.पु. 13, पृ. 19
लक्खं (नपुं.)-लक्ष्य, निशाना-णाणेण लहदि लक्खं-बोध पा. 19
लयण-गुफा-लयण खणण-ज.ध.पु. 15, पृ. 141
विभासणदा (विभासण+सा) कहना, विशेष कहने का भाव फासणयविभासणदाए -ध.पु. 13, पृ. 2
विहाण (वि.)-विधान-ध.पु. 13, पृ. 2
विही, विधी (पुं.)-विधि, प्रकार, तरीका-अप्पाबहुयविधी पुच्छिदो-ज.ध.पु. 12, पृ. 3
विहासणं (नपुं.)-विभाषण, कथन-ज.ध.पु. 12, पृ. 16
विहासिद (वि.)-कहा हुआ, व्याख्यान किया-ज.ध.पु. 12, पृ. 147
वियहिचार (पुं.)-व्यभिचार-ज.ध.पु. 12/306
विस्समण-विश्राम-ज.ध.पु. 13/28
वियाह-व्याख्या-जी.का. 361
विसुद्धि/विसोहि-विशुद्धि-ज.ध.पु. 13/107
विप्पकिट्ठ (वि.)-विप्रकृष्ट-ज.ध.पु. 13/131
विणीद-अयोध्या का एक नाम-ज.ध.पु. 13/184
वियास (पुं.)-विस्तार-वियासेण णाणत्तं-चु.सु.ज.ध.पु. 14/107

विच्छा-वीप्सा-विच्छाणिद्देस-ज.ध.पु. 15, पृ. 146
विग-दूना-विगंकरिय-ज.ध.पु. 12, पृ. 136
विवज्जास-विपर्यास-विवज्जासरूवेण-ज.ध.पु. 12, पृ. 49
वुण (अ.)-पुण के अर्थ में-ज.ध.पु. 12, पृ. 81
वक्कल (नपुं.)-छाल, त्वचा-ध.पु. 13, पृ. 19
वइधम्मिअ-वैधर्म्य-ण दिट्ठंतो वइधम्मिओ--ध.पु. 13, पृ. 23
वस्सं (नपुं.)-वर्ष, साल एगवस्सब्भंतरे, वस्साणि-ज.ध.पु. 12/52-107
वंक-टेढा-मेढा-ज.ध.पु. 12/155
वइपुल्ल-वैपुल्य-वइपुल्लवाचित्तेण-ज.ध.पु. 13/42
वइचित्तय-वैचित्र्य-ज.ध.पु. 13/208
वावदत्त-व्यापृतपना-वावदत्तादो-ज.ध.पु. 12/180
वासय-उपासक-जी.का. 357
वायरण-व्याकरण-जी.का. 357
वेवाहिय-वैवाहिक-ज.ध.पु. 13/184
वेस-वेश-सवियारवेस-ज.ध.पु. 15, पृ. 139
वेंजणं-व्यंजन-तेत्तीस वेंजणाइं-जी.का. 352
वड्ढिमा (स्त्री.)-अधिक-ज.ध.पु. 12, पृ. 122
ववत्था-व्यवस्था-ववत्थावाचओ-ज.ध.पु. 12, पृ. 141
वावी-व्यापी (बहु. में भी)-वावी धम्माधम्मा-जी.का. 583
वावद (वि.)-व्यापृतद, व्यापार हुआ-विसय-पुच्छाए वावदस्स-ज.ध.पु. 12, पृ. 61
वामिस्स (वि.)-व्यामिश्र-जी.का. 22
सिंहावलोयण्णाय-सिंहावलोकन न्याय-ज.ध.पु. 14/236
सिण्हाण-स्नान-भ.आ. 92
सिहर (पुं.)-शिखर-सिहरादो-जी.का. 20
सयलोगवसग्गणिवहा-ध.पु. 13, पृ. 1
संवरण ( )-उपासना, संवर
संवरणेणेव-ध.पु. 13, पृ. 1
संभालणं (नपुं.)-संभालना, सम्हाल, सुरक्षित करना-ध.पु. 13, पृ. 1

सयल (वि.)-सकल, सम्पूर्ण-ध.पु. 13, पृ. 1
सोलस (वि.)-सोलह-ध.पु. 13, पृ. 2
सण्णियास (पु.)-संनिकर्षण, निकटता फाससण्णियासविहाणे--ध.पु. 13, पृ. 2
सूरण-सूरण-ध.पु. 13, पृ. 19
सइं (अव्य.)-एक बार-ज.ध.पु. 12/50-104
समोदार (पुं.)-समवतार, अवतरण-ज.ध.पु. 12, पृ. 6
समोइण्णा (स्त्री.)-अवतीर्ण होना-ज.ध.पु. 12, पृ. 7
सुणिण्णदित्त (वि.)-अच्छी तरह निर्णीत हुआ-ज.ध.पु. 12/151
संसकार (पुं.)-तज्जणिदसंसकारो-ज.ध.पु. 12/153
समुट्ठिद (भू.क.कृ.)-उपस्थित हुआ, उत्पन्न हुआ-ज.ध.पु. 12/154
सहलत्तं-सफलत्व-ज.ध.पु. 12/162
संकिलेस-संक्लेश-ज.ध.पु. 12/169
संक्खित्त-संक्षिप्त-ज.ध.पु. 12/175
संकिलिट्ठदा-संक्लिष्टदा-ज.ध.पु. 12/180
संचं-संचय-णो कम्मुरालसंचं-जी.का. 377
सक्कणिज्ज (वि.)-समर्थ होने योग्य-ज.ध.पु. 13/40
सूदयड-सूत्रकृत-जी.का. 356
साफल्ल-साफल्य-ज.ध.पु. 13/80
सत्थिय-स्वस्तिक-ज.ध.पु. 13/105
ससंक-शशांक, चन्द्रमा-ज.ध.पु. 13/105
संख-शंख-ज.ध.पु. 13/105
सच्चं (नपुं.)-सत्य-सच्चमेदं-ज.ध.पु. 13/106
सण्णिहाण-संनिधान-ज.ध.पु. 13/128
सामिओ (पुं.)-स्वामी-को सामिओ होदि-ज.ध.पु. 13/139
समोइण्णो-अवतीर्ण हुआ-ज.ध.पु. 13/190
समगं-एक साथ-समगमाढत्ता-ज.ध.पु. 13/204
से-अनन्तर से काले-ज.ध.पु. 13/204
समग (वि.)-समान-समणो ट्ठिदिबंधो-ज.ध.पु. 13/232

समीचीणं (नपुं.)-समीचीन-समीचीणमेदं-ज.ध.पु. 13/318
संझ-संध्या-संझूण-जी.का. 473
संणिह-संनिभ, समान-जी.का. 495
संवुत्त संपत्त (भू.क.कृ.)-प्राप्त हुआ, प्राप्त होता है, ऐसो संपत्तोत्ति-ज.ध. पु. 14/82, 93
सीसय-शीर्ष-गुणसेढिसीसयं-ज.ध.पु. 14/123
सुपरिच्छियत्तं-अच्छी तरह ज्ञात हुआ-ज.ध.पु. 14/130
संकेद-संकेत-ज.ध.पु. 15, पृ. 8
सेडी/सेढी-श्रेणी-सेडीए णेदव्वाणि-चु.सू.ज.ध.पु. 15, पृ. 15
सोदा-श्रोता-सोदाराणं सुहेण-ज.ध.पु. 15, पृ. 52
समंजसं (नपुं.)-समंजस, ठीक-णेदं समंजसं-ज.ध.पु. 15, पृ. 8
समा-काल-समाविभागे-क.प्रा. गाथा 192
संभारण-संस्कृत करना-सुवण्ण-संभारणादि वावारो-ज.ध.पु. 15, पृ. 141
सज्झ-साध्य-सुहसज्झाराहणा होइ-भ.आ. 19
सज्जो-सद्यः शीघ्र-भ.आ. 140
सद्दहा-श्रद्धा-भ.आ. 91
संठप्प-रोक देना-भ.आ. 92
सम्मं (अ.)-अच्छी तरह से-ज.ध.पु. 12, पृ. 94
संसकार (पुं.)-संस्कार-जणिदसंसकाराणं-ज.ध.पु. 12, पृ. 102
संपहिय (अ.)-संप्रति, अभी-संपहियकाले-ज.ध.पु. 12, पृ. 108
संबंधित्त (वि.)-संबंधीपना-उवजोग संबंधित्तादो-ज.ध.पु. 12, पृ. 110
सम्मदत्त (वि.)-सम्मतत्व, सम्मतपना-सव्वाइरियसम्मदत्तेण-ज.ध.पु. 12, पृ. 116
समुप्पत्ती (स्त्री.)-उत्पत्ति-ज.ध.पु. 12, पृ. 129
समुप्पण्णं (वि.)-समुत्पन्न हुआ-ज.ध.पु. 12, पृ. 130
संपहिय (अ.)-साम्प्रतिक, अभी, इस समय-ज.ध.पु. 12, पृ. 130
समुदिद-समुदित-ज.ध.पु. 12, पृ. 134
सण्णिवेस-रचना-ज.ध.पु. 12, पृ. 138
सण्णिद-(भू.क.कृ.) संज्ञित-ज.ध.पु. 12, पृ. 142

सुवुत्त (वि.)-सुव्यक्त-सुव्वत्तमेवेदं-ज.ध.पु. 12, पृ. 145
संपहारणा-आशंका-ज.ध.पु. 12, पृ. 146
समाणत्त (वि.)-समानत्व, समानता-ज.ध.पु. 12, पृ. 60
संपजोग (पुं.)-संप्रयोग-ज.ध.पु. 12, पृ. 61
समत्त (वि.)-समाप्त-गाहा समत्ता भवदि-ज.ध.पु. 12, पृ. 91
संखेअ (पुं.)-संक्षेप-जी.का. 3
सण्णा (स्त्री.)-संज्ञा-वेदे मेहुणसण्णा-जी.का. 6
सम्म (पुं.)-सम्यग्दृष्टि-अविरदसम्मो-जी.का. 9
संसइद (वि.)-संशयित-संशय में पड़ा हुआ-जी.का. 15
सासणक्ख (वि.)-सासादन नाम का-जी.का. 19
समहिमुह (वि.)-समभिमुख-जी.का. 20
समुग्घाद (पुं.)-समुद्घात-जी.का. 24
सइं (अ.)-सकृत्, एक बार-तदो सइं माणो परिवत्तदि-चु.सू.ज.ध.पु. 12, पृ. 37
हियय-हृदय-हियये ट्ठिदो-ज.ध.पु. 12/182
हिदि-(हृदि)-हृदय में-जी.का. 443
हिंगुल-हिंगुल-ज.ध.पु. 15, पृ. 141
हलिद्द-हल्दी-ध.पु. 13, पृ. 19
हंदि (अह)-ऐसा नियम है कि-ज.ध.पु. 13/202
हरियाल-हरिताल-ज.ध.पु. 15, पृ. 141

(विधिकृदन्त)

(श्रीधवल, जयधवल में प्रयुक्त कुछ विशिष्ट तव्व, दव्व, णिज्जणीय, प्रत्यय का प्रयोग)

णादव्व (वि.कृद.)-जानना चाहिए
अणियोगद्दाराणि णादव्वाणि-ध.पु. 13, पृ. 2
कायव्व (वि.कृद.)-करना चाहिए, फास परूवणा कायव्वा-ध.पु. 13, पृ. 2
पच्चवट्ठेय (वि.)-विश्वास या निश्चय करना चाहिए-ध.पु. 13/18
परूवेदव्व (वि.)-प्ररूपण करना चाहिए-ध.पु. 13, पृ. 17
संचारेदव्व (वि.)-संचार करना चाहिए-ध.पु. 13, पृ. 17
उप्पाएयव्व (वि.)-उत्पन्न करना चाहिए-ध.पु. 13, पृ. 20

आसंकणिज्ज (वि.)-आशंका करना चाहिए-ज.ध.पु. 12, पृ. 6
गेण्हियव्व (वि.)-ग्रहण करना चाहिए--ज.ध.पु. 12, पृ. 18
पडिवज्जेदव्व, (या यव्व) (वि.)-जानना चाहिए-ज.ध.पु. 12, पृ. 20, 14/134
गहेयव्व (वि.)-ग्रहण करना चाहिए-ज.ध.पु. 12, पृ. 24
भजियव्व-विकल्प से ग्रहण करना-ज.ध.पु. 12, पृ. 47
घेत्तव्व-ग्रहण करना चाहिए-ज.ध.पु. 12, पृ. 52
उवसंदरिसियव्व-निर्णय करना चाहिए-ज.ध.पु. 12, पृ. 53
जोजेयव्व-योजित करना चाहिए-ज.ध.पु. 12, पृ. 59
आढवेयव्व-प्रारम्भ करना चाहिए-ज.ध.पु. 12, पृ. 59
साहेयव्व-सिद्धि कर लेना चाहिए-ज.ध.पु. 12, पृ. 82
अणुगंतव्व-जाना लेना चाहिए-ज.ध.पु. 12, पृ. 82
णेदव्व-ले जाना चाहिए-ज.ध.पु. 12, पृ. 108
अणुमग्गियव्व-कर लेना चाहिए-ज.ध.पु. 12, पृ. 119
ठवेयव्व-स्थापित कर लेना चाहिए-ज.ध.पु. 12, पृ. 135
वक्खाणेयव्व-व्याख्यान करना चाहिए-ज.ध.पु. 12, पृ. 138
अवलंवेयव्व-अवलंबन करना चाहिए-ज.ध.पु. 12, पृ. 145
भाणियव्व-कहलाना चाहिए-ज.ध.पु. 12/210
अवहारेयव्व-जानना चाहिए-ज.ध.पु. 12/254
सद्दहेयव्व-श्रद्धान करना चाहिए-ज.ध.पु. 12/280
णिच्छेयव्व-निश्चय करना चाहिए-ज.ध.पु. 13/31
विरचेयव्व-रचना करना चाहिए-ज.ध.पु. 13/130
दरिसेयव्व-दिखलाना चाहिए-ज.ध.पु. 13/43
समुप्पाएयव्व-उत्पन्न करना चाहिए-ज.ध.पु. 13/47
अणुसंवण्णेदव्वाओ-व्याख्यान करना चाहिए-चु.सु.-ज.ध.पु. 13/101
घेत्तव्व-ग्रहण करना चाहिए-ज.ध.पु. 13/135
घटावियव्व-घटित करना चाहिए-ज.ध.पु. 13/238
पडिवज्जेयव्व-निश्चय करना चाहिए-ज.ध.पु. 13/277
सद्दहिदव्व-श्रद्धान करना चाहिए-जी.का. 645
अणुवट्टावेयव्व-अनुवर्तन करना चाहिए-ज.ध.पु. 14/269

ढोएयव्व-स्थापित करना चाहिए-ज.ध.पु. 14/351
भयणिज्ज-विकल्प योग्य, भजनीय-ज.ध.पु. 12, पृ. 47
करणिज्ज-करणीय-ज.ध.पु. 13/पृ. 81
थवणिज्ज-स्थगित करने योग्य
किट्टीवेदगद्धा ताव थवणिज्जा-चु.सू.ज.ध.पु. 15, पृ. 46

वर्तमान कृदन्त

(न्त, माण प्रत्यय का प्रयोग शतृ. शानच् प्र.)

वेदंतो-वेदन करता हुआ-मिच्छत्तं वेदंतो-जी.का. 17
परूवेमाणो-तमेव परूवेमाणो-ज.ध.पु. 12, पृ. 19
उप्पाइज्जमाण (वि.)-उत्पन्न कराने पर-ज.ध.पु. 12, पृ. 57
विहासिज्जमाण-व्याख्यान करते हुए-ज.ध.पु. 12, पृ. 66
होंत-होता हुआ-होंतो वि-होते हुए भी-ज.ध.पु. 12, पृ. 79
गच्छमाण-लाते हुए, जाते हुए-ज.ध.पु. 12, पृ. 111
कुणमाण-करते हुए-ज.ध.पु. 12, पृ. 120
णिहालिज्जमाण-विचार करते हुए-ज.ध.पु. 12, पृ. 120
भणिस्समाण-कहे जाने वाला-ज.ध.पु. 12, पृ. 126
बाहिज्जमाण-बाधा करता हुआ-ज.ध.पु. 12, पृ. 127
कीरमाण-करता हुआ-एवं पुणो पुणो कीरमाणे-ज.ध.पु. 12, पृ. 129
भण्णमाण-कहता हुआ-ज.ध.पु. 12, पृ. 130
आणिज्जमाण-आता हुआ-ज.ध.पु. 12, पृ. 131
घेप्पमाण (वि.)-ग्रहण करता हुआ-ज.ध.पु. 12, पृ. 134
अवलंबिज्जमाण-अवलंवन लेता हुआ-ज.ध.पु. 12, पृ. 144
ढुक्कमाण-प्राप्त होने वाले-ज.ध.पु. 12, पृ. 144
फुट्टंत (पुं.) फुट्टंती (स्त्री.)-भेद रूप, टूटता हुआ फुट्टंतीए पयट्टो-ज.ध.पु. 12/153
होंत (स्त्री.)-होंती-होती हुई-ज.ध.पु. 12/164
वेदयमाण-वेदन करता हुआ-ज.ध.पु. 12/169
जाणावेमाण-ज्ञान कराते हुए-ज.ध.पु. 12/172

वेदिज्जमाण-वेदन करता हुआ-ज.ध.पु. 12/181
पविसमाण, प्रवेश करने वाला-ज.ध.पु. 12/197
पवेसिज्जमाण-प्रवेश कराया जाने वाला-ज.ध.पु. 12/197
हायमाण-घटता हुआ-ज.ध.पु. 12/203
भुंजमाण-भुज्यमान-ज.ध.पु. 12/214
उवसंहरेमाण-उपसंहार करते हुए-ज.ध.पु. 12/252
गेण्हमाण-ग्रहण करता हुआ-ज.ध.पु. 12/267
उवसामेमाण-उपशम करता हुआ-ज.ध.पु. 12/276
पेलिज्जमाण-दलित करता हुआ, खंडित करता हुआ-ज.ध.पु. 12/281
संकममाण-संक्रमण करता हुआ-ज.ध.पु. 13/51
उव्वराविज्जमाण-छोड़ा जा रहा-ज.ध.पु. 13/71
संभंवतअ (पुं.)-संभव हुआ-जो संभवंतओ-ज.ध.पु. 13/81
द्वि.वि.में-संभंवतं-ज.ध.पु. 13/84
चिट्ठमाण-रहता हुआ, होता हुआ-ज.ध.पु. 13/91
पडिवज्जमाण-प्राप्त होने वाला-ज.ध.पु. 13/107
विसुज्झमाण-विशुद्ध होता हुआ-ज.ध.पु. 13/115
आणवेमाण-आरम्भ करता हुआ-ज.ध.पु. 13/119
पदुप्पाएमाण-कथन करते हुए-ज.ध.पु. 13/127
वेदिज्जंत-वेदन में आने वाला-जे च वेदिज्जंता पच्चक्खाणवरणीय-कसाया-ज.ध. पु. 13/154
संकिलिस्संत-संक्लिष्ट होता हुआ-ज.ध.पु. 13/167
घडंतअ (वर्त.पु.)-ण विदिओ वि पक्खो घडंतओ-ज.ध.पु. 15, पृ. 18

संबंध कृदन्त

(श्रीधवल, जयधवल, भगवती आराधना, जीवकाण्ड में प्रयुक्त दूण, ऊण, त्ता, दुं, त्तुं प्रत्यय के प्रयोग)

वोलिय-उल्लंघन करके-ज.ध.पु. 12, पृ. 36
उल्लंघिय-उल्लंघन करके-ज.ध.पु. 12, पृ. 36
अवलंबिय-अवलंबन करके, आश्रय से-ज.ध.पु. 12, पृ. 50

घेत्तूण-ग्रहण करके-ज.ध.पु. 12, पृ. 53
संभूय-मिल करके-ज.ध.पु. 12, पृ. 55
वोलाविय-बिताकर-ज.ध.पु. 12, पृ. 56
अस्सियूण-आश्रय से, आश्रय लेकर-ज.ध.पु. 12, पृ. 56
समुप्पाइय-उत्पन्न कराके-ज.ध.पु. 12, पृ. 57
उप्पज्जिय-उत्पन्न होकर-ज.ध.पु. 12, पृ. 57
पल्लट्टिय-पलट करके-ज.ध.पु. 12, पृ. 57
विसईकरिय-विषय बनाकर-ज.ध.पु. 12, पृ. 58
आढविय-प्रारंभ करके-ज.ध.पु. 12, पृ. 59
सोहिय-कम करके, घटा करके-ज.ध.पु. 12, पृ. 62
ढोएदूण-आश्रय करके-ज.ध.पु. 12, पृ. 69
परामरसिय-परामर्श करके-ज.ध.पु. 12, पृ. 72
उवसंदरिसिय-दिखला कर-ज.ध.पु. 12, पृ. 74
ओसारिय-अपसरण करके, हटाकर, छोड़कर-ज.ध.पु. 12, पृ. 75
साहेयूण-साधकर-ज.ध.पु. 12, पृ. 82
आसंकिय-आशंका कर-ज.ध.पु. 12, पृ. 85
अवेक्खिय-अपेक्षा करके-ज.ध.पु. 12, पृ. 103
चिंतिय-चिंतन करके-ज.ध.पु. 12, पृ. 108
णिरूविय-निरूपण करके-ज.ध.पु. 12, पृ. 109
णिरुंभियूण-व्याप्त करके-ज.ध.पु. 12, पृ. 115
जाणिय-जान करके-भागाभागो जाणिय वत्तव्वो-ज.ध.पु. 12, पृ. 118
पइण्णाय-प्रतिज्ञा करके-ज.ध.पु. 12, पृ. 121
दुगुणिय-दो गुणा करके-ज.ध.पु. 12, पृ. 130
विरलेयूण-विरलन करके-ज.ध.पु. 12, पृ. 130
दादूण-देकर के-ज.ध.पु. 12, पृ. 134
धरेदूण, धरेयूण-रखकर के-ज.ध.पु. 12, पृ. 136, 180
पणमियूण-प्रणाम करके-जिणपरमेट्ठिं पणमियूण-ज.ध.पु. 12, पृ. 148
गमणिज्ज-जानने योग्य-गमणिज्जं सुत्तं-चु.सू.ज.ध.पु. 12, पृ. 150
अहिकिच्च-अधिकृत करके-ज.ध.पु. 12/166

परूवणिज्ज-प्ररूपण योग्य-ज.ध.पु. 12/166
समुज्झियूण-छोड़कर-ज.ध.पु. 12/173
आसेज्ज-आश्रय लेकर-ज.ध.पु. 12/180
णिधाय-धारण करके-ज.ध.पु. 12/180
ओवट्टिदूण (ट्टे)-अपवर्तन करके-क.पा.गा. 94
विणासेयूण-विनाश करके-ज.ध.पु. 12/198
पदुप्पाइय-प्रतिपादन करके-ज.ध.पु. 12/201
अणिल्लेवियूण-उद्वेलना नहीं करके-ज.ध.पु. 12/208
बंधिय-बांध कर-ज.ध.पु. 12/209
अणुव्वेलिय-उद्वेलना नहीं करके-ज.ध.पु. 12/209
ओकड्डियूण-अपकर्षित करके-ज.ध.पु. 12/220
उवसंहरिय-उपसंहार करके-ज.ध.पु. 12/252
आगाएदूण-ग्रहण करके-ज.ध.पु. 12/267
गमिय-जाकर-ज.ध.पु. 12/272
पडिच्छियूण-संकमण करके-ज.ध.पु. 13/5
संपक्खिविय-संप्रक्षेप करके-ज.ध.पु. 13/5
समाणिय, परिसमाणिय-समाप्त करके-ज.ध.पु. 13/7
विहासियूण-विभासा करके-ज.ध.पु. 13/22
हाइदूण-कम करके-ज.ध.पु. 13/23
उल्लंघियूण-उल्लंघन करके-ज.ध.पु. 13/26
उवसामेयूण-उपशम कर-ज.ध.पु. 13/27
परिसेसिय-शेष रखकर-ज.ध.पु. 13/27
पूरेदूण-पूरकर-ज.ध.पु. 13/27
पइण्णाय-प्रतिज्ञा करके-ज.ध.पु. 13/113
ढोएदूण-ग्रहण कर-ज.ध.पु. 13/118
छंडियूण-छोड़ करके-ज.ध.पु. 13/123
काऊण-करके-परूवणं काऊण-ध.पु. 13, पृ. 3
होयूण-होकर-ज.ध.पु.14/55,
णिराकरिय-दूर करके, निराकरण करके-ध.पु. 13, पृ. 3

भणिदूण-कह करके-ध.पु. 13, पृ. 3
णमंसिदूण-नमस्कार करके-सिद्धे णमंसिदूण-मूला. 693
पेक्खिऊण-देखकर-ध.पु. 13, पृ. 17
परूविय-कथन करके-ध.पु. 13, पृ. 17
पडिवज्जिय (प्रतिपद्य)-प्रतिपादन करके-जी.का. 23
णिक्खिविय (निक्षिप्य)-रख करके, निक्षेप करके-जी.का. 37
संठाविदूण-स्थापित करके-जी.का. 42
अवणिज्ज (अपनीय)-कम करके-जी.का. 42
संठविय (संस्थाप्य)-स्थापित करके-जी.का. 43
विसेसियूण-अपेक्षा करके, विशेष करके-ज.ध.पु. 12, पृ. 12
जाणियूण-जानकर-ज.ध.पु. 12, पृ. 13
समाणिय-समाप्त करके-ज.ध.पु. 12, पृ. 23, 85
परियत्तिदूण-परिवर्तन होकर (चु.सू.)-ज.ध.पु. 12, पृ. 34

'तुमुन्' प्रत्यय

कारिदुं-करने के लिए (जी.का. 22)
णिखित्तु-निक्षेप करके-जी.का. 38
लक्खित्तु-लक्ष करके-जी.का. 41
संगुणित्तु-गुणा करके-जी.का. 42
कादुं-करने के लिए-एक्कदो कादुं-ज.ध.पु. 13, पृ. 103
काउं-करने के लिए-काउमाढत्तो-ज.ध.पु. 13/178
पवेसेदुं-प्रवेश करने के लिए-ज.ध.पु. 12/216
खवेदुं-क्षय करने के लिए-ज.ध.पु. 13/2
चविय-च्युत होकर-ज.ध.पु. 13, पृ. 10
उदीरेदुं-उदीरणा करने के लिए-ज.ध.पु. 13/40
संकमियूण-संकमण करके-ज.ध.पु. 13/55
दढीकरिय-दृढ़ करके-ज.ध.पु. 13/59
अदूसिय-दूषित न करके-ज.ध.पु. 13/128
णिवदिय-गिर कर-ज.ध.पु. 13/131

आवूरिय-भरकर-ज.ध.पु. 13/131
अंतरिदूण-अंतर करके-ज.ध.पु. 13/147
चढिदूण-चढ़ करके-ज.ध.पु. 13/151
होहट्टियूण-घटकर-ज.ध.पु. 13/232
हरिय-भाजित करके-ज.ध.पु. 13/232
आणेयूण-बिताकर-ज.ध.पु. 13/234
परिहाइदूण-कम करके-ज.ध.पु. 13/280
उद्दिसिय-उद्देश्य या लक्ष्य करके-ज.ध.पु. 13/329
ओगाहियूण-अवगाहित करके-ज.ध.पु. 14/123
विइंजियूण-विभाजित करके-ज.ध.पु. 14/351
ठिच्चा-स्थित होकर-भ.आ. 105
परिणामेदुं-परिणमन करने के लिए-ज.ध.पु. 13/81
पडिवज्जिदुं-प्राप्त करने के लिए-ज.ध.पु. 14/99
गंतुं-जाने के लिए-ज.ध.पु. 14/100
गहेदुं-ग्रहण करने के लिए-ज.ध.पु. 14/168
विहरित्ता (विहृत्य)-विहार करके-भ.आ. 15
विराधयित्ता-विराधना करके-भ.आ. 15
जेदूण, विजेदूण-जीत करके-भ.आ. 22, 23

प्राकृत क्रिया कोश

(श्रीधवल, जयधवल, जीव काण्ड एवं भगवती आराधना में प्रयुक्त क्रियाएँ)

परूवेमो (परूव+व.उ.पु. बहु.)-प्ररूपण करता हूँ-ध.पु. 13 मंगला
कस्सामो (क+भवि.अ.पु.बहु.) करूँगा, करता हूँ-तस्स अत्थपरूवणं कस्सामो-ध.पु. 13, पृ. 1
फिट्टंति (फिट+व.-अ.पु.बहु.)-नष्ट होते हैं, समाप्त होते हैं-ध.पु. 13, पृ. 1
भवति (भव+व.अ.पु.बहु.)-होते हैं-ध.पु. 13, पृ. 2
पडिवज्जंति (प्रति+पद+व.अ.पु.बहु.)-प्रतिपद्यन्ति-कहे जाते हैं-ध.पु. 13, पृ. 2
वुच्छं (भवि.उ.पु.एक.) कहूँगा-भूला. 693
कीरदे (भाव वाच्य)-की जाती है-तस्स अत्थपरूवणा कीरदे-ध.पु. 13/18

फुसदि (फुस+अ.पु.एक.)-स्पर्श करता है--ध.पु. 13, पृ. 20
पविसदि (प+विस+दि)-प्रवेश करता है-ध.पु. 13, पृ. 20
पुसिज्जदि (भाव वाच्य)-सव्वं सव्वप्पणा पुसिज्जदि-ध.पु. 13, पृ. 20
गच्छदे (कर्त.वा.)-प्राप्त होना-ध.पु. 13, पृ. 19
गम्मदे (भाव. वा.) (गा.)-जाना जाता है-ध.पु. 13, पृ. 18
णव्वदे (भाव. वा.) (णा)-जाना जाता है-ध.पु. 13, पृ. 18
उवलब्भदि (कर्म वा.)-उपलब्ध होता है-ध.पु. 13, पृ. 22
कीरदि (भाव वाच्य)-जस्स णामं कीरदि-ध.पु. 13, पृ. 41
घडदि (घड+दि)-घटित होता है-ध.पु. 13, पृ. 40
अणुहरइ (अणु+हृ+इ)-अनुकरण करता है-ध.पु. 13, पृ. 42
वोच्छं ( )-(वक्ष्यामि)-कहूँगा-जीवस्स परूवणं वोच्छं-जी.का. 1
लक्खिज्जंते (लक्ख+कर्मवा.-बहु.)-(लक्ष्यन्ते)-देखे जाते हैं जेहिं दु लक्खिज्जंते-जी.का. 81 एकव. में 'लक्खिज्जए' (कर्पू. 16)
रोचेदि (रोच+दि)-रुचि करना-ण य धम्मं रोचेदि-जी.का. 17
सद्दहदि (सद्दह+दि)-श्रद्धान करना-जी.का. 18
विरुज्झदे (कर्म वा.)-विरोध को प्राप्त होना-ज.ध.पु. 12, पृ. 59
गिण्हदि (गिण्ह+दि-अ.पु. एक.)-ग्रहण करता है जो संजमं ण गिण्हदि-जी. का. 23
बंधदे (बंध+दे-अ.पु.एक.)-बंध करना बंधदे आउं (जी.का. 23)
मरदि (मर+दि-अ.पु.एक.)-मरता है-जी.का. 23
हवे (हव+ए+इ, इलुक्)-होता है-वेदगं हवे सम्मं-जी.का. 25
वसइ (वस+इ-अ.पु.एक.)-रहता है-जी.का. 33
उप्पज्जदे (उ+पज्ज+दे)-उत्पन्न होता है
गुणिदे उप्पज्जदे संखा-जी.का. 36
संकमेदि (सं+कम+ए+दि)-संकमण करना-जी.का. 39
अणुसरामो (अणु+सर+आमो उ.पु.बहु.)-अनुसरण करते हैं-ज.ध.पु. 12, पृ. 2
कस्सामो (क+आमो-उ.पु.बहु.)-करते हैं-अत्थपरूपणं कस्सामो-ज.ध.पु. 12, पृ. 2
परूवेइ-प्ररूपण करता है-ज.ध.पु. 12, पृ. 3

भणिहिदि (भण+हि+दि. भवि. अ.पु.बहु.)-कहूँगा पुरदो भणिहिदि-ज.ध.पु. 12, पृ. 3

समुवलब्भइ-(अ.पु.एक. कर्तृ.वा.)-उपलब्ध होता है-ज.ध.पु. 12, पृ. 5

लहदे-(कर्तृ.वा.अ.पु.एक.)-प्राप्त होता है-ज.ध.पु. 12, पृ. 6

वक्खाणेंति-(बहु.)-व्याख्यान करते हैं-ज.ध.पु. 12, पृ. 7

अवेक्खदे-(अ.पु.एक.)-अपेक्षा करता है-ज.ध.पु. 12, पृ. 13

उवलब्भदे-(अ.पु.एक. कर्म.वा.)-उपलब्ध होता है-ज.ध.पु. 12, पृ.15

णव्वदे (कर्म.वा.)-जाना जाता है-ज.ध.पु. 12, पृ. 15

इच्छिज्जदे (कर्म.वा.)-इच्छा करता है-ज.ध.पु. 12, पृ. 15

जाणिज्जदि (कर्म.वा.)-जाना जाता है-ज.ध.पु. 12, पृ. 19

कीरदि (कर्म.वा.)-किया है-ज.ध.पु. 12, पृ. 19

कीरदे (कर्म.वा.)-किया है-ज.ध.पु. 12, पृ. 24

वत्तइस्सामो (उ.पु. बहु.)-कहेंगे, बताएंगे-ज.ध.पु. 12, पृ. 34

परिवत्तदि (अ.पु.एक.)-परिवर्तन होता है-ज.ध.पु. 12, पृ. 34

परिणमइ (अ.पु.एक.)-परिणमन करता है-ज.ध.पु. 12, पृ. 36

पारभंति (अ.पु.बहु.)-प्रारम्भ होना-ज.ध.पु. 12, पृ. 47

लब्भंति (अ.पु.बहु.)-प्राप्त होना-ज.ध.पु. 12, पृ. 52

संभवंति (अ.पु.बहु.)-संभव है-ज.ध.पु. 12, पृ. 55

घडदि, घडदे (अ.पु.एक.)-घटित होना-ज.ध.पु. 12, पृ. 57, 132

समप्पदि (अ.पु.एक.)-समाप्त होता-ज.ध.पु. 12, पृ. 84

समप्पंति (अ.पु.बहु.)-समाप्त करना-ज.ध.पु. 12, पृ. 55

समुप्पजदि, समुप्पजइ (अ.पु.एक.)-उत्पन्न होना-ज.ध.पु. 12, पृ. 58, 97

पुच्छिज्जदे-पूछा गया (भा.वा.)-ज.ध.पु. 12, पृ. 60

भणइ-कहना-ज.ध.पु. 12, पृ. 60

उवइसइ--उपदेश देना-ज.ध.पु. 12, पृ. 69

उवजुज्जदे-उपयुक्त है-ज.ध.पु. 12, पृ. 73

अच्छंति-रहता है-ज.ध.पु. 12, पृ. 75

अवचिट्ठदि-रहता है-ज.ध.पु. 12, पृ. 75

उवजुज्जदि-प्रयुक्त होता है-ज.ध.पु. 12, पृ. 76

अवगम्मदे, अवगम्मदि (कर्म.वा.) जाना जाता है-ज.ध.पु. 12, पृ. 78, 100
अणुवट्टदे-अनुवृत्ति है-ज.ध.पु. 12, पृ. 80
भवदि-होता है-ज.ध.पु. 12, पृ. 91
दीसंति (कर्म.वा.) दिखलाई देते हैं-जीवा अणंता होदूण दीसंति-ज.ध.पु. 12, पृ. 93
पविसइ-प्रवेश करना है-ज.ध.पु.
वुच्चंति, वुच्चदे (कर्म.वा.)-कहा जाता है-चु.सू.ज.ध.पु. 12, पृ. 110, 111
आवूरिज्जदि-भरा जाता है-ज.ध.पु. 12, पृ. 114
पवाइज्जदे-प्रवाह मान है-ज.ध.पु. 12, पृ. 116
पण्णाविज्जदे-प्रज्ञापित है-ज.ध.पु. 12, पृ. 116
आदिरिज्जदि-आदर प्राप्त है-ज.ध.पु. 12, पृ. 116
अवहिरिज्जंति-अपहृत होते हैं, भाजित होते हैं-ज.ध.पु. 12, पृ. 118
परिच्छिज्जदे-जाना जाता है-ज.ध.पु. 12, पृ. 119
रांति-रहता है-जवमज्झेण जीवा रांति-ज.ध.पु. 12, पृ. 121
ढुक्कदि-प्राप्त होता है-ज.ध.पु. 12, पृ. 123
जायदे-उत्पन्न होता है-ज.ध.पु. 12, पृ. 123
वक्खाणिज्जदे-व्याख्यान किया जाता है-ज.ध.पु. 12, पृ. 126
पावइ-प्राप्त होता है-ज.ध.पु. 12, पृ. 128
सक्किज्जदे-शक्य होना-तुमुं प्रत्यय के साथ इसका बहुधा प्रयोग होता है वड्ढावेदुं ण सक्किज्जदे-ज.ध.पु. 12, पृ. 129
परिहायदि-घटता है-ज.ध.पु. 12, पृ. 130
जोइज्जदे (भा.वा.)-योजना करना-ज.ध.पु. 12, पृ. 270
जोइज्जइ-देखना-ज.ध.पु. 12, पृ. 131
घेप्पंति-(अ.पु.बहु.)-ग्रहण करते हैं-ज.ध.पु. 12, पृ. 137
भवे-होवे-चउव्विहो भवे-क.पा.गा. 70
आगच्छइ-प्राप्त होना, आना-संधाणमागच्छइ-ज.ध.पु. 12/153
अणुबंधदि-अनुबंध होना, बना रहना तज्जणिदसंसकारो अणुबंधदि-ज.ध.पु. 12/153
पडिवज्जदि-प्राप्त होना-ज.ध.पु. 12/153

अहिकीरदे (कर्म.वा.)-अधिकृत करना-ज.ध.पु. 12/173
अवणेंति-अपनयन करना-ज.ध.पु. 12/175
विहासिज्जंते-(कर्म.वा.)-व्याख्यान करना-ज.ध.पु. 12/178
ठवेइ-स्थापित करता है-ज.ध.पु. 12/181
वेदयदि-वेदन करता है-चु.सु.ज.ध.पु. 12/181
परिसेसेइ-शेष रहना-ज.ध.पु. 12/199
उवसेसेदि-शेष रहना-ज.ध.पु. 12/199
आढावेइ-आरम्भ करना-ज.ध.पु. 12/203
अणुमग्गिज्जदे-अनुमार्गण करना-ज.ध.पु. 12/207
वोच्छिज्जदे (कर्म.) व्युच्छिन्न होना-ज.ध.पु. 12/222
पवत्तीहिंत्ति (बहु.)-प्रवृत्त होंगे-ज.ध.पु. 12/232
वोच्छिज्जदि (कर्तृ.वा.)-टूटना-ज.ध.पु. 12/254
विसुज्झदि (कर्तृ.वा.एक.)-विशुद्ध होना-ज.ध.पु. 12/258
विसिंचदे (दि.)-कर्तृ.वा.एक.-निसिंचित करना-ज.ध.पु. 12/265
णिक्खिवदि-निक्षेप करना-ज.ध.पु. 12/265
देदि-देता है-ज.ध.पु. 12/265
घादेदि-घात करता-ज.ध.पु. 12/267
णासेइ-नष्ट करता है-ज.ध.पु. 12/267
खंडेदि-खंड करता है-ज.ध.पु. 12/274
पडिहम्मदे-व्युच्छिन्न होना-ज.ध.पु. 12/277
उप्पाएदि-उत्पन्न करना-ज.ध.पु. 12/280
पयट्टदे (कर्तृ.वा.) (दि)-प्रवर्तन होना-ज.ध.पु. 12/306, -ज.ध.पु. 13/13
वोच्छामि-कहूँगा-जी.का. 332
पडिवज्जंति-प्राप्त होना-जी.का. 375
जाणदे/जाणदि-जानता है-जी.का. 376, 377
पवड्ढदे-प्रवर्धते-बढ़ता है-जी.का. 424
उप्पज्जदे-उत्पन्न होना-जी.का. 441
विजाणए-विजानाति-जानता है-जी.का. 449
संछुहदि-संक्रमित करना-ज.ध.पु. 13, पृ. 5

संपक्खिवदि-प्रक्षेप करना, रखना-जी.का. 13, पृ. 5
वेदिज्जदि-वेदन किया जाता, कर्म.वा. में मिच्छत्त परिणामो वेदिज्जदि-ज.ध. पु. 13, पृ. 5
वोलेदि-उल्लंघन करना-ज.ध.पु. 13/6
परूविज्जदे-प्ररूपण किया जाता-ज.ध.पु. 13/8
अधिच्छदि, अधिच्छइ-उल्लंघन करना-ज.ध.पु. 13/9
सिज्झदि-सिद्ध होता है-ज.ध.पु. 13/10
पवंचिज्जदे-विस्तार से कथना करना-ज.ध.पु. 13/पृ. 12
पट्ठवेइ-प्रस्थापक होना-ज.ध.पु. 13/12
होहिदि (भवि.) होगा-ज.ध.पु. 13/21
आढविज्जदि-प्रारम्भ किया जाय-ज.ध.पु. 13/22
अवहीयदि-अवधीयते, नीचे-नीचे जानना-जी.का. 37
णिव्वत्तेदि-रचना करता है-ज.ध.पु. 13/44
उवजायदे-उत्पन्न होता-ज.ध.पु. 13/51
परूविज्जिहिदि (भाव.वा.)-प्रयपणा करेंगे-ज.ध.पु. 13/56
संकिलिट्ठस्सदु (विधि वाचन)-संक्लेश को प्राप्त होवे-ज.ध.पु. 13/82
विसुज्झदु (विधि वा.)-विशुद्धि को प्राप्त हो-ज.ध.पु. 13/82
पडिहम्मदि-प्रतिघात होना-ज.ध.पु. 13/83
परावत्तदि, परावत्तेदि-परावर्तन करता-ज.ध.पु. 13/88
विहासयिस्सामो-व्याख्यान करेंगे-ज.ध.पु. 13/106
लभिहिदि-प्राप्त करेगा-चु.सु.ज.ध.पु. 13/114
पवंचिज्जदे (भाव.वा.)-विस्तार करना-ज.ध.पु. 13/120
रचेदि-रचना करता-ज.ध.पु. 13/125
चिट्ठदि-रहता है-ज.ध.पु. 13/129
फिट्टदि-नष्ट होना-ज.ध.पु. 13/129
थक्कदि-रुक जाना-ज.ध.पु. 13/147
जोएदि-स्वीकार करना-ज.ध.पु. 13/193
अवचिट्ठइ-ठहरना-ज.ध.पु. 13/193
अवेक्खदे-अपेक्षा करना-ज.ध.पु. 13/193

उवट्ठादि-प्रवत्त होना-ज.ध.पु. 13/197
उवक्कमदि-प्रवृत्त होना-ज.ध.पु. 13/197
चडाविज्जदे (भा.वा.)-चढ़ाया गया-ज.ध.पु. 13/202
हम्मदि-घात करना-ज.ध.पु. 13/212
पयट्टावेदि-करता है-ज.ध.पु. 13/213
पवत्तीहिंति (भवि. बहु.) प्रवृत्त होंगे-दो विघादा पवित्तीहिंति-ज.ध.पु. 13/222
समुवलब्भदे-प्राप्त होता-ज.ध.पु. 13/238
अवचिट्ठदे-ठहरा होना-ज.ध.पु. 13/269
संकामिज्जदे-संक्रमित होना-ज.ध.पु. 13/269
उवसामिज्जदि-उपशमाया जाना-ज.ध.पु. 13/277
छंडिदि-छोड़ देना-ज.ध.पु. 13/294
देसामासयत्त-देशामर्षकत्व-ज.ध.पु. 13/301
विपच्चिहिदि-विपाक को प्राप्त होगा-ज.ध.पु. 13/301
अब्भुवगम्मदे-स्वीकार करना-ज.ध.पु. 13/276
पसज्जदे (भाव.वा.)-प्रसंग आना णिरत्थिया पसज्जदे-ज.ध.पु. 13/276
विजाणए-विजानाति-जानता-जी.का. 449
उवसम्मेदि-उपशमाता-ज.ध.पु. 14/17
णिक्खिप्पदे-निक्षेप करना-ज.ध.पु. 14/49
पडिवज्जेज्ज-प्राप्त हो सकता है-ज.ध.पु. 14/59
जाणिज्जदे (कर्म.वा.)-जाना जाता है-ज.ध.पु. 14/122
रहस्सेदि-कम होता-ज.ध.पु. 14/289
अवयारिज्जदि-अवतरित की जाती है-ज.ध.पु. 14/302
खविज्जदि-क्षपित किया जाता है-ज.ध.पु. 14/326
पदंति (बहु.)-पतित होते हैं-ज.ध.पु. 14/351
पवत्तिहिदि (भाव.काल)-प्रवृत्ति करेगा-ज.ध.पु. 15, पृ. 2
जाणामो (उ. पु. बहु.)-हम जानते हैं-ज.ध.पु. 15, पृ. 15
उवट्ठायदि-उपस्थित होता है-चु.सू.ज.ध.पु. 15, पृ. 50
जददि-प्रयत्न करता है-जददि तवे चरित्ते य-भ.आ. 18
णज्जदि-जाना जाता है-रायते भ.आ. 100

समादियदि-ग्रहण करना-भ.आ. 101
परीदि-परिभ्रमण करता है-भ.आ. 101
पल्हादिज्जइ-(ना.धा.)-प्रल्हाद होना-भ.आ. 104

भूतकालिक कृदन्त कोश

कद-किया-सुत्तेण कदं-ध.पु. 13, पृ. 1
आदिट्ठ-कहा है, निर्देश किया है-पुव्वमादिट्ठं-ध.पु. 13, पृ. 1
उद्दिट्ठ-कहा हुआ, बताया हुआ-पुव्वुद्दिट्ठ-ध.पु. 13, पृ. 1
कय (भू.कृ.वि.)-किया-एदेण कयं-ध.पु. 13, पृ. 3
भणिद (भू.कृ.)-कहा हुआ-त्ति भणिदं होदि-ध.पु. 13, पृ. 3
खविय (भू.कृ.)-नाश किया-मूला. 93
मेलाविद (भू.कृ.)-मिला हुआ मेलाविदेसु-ध.पु. 13, पृ. 27
पक्खित्त (भु.कृ.)-प्रक्षिप्त हुआ-ध.पु. 13, पृ. 28
अवणिद-घटाया हुआ-अवणिदेसु-ध.पु. 13, पृ. 29
उवइट्ठि (वि.)-उपदिष्ट-कहा हुआ-उवइट्ठं पवयणं-जी.का. 18
णासिय (वि.)-नाशित-नाश हुआ-णासियसम्मो-जी.का. 19
जाणाविद (वि.)-ज्ञापित, ज्ञान कराया गया-चेव त्ति जाणाविदं-ज.ध.पु. 12, पृ. 18
ओइण्ण (वि.)-अवतरित हुआ, आया-एदं सुत्तमोइण्णं-ज.ध.पु. 12, पृ. 28
संजाद-होना-एवे संजादेसु-ज.ध.पु. 12, पृ. 57
समुदिद-समुदित, मिला हुआ-ज.ध.पु. 12, पृ. 63
वित्थरिद-विस्तार किया हुआ-ज.ध.पु. 12, पृ. 63
समत्थिद-समर्थित किया-ज.ध.पु. 12, पृ. 67
विवक्खिय-विवक्षित है-ज.ध.पु. 12, पृ. 72
णीद-ले जाया हुआ-एवं णीदे-इस प्रकार ले जाने पर-ज.ध.पु. 12, पृ. 91
वोलीण-व्यतीत हुआ-तिविहो कालो वोलीणो-ज.ध.पु. 12, पृ. 93
समदिक्कंत या समइक्कंत-समतिक्रान्त, व्यतीत हुआ-ज.ध.पु. 12, पृ. 94
अवहारिद-निश्चय हुआ-ज.ध.पु. 12, पृ. 94
गहिद-गृहीत हुआ-ताव गहिदाणित्ति-ज.ध.पु. 12, पृ. 100

णिद्धारिद-निर्धारित-णिद्धारिदसरूवेसु-ज.ध.पु. 12, पृ. 101

आवूरिद-आपूर्ण, भरा हुआ-ज.ध.पु. 12, पृ. 120

अवुण्ण-भरा हुआ-तसजीवेहिं अवुण्णाणि-ज.ध.पु. 12, पृ. 120

संपत्त-प्राप्त हुआ-संपत्तजीवपमाणं-ज.ध.पु. 12, पृ. 130

प्राकृत व्याकरण नियम

1. 'इति' का संधि हुए बिना भी 'त्ति' के रूप में प्रयोग होता है जैसे 'संखेओ ओघो त्तिय' (जी.का. 3)। अंतिम ध्वनि के लिए 'त्ति' हो जाता है। दीर्घान्त का ह्रस्व भी होता है। 'विसोहि त्ति'-ज.ध.पु. 12, पृ. 24

2. 'जीवा पज्जत्तिआणभासमणो' जी.का. 5 इससे यह भी समझा जा सकता है कि आण, भास, मणो ये तीनों समासान्त पद न होकर पृथक् पद है जिससे यह फलित होता है कि बिना विभक्ति के मूल पदों का प्रयोग प्राकृत में होता है। इसी तरह की प्रयोग विधि द्रव्यसंग्रह में भी है।-'वण्ण रस पंच' (द्र.सं. 7)। अन्यत्र भी शास्त्रों में इन प्रयोगों की बहुलता है।

3. प्रचलित संज्ञा शब्द में 'क' प्रत्यय अन्त में जोड़ने की प्रवृत्ति भी देखी जाती है। उस 'क' का 'ग' या 'य' हो जाता है जैसे 'कोहमाणगम्मि' (जी.का. 6) यहाँ मान में 'क' प्रत्यय जोड़कर विभक्ति लगी है।

   'आउ या आउग' दोनों शब्द 'आयु' के लिए हैं। प्रयोग-बंधदे आउं (जी.का. 23), आउगं पुरा बद्धं (जी.का. 24) 'य' का प्रयोग भी विकल्प से होता है। जैसे 'मिस्स या मिस्सय' दोनों शब्द 'मिश्र' के लिएं हैं। प्रयोग-'मिस्सम्मि' (जी.का. 24), 'मिस्सयभावो' (जी.का. 22)

   प्राकृत में दो पदों के बीच 'स्वरसंधि' की नियामकता नहीं है जैसे-'सजोगकेवलिजिणो अजोगी य' यहाँ 'अजोगि' के 'अ' की पूर्व स्वर में संधि नहीं हुई है।

4. स्वर संधि लोप के उदाहरण-सम्मत्तद्धा-सम्मत्त+अद्धा (जी.का. 19), सासणक्खो-सासण+अक्खो (जी.का. 19), फासणियोअं (ध.पु. 13, पृ. 1) फास+अणियोगं, केणहिओ (क.पा.गा. 63)

5. स्वरसंधि के उदाहरण-अण्णदरुदयादो-अण्णदर उदयादो-जी.का. 19 तिण्णेव-तिण्णि+एव (जी.का. 11)

'उ' स्वर के परे होने पर यदि उसके पूर्व 'अ' स्वर हो तो उससे संधि होकर भी 'ओ' नहीं होता है। इस नियम में विकल्प है। जैसे

सम्मामिच्छुदएण-सम्मामिच्छ+उदएण (जी.का. 21)

देसघादिस्सुदयादो-देसघादिस्स+उदयादो (जी.का. 25)

कसायुदयादो-कसाय+उदयादो (जी.का. 26)

उवजोगमणिओगं-उवजोगं+अणिओगं (ज.ध.पु. 12, पृ. 1), जेणेदाओ-ज.ध. पु. 12, पृ. 141

सिस्साहिप्पायं-सिस्स+अहिप्पायं (ज.ध.पु. 12, पृ. 2)

6. पंचमी वि. में 'आत्' के 'त' का लोप अक्सर प्रयोग होता है। जैसे णियमा-नियम से (जी.का. 14), खया-क्षय से (जी.का. 26) गुरुणियोगा-गुरु नियोग से (जी.का. 27)

7. अन्तिम हलन्त 'त' का लोप होता है क्वचित् संधि भी देखी जाती है। 'जगपदरं' (ज.ध.पु. 12, पृ. 75) यहाँ जगत् के 'त' का लोप होकर 'जग' शब्द प्रयुक्त हुआ है। 'जुगवदुवजुत्ता' (ज.ध.पु. 12, पृ. 1) यहाँ जुगवद्+उवजुत्ता यह संधि के साथ प्रयोग है। कथंचि कथंचित! (ज.ध. पु. 12, पृ. 8) आहो आहोस्वित् अथवा अर्थ में (ज.ध.पु. 12, प1. 8)

तदपरूवणादो-तद्+अपरूवणादो-ज.ध.पु. 12, पृ. 19

8. अन्तिम हलन्त 'त' का लोप होने पर पूर्व व्यंजन पर अनुस्वार भी लगता है जैसे जुगवं-युगपत्-जुगवं जम्हा-(द्र.सं.)।

9. इव का केवल 'व' भी रह जाता है-पुव्वं व वत्तव्वो-ज.ध.पु. 12, पृ. 83 'विय' अव्यय शौरसेनी जैनागम में 'अपि च' के लिए अर्थात् 'भी' अर्थ में प्रयुक्त होता है जैसे-इंदो विय संसइयो (जी.का. 16) जबकि नाटकीय शौरसेनी में 'विय' अर्थात् 'इव' 'के समान' अर्थ में देखा जाता है। प्राकृतव्याकरण में इव अर्थ के लिए नियम दिया है 'इवस्य विअ' (12/24 वर.)। 'मृच्छकटिका' आदि नाटक साहित्य में भी इसी तरह 'इव' अर्थ में प्रयोग है। 'इदं णवं विअ' (पृ. 8) 'णववहूकेसहत्थं विअ' (पृ. 10) इत्यादि। 'इव' का प्रयोग भी प्राकृत में होता है। 'दहिगुडमिव'-जी.का. 22।

10. सप्तमी विभक्ति में एकवचन में 'जा', 'ता' सर्वनाम से 'जहिं' 'तहिं' बनता है जो मात्र जैनागम शौरसेनी की विशेषता है। (जी.का. 24)

11. क्वचित् क्रियापद में अन्तिम प्रत्यय का लोप भी देखा जाता है-जैसे हवे (जी.का. 25, 32), वंदे (द्र.सं. 1)

'कदरिस्से' आदि सर्वनाम शब्दों में 'इस्से' प्रत्यय षष्ठी, सप्तमी दोनों विभक्तियों में प्रयुक्त होता है।

एदिस्से गाहाए अत्थपरूवणं कस्सामो (ज.ध.पु. 12, पृ. 2)। यहाँ षष्ठी वि. में प्रयोग है। 'कदरिस्से च गदीए' कदमिस्से (क.पा.गा. 81) (क.पा.गा. 65)। किस गति में, यहाँ सप्तमी प्रयोग है। 'एक्किस्से गदीए' (ज.ध.पु. 13) एक गति में...

12. सप्तमी वि. के बहुवचन में 'सु' प्रत्यय से पहले 'इकारान्त शब्द ह्रस्व ही बना रहता है। जैसे 'जीवट्ठाणादिसु'-ज.धु.पु. 12, पृ. 15

13. 'थ' का 'ध' विकल्प से होता है जैसे कथं होदि-ज.ध.पु. 12, पृ. 27 अथवा अथवा-(चु.सू.ज.ध.पु. 12, पृ. 74, कहीं 'थ' का 'ह' भी होता है—अहवा अथवा-ज.ध.प. 12, पृ. 63।

14. संबंध कृदन्त के साथ भी संधि हो जाती है-सपिंडिऊणप्पाबहुअं (ज.ध. पु. 12, पृ. 19)। यहाँ अप्पाबहुअं के 'अ' का लोप होकर संधि हुई है, कादूणे त्ति-ज.ध.पु. 12, पृ. 38।

15. जिन शब्दों के अन्त में 'य' है उनमें 'ए' प्रत्यय जुड़ता है तो मात्र 'ए' रह जाता है जैसे णेरइय इसका द्वि.वि. का बहुवचन 'णेरइए' होगा-देवणेरइए मोत्तूण-ज.ध.पु. 12, पृ. 24

16. कुछ शब्द प्राकृत भाषा के ही होते हैं जिनकी संस्कृत छाया उपलब्ध नहीं होती है जैसे 'आगरिसा' (ज.ध.पु. 12, पृ. 29)। अर्थात् परिवर्तन वार। एत्थागिरिसा त्ति वुत्ते परियट्टणवारो त्ति गहेयव्वं।

17. पं.वि. के बहु. में 'आहिंतो' प्रत्यय के 'आ' का लोप-जैसे 'आगारिस' में पं.वि. का बहु-आगरिसहिंतो-ज.ध.पु. 12, पृ. 40

18. 'अत्थि' यह क्रियापद अव्ययरूप से है जो बहुवचन कर्त्ता के साथ भी प्रयुक्त होता है। उदयट्ठाणाणि अत्थि-ज.ध.पु. 12, पृ. 63

अत्थि अणंता जीवा-

'भ' का 'ह' विकल्प से होता है-जैसे लोह, लोभ (ज.ध.पु. 12, पृ. 81)

19. 'गदि-आदि' इस तरह संधि में 'अ' का 'य' हो जाता है-'गदियादि'-ज.ध. पु. 12, पृ. 88

20. संबंध कृदन्त में निषेधात्मक 'अ' भी जुड़ कर 'नञ्' समास होता है जो संस्कृत में नहीं होता है—माणो अहोदूण-ज.ध.पु. 12, पृ. 93, अगंतूण-नहीं प्राप्त करके-मायामगंतूण-ज.ध.पु. 12, पृ. 104

21. संबंध कृदन्त का प्रयोग बहुधा द्वितीय वि. के साथ 'कर्म' कारक में ही होता है। क्वचित् षष्ठी वि. के साथ भी देखा जाता है जैसे-एदस्स गाहासुत्तस णिरूविय--ज.ध.पु. 12, पृ. 109

22. क्वचित् 'दो' संख्या के तृ.वि. के बहु. में 'मि' का प्रयोग अतिरिक्त मिलता है। जैसे-तेण दोहिं मि सरिसेहिं--ज.ध.पु. 12, पृ. 119

23. जहाँ इकरान्त आदि पूर्व अक्षरों वाले शब्द के साथ 'आ' की संधि की जाती है वहाँ 'य' का आदेश हो जाता है। भूमियादिसु (ज.ध.पु. 12/174)

24. यत् तद् का प्रयोग भी देखा जाता है—यदाह-तदवलंवणीभूद-(ज.ध.पु. 12, पृ. 194)। तदहिमुह-(वही पृ. 195) तदकरणं (मूला.1/20)

25. तत् के साथ संधि होने पर आगे के अक्षर का ही आधा अक्षर या उसी वर्ग का प्रथमादि अक्षर संधि के साथ बन जाता है-तप्परूवणाए (पृ. 195), तक्खण, तब्भाव, तदुम्मुहावत्थाए-पृ. 196, तव्विसय-पृ. 196।

26. किम् आदि के हलन्त 'म' का संधि के साथ प्रयोग होता है। किमविसेसेण-(ज.ध.पु. 12/196)

27. कहाँ के लिए 'कहिं' भी बनता है। क.पा.गा. 93, यहाँ के लिए एण्हिं-(ज.ध.पु. 12/199)

28. 'अपि' का मात्र 'पि' ही रह जाता है-उत्तरपयणीणं पि-ज.ध.पु. 12/207 'वि' भी रह जाता है।-ट्ठिदिबंधो वि-ज.ध.पु. 12/213

29. इति का त्ति भी रह जाता है। णरलोएत्ति-जी.का. 456, दीर्घ 'ई' ह्रस्व रह जाता है-पडिवत्ति त्ति,-ज.ध.पु. 13/215, उवसामणविहि त्ति-ज.ध. पु. 14/104 'इ' का 'ए' होता है, अनुस्वार का लोप भी होता है। णाणेत्ति-जी.का. 299, मइअण्णाणेत्ति-जी.का. 303 'ओ' प्रत्यय के साथ 'इ' का लोप होता है-वेभंगो त्ति-जी.का. 305

क्रिया के साथ संधि हुए बिना भी प्रयोग होता है-हवंति त्ति-जी.का. 318, शब्द में भी ऐसा होता है-गदत्थविसयत्ति-जी.का. 439, हवंती त्ति-जी.का. 694

30. इदं को इणं होता है। 'इ' का लोप होता है जैसे-णं वेंति-जी.का. 299
31. इकारान्त शब्द समास पदों में 'ई' भी हो जाता है-मदि सुदओहीमणं च-जी.का. 300। यहाँ ओहि का आही हुआ है।
32. पंचमी वि. में 'आदु' का प्रयोग भी होता है-एयक्खरादु उवरिं-जी.का. 335 संघादसुदादु-जी.का. 338। संधि भी हो जाती है-अणियोगादुवरि-जी. का. 340, सिद्धादणंतगुणो-जी.का. 384
33. 'ट' का 'ड' हो जाता है-णिच्चुग्घाडं-उद्घाट के ट का ड हुआ है। जी.का. 320, कहीं 'त' का 'ड' भी होता है- सूत्रकृते-सूदकडे-जी. का. 356, अंतकृत-अंतयडे-जी.का 357
34. 'महा' का 'मह' भी हो जाता है-महपुंडरीय-जी.का. 368 कहीं 'हा' भी बना रहता है। महाणइस्स. जी.का. 415
35. 'इ' कारान्त शब्दों में 'षष्ठी' वि. में 'स्स' प्रत्यय भी होता है। देसोहिस्स य अवरं-जी.का. 374
36. चतुर्थी वि. में 'आय' भी होता है-दव्ववियप्याय-जी.का. 384
37. मध्याक्षर का लोप जैसे-'व' का लोप 'दीउवही'-जी.का. 396
38. ऋ का 'उ' हो जाता है-ऋजु-उजु-जी.का. 440
39. 'उवरि' के साथ षष्ठी वि. का प्रयोग होता है। सम्मत्तस्सुवरि-ज.ध. 13/55
40. समास पद में संधि की नियामकता नहीं होती है, अणंताणुबंधिचउक्क -अपच्चक्खावणावरणीय-ज.ध.पु. 13/108
41. मतुप् प्रत्यय-लद्धिमंत-चरित्तलद्धिमंताणं-ज.ध.पु. 13/171
42. संधि करने में आवश्यकतानुसार गाथा छंद का प्रयोग करते हुए स्वर यहाँ का लोप हो जाता है। जैसे-'उप्पादपुव्वगेणिय' जी.का. 345, यहाँ अगेणिय के 'अ' का लोप हुआ। संधि नहीं हुई।
43. सप्तमी वि. के बहुवचन में दीर्घ सर्वत्र होता है। क्वचित् 'सु' प्रत्यय से पूर्व मात्रा का ह्रस्व भी देखा जाता है।

    हाणिसु वड्ढीसु-जी.का. 506, गदियादिसु-जी.का. 703

44. संयुक्ताक्षर से पूर्व दीर्घ ह्रस्व नहीं भी होता है-जांति खलु जीवा-जी. का. 519

45. आवश्यकतानुसार ह्रस्व स्वर दीर्घ भी हो जाता है।

पंचत्थीकायसण्णिदं होदि-जी.का. 620

46. प्राकृत की अपनी व्याकरण है इसमें संधि, समास आदि सभी का प्रयोग होता है एवं समास से शब्दों के भिन्न अर्थ भी निकाले जाते हैं। जैसे-ज.ध.पु. 14, पृ. 152-एगफद्दावालिया त्ति समासणिद्देसो एसो, तेणेवमेत्थ समासकायव्वा-फद्दयाणमावलिया फद्दयावलिया, एगा च सा फद्दयावलिया च एगफद्दयावलिया त्ति।

47. षष्ठी वि. के अर्थ सप्तमी वि. का निर्देश भी होता है।

छट्ठीए वा अत्थे एसो सत्तमी णिद्देसो त्ति घेत्तेव्वो-ज.ध.पु. 14/267

48. क्वचित् अव्यय पद की 'ए' के साथ संधि नहीं होती है। ण एस दोसो-ज.ध.पु. 14/22

49. विभक्ति पद में बिना विभक्ति के संधि-एसेव कमो-ज.ध.पु. 14/36

50. षष्ठी वि. के साथ भी तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग-

संतकम्मस्स कंडयघादवसेण करेदुमाढत्तत्तादो-ज.ध.पु. 14/323

51. क्रियापद के साथ षष्ठी वि. का प्रयोग भी देखा जाता है। जैसे-परमत्थबद्धलक्खो ण वि चुक्कदि मोक्खमग्गस्स-बोध पाहुड गाथा 22

52. मध्यम पुरुष क्रिया के प्रयोग भी मिलते हैं। जैसे-तस्स य करह पणामं-बोध पाहुड़ गाया 16-यहाँ 'करह' मध्यम पुरुष की बहुवचन की क्रिया है। अन्य भी प्रयोग-

वुच्छामि समासेण छक्कायसुहंकरं सुणह-बोध-पाहुड़ 2

53. द्वितीया वि. का स्त्रीलिंग में प्रयोग-

जं देह दिक्खसिक्खा-बोध प्रा. 15

54. 'होज्जासु' यह क्रियापद होज्ज अर्थ में है-चु.सू.ज.ध.पु. 15, पृ. 167

55. त एव तक-स्वार्थे 'क' प्रत्यय की प्रवृत्ति प्राकृत में भी देखी जाती है-लिंगमुस्सगियं तयं चेव-भ.आ. 76

56. मतुप् प्रत्यय के शब्द-हिरिमं-ह्रीमान् (पुं.)-भ.आ. 78

57. इय-एवमर्थे-भ.आ. 85
58. आदि शब्द के रूप-आदयं (प्र.एक.नपुं.)-पव्वदादयं-ज.ध.पु. 12/174
59. च का 'य' होता है।
    आयरण आचरण
60. थ का 'ह' होता है-विकहा विकथा, तहा तथा
61. प्राकृत में लुप्त अकार के लिए 'ऽ' चिह्न का प्रयोग होता है। यदि यह चिह्न न लगाया जाए तो अर्थ की विपरीतता आती है।
    जैसे- 1. इयरम्हि य णिम्मओऽसंगो -मूलाचार.1/11
    यदि यहाँ 'ऽ' का प्रयोग न करें तो 'संगो' अर्थ से मुनि का विशेषण परिग्रह वाले अर्थ में होगा जिससे अनर्थ होगा।
    2. जिब्भाजओऽगिद्धी-मूलाचार 1/22
    अर्थात् जिह्वा को जीतने वाला गृद्धि रहित होता है।
    इसी तरह का प्रयोग समयसार ग्रन्थ में मिलता है-
    ववहारोऽभूदत्थो-समयसार।
    व्यवहार अभूतार्थ है। यदि 'ऽ' न लगाएं तो व्यवहार को भूतार्थ होने का प्रसंग आ जाए।
62. मत्वर्थीय 'इल्ल' प्रत्यय का प्रयोग-
    णियडिल्लो अर्थात् निकृतिवान्-मूलाचार 2/39
63. 'तो' अर्थात् ततः 'इसलिए' अर्थ में।
    जदि इच्छसि दुक्खमुत्तिं तो- मूला. 2/52

संख्या

पाँच को 'पण', 'पणं' पणमेगेगं-जी.का. 34
पन्द्रह को 'पण्णरस'
'तथा' को 'तह', 'तहा' दोनों रूप प्रयोग होते हैं
'अपि' का 'वि' हो जाता है।
सव्वे वि पुव्वभंगा-जी.का. 36
'एक' का एक्क, इक्क, एग, एय, एक, इक, इगि सभी प्रयोग होते हैं।

एक्को हि मोक्खमग्गो-

इक्किक्के जे ठिया हु इक्केक्का-(द्र.सं.) इसमें इक्क, एक्क दोनों प्रयोग एक साथ हैं।

एगो में सासदो आदा (णि.सार.)

इगि विति-जी.का. 43

बारह-बार, बारं-जी.का. 344

एकादश-एयारं होता है-इगिदुगपंचेयार-जी.का. 359

सोलह-को सोल, सोलह, सोलह, सोहस प्रयोग होते हैं, सोहस-ज.ध.पु. 14/136

खसोल-जी.का. 44, सोलंच-जी.का. 344

एक्कत्तीस (वि.)-इकतीस-ज.ध.पु. 14, पृ. 60

सोलसम (वि.)-सोलहवाँ (स्त्री-सोलसमी)-एसा सोलसमी गाहा-ज.ध.पु. 12/169

तिवीस-तेईस-जी.का. 359, तेवीस-ज.ध.पु. 15, पृ. 33

बारसम-बारहवाँ-ज.ध.पु. 13/106

अट्ठेदालीस-अड़तालीस-ज.ध.पु. 14/136

आत्मन्-**आत्म-अप्प या अत्त**

(आत्मन्-आत्म-अप्प या अत्त के रूप अकारान्त पुल्लिंग के अतिरिक्त उससे भिन्न रूप में भी निम्न प्रकार से चलेंगे)

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	अप्पा	अप्पा, अप्पाणो
द्वितीया	अप्पं	अप्पा, अप्पाणो
तृतीया	अप्पणा, अप्पणिआ, अप्पणइआ	अप्पेहिं, अप्पेहिं, अप्पेहि
चतुर्थी	अप्पणो	अप्पाण, अप्पाणं
पंचमी	अप्पणो	अप्पत्तो, अप्पाओ, अप्पाउ, अप्पाहिं, अप्पाहिंतो, अप्पासुंतो अप्पेहि
षष्ठी	अप्पणो	अप्पाण, अप्पाणं
सप्तमी	अप्पम्मि, अप्पे	अप्पेसु, अप्पेसुं
सम्बोधन	अप्पा, अप्प	अप्पा, अप्पाणो

राजन्-राअ-राय

(राअ-राय के रूप अकारान्त पुल्लिंग के अतिरिक्त उससे भिन्न रूप में भी निम्न प्रकार से चलेंगे)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	राया	राया, राइणो
द्वितीया	राइणं	राया, राइणो
तृतीया	राइणा, रण्णा	राईहि, राईहिं, राईहिं
चतुर्थी	राइणो, रायणो, रण्णो	राइणं, राईणं, राईण
पंचमी	राइणो, रण्णो	राइत्तो, राईओ, राईउ, राईहिंतो, राईसुंतो
षष्ठी	राइणो, रायणो, रण्णो	राइणं, राईण, राईणं
सप्तमी	राइम्मि	राईसु, राईसुं
सम्बोधन	राया, राय	राया, रायाणो, राइणो

सर्वनाम शब्द रूपावली

पुल्लिंग-सव्व

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वो, सव्वे	सव्वे
द्वितीया	सव्वं	सव्वा, सव्वे
तृतीया	सव्वेण, सव्वेणं	सव्वेहि, सव्वेहिं, सव्वेहिं
चतुर्थी	सव्वाय, सव्वस्स	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं
पंचमी	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वाहिंतो, सव्वा, सव्वादु, सव्वादो	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वाहिंतो, सव्वासुंतो, सव्वादु, सव्वादो
षष्ठी	सव्वस्स	सव्वाण, सव्वाणं, सव्वेसिं
सप्तमी	सव्वस्सिं, सव्वम्मि, सव्वत्थ, सव्वहिं, सव्वम्हि, सव्वंसि	सव्वेसु, सव्वेसुं

पुल्लिंग-त, ण (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सो, से, स, ण	ते, णे
द्वितीया	तं, णं	ते, ता, णे, णा
तृतीया	तेण, तेणं, तिणा, णेण, णेणं, णिणा	तेहि, तेहिं, तेहिं, णेहि, णेहिं, णेहिं
चतुर्थी व षष्ठी	तस्स, से, तास	ताण, तेसिं, तासं
पंचमी	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहिंतो, ताहि, ता, तम्हा, तो, तादो, तादु	तत्तो, ताआ, ताउ, ताहि, ताहिंतो, तासुंतो, तादो, तादु
सप्तमी	तस्सिं, तम्मि, तत्थ, तहिं, ताहे, ताला, तइया, तम्हि, तंसि	तेसु, तेसुं

पुल्लिंग-ज (जो)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जो, जे	जे
द्वितीया	जं	जे, जा
तृतीया	जेण, जेणं, जिणा	जेहि, जेहिं, जेहिं
चतुर्थी व षष्ठी	जस्स, जास	जाण, जाणं, जेसिं
पंचमी	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिंतो, जा, जम्हा, जादो, जादु	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहि, जाहिंतो, जासुंतो, जेहि, जेहिंतो, जेसुंतो, जादो, जादु
सप्तमी	जस्सिं, जम्मि, जत्थ, जहिं, जाहे, जाला, जइया, जम्हि, जंसि	जेसु, जेसुं

पुल्लिंग-क (कौन)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	को, के	के
द्वितीया	कं	के, का
तृतीया	केण, केणं, किणा	केहि, केहिं, केहिं
चतुर्थी व षष्ठी	कस्स, कास	काण, काणं, कास, केसिं
पंचमी	कत्तो, काओ, आउ, काहिंतो, का, कम्हा, किणो, कीस, कादो, कादु	कत्तो, काओ, काउ, काहि, काहिंतो, कासुंतो, केहिंतो, केसुंतो, कादु, कादो
सप्तमी	कस्सिं, कम्मि, कत्थ, कहिं, काहे, काला, कइआ, कम्हि, कंसि	केसु, केसुं

पुल्लिंग-एत (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एसो, एस, इणं, इणमो	एते, एदे
द्वितीय	एतं, एदं	एते, एता, एदे, एदा
तृतीया	एतेण, एतेणं, एतिणा, एदेण, एदेणं, एदिणा	एतेहि, एतेहिं, एतेहिं, एतेहि, एदेहिं, एदेहिं
चतुर्थी व षष्ठी	एतस्स, एदस्स	एताण, एताणं, एतेसिं, एदाण, एदाणं, एदेसिं
पंचमी	एताओ, एताउ, एताहि, एताहिंतो, एता, एत्तो एत्ताहे, एदादो, एदादु	एतत्तो, एताओ, एताउ, एताहि, एताहिंतो, एतासुंतो, एतेहि, एतेहिंतो, एतेसुंतो, एदादो, एदादु
सप्तमी	एतस्सिं, एतम्मि, अयम्मि, इयम्मि, एत्थ, एतम्हि, एतंसि	एतेसु, एतेसु

पुल्लिंग-इम (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इमो, अयं, इमे	इमे
द्वितीया	इमं, इणं, णं	इमे, इमा, णे, णा
तृतीया	इमेण, इमेणं, इमिणा, णेण, णेणं, णिणा	इमेहि, इमेहिं, इमेहिं, णेहि, णेहिं, णेहिं
चतुर्थी व षष्ठी	इमस्स, अस्स, से	इमाण, इमाणं, इमेसिं, सिं
पंचमी	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहिंतो, इमा, इमादो, इमादु इमादु,	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहि, इमाहिंतो, इमासुंतो, इमेहि, इमेहिंतो, इमेसुंतो, इमादो
सप्तमी	इमस्सिं, इमम्मि, अस्सिं, इह, इमम्हि, इमंसि	इमेसु, इमेसुं, एसु, एसुं

पुल्लिंग-अमु (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अमू, अह	अमउ, अमओ, अमुणो, अमवो, अमू
द्वितीया	अमुं	अमुणो, अमू
तृतीया	अमुणा	अमूहि, अमूहिं, अमूहिं
चतुर्थी व षष्ठी	अमुस्स, अमुणो	अमूण, अमूणं
पंचमी	अमुणो, अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिंतो, अमूदो, अमूदु	अमुत्तो अमूओ, अमूउ, अमूहिंतो, अमूसुंतो, अमूदो, अमूदु
सप्तमी	अयम्मि, इअम्मि, अमुम्मि, अमुम्हि, अमुंसि	अमूसु, अमूसुं

पुल्लिंग-अण्ण (अन्य)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अण्णो, अण्णे	अण्णे
द्वितीया	अण्णं	अण्णे, अण्णा
तृतीया	अण्णेण, अण्णेणं	अण्णेहि, अण्णेहिं, अण्णेहिं
चतुर्थी	अण्णाय, अण्णस्स	अण्णाण, अण्णाणं, अण्णेसिं
पंचमी	अण्णत्तो, अण्णाओ, अण्णाउ, अण्णाहि, अण्णाहिंतो, अण्णा,	अण्णतो, अण्णाओ, अण्णाउ, अण्णाहि, अण्णाहिंतो, अण्णासुंतो, अण्णादो, अण्णदु
षष्ठी	अण्णस्स	अण्णाण, अण्णाणं, अण्णेसिं
सप्तमी	अण्णस्सिं, अण्णम्मि, अण्णत्थ, अण्णहिं, अण्णम्हि, अण्णंसि	अण्णेसु, अण्णेसुं

नपुंसकलिंग-सव्व

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वं	सव्वाइं, सव्वाइँ, सव्वाणि
द्वितीया	सव्वं,	सव्वाइं, सव्वाइँ, सव्वाणि
तृतीया	सव्वेण, सव्वेणं	सव्वेहि, सव्वेहिं, सव्वेहिं
चतुर्थी	सव्वाय, सव्वस्स	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं
पंचमी	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वाहिंतो, सव्वा, सव्वादु, सव्वादो	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वाहिंतो, सव्वासुंतो, सव्वादु, सव्वादो
षष्ठी	सव्वस्स	सव्वाण, सव्वाणं, सव्वेसिं
सप्तमी	सव्वस्सिं, सव्वम्मि, सव्वत्थ, सव्वहिं, सव्वम्हि, सव्वंसि	सव्वेसु, सव्वेसुं

नपुंसकलिंग-त (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तं	ताइं, ताइँ, ताणि
द्वितीया	तं	ताइं, ताइँ, ताणि
तृतीया	तेण, तेणं, तिणा, णेण, णेणं, णिणा	तेहि, तेहिं, तेहिं, णेहि, णेहिं, णेहिं
चतुर्थी व षष्ठी	तस्स, से, तास	ताण, तेसिं, तास, ताणं, सिं
पंचमी	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहिंतो, ताहि, ता, तम्हा, तो, तादो, तादु	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहि, ताहिंतो, तासुंतो, तादो, तादु
सप्तमी	तस्सिं, तम्मि, तत्थ, तहिं, ताहे, ताला, तइया, तम्हि, तंसि	तेसु, तेसुं

नपुंसकलिंग-ज (जो)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जं	जाइं, जाइँ, जाणि
द्वितीया	जं	जाइं, जाइँ, जाणि
तृतीया	जेण, जेणं, जिणा	जेहि, जेहिं, जेहिं
चतुर्थी व षष्ठी	जस्स, जास	जाण, जाणं, जेसिं
पंचमी	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिंतो, जा, जम्हा, जादो, जादु जाहि	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहि, जाहिंतो, जासुंतो, जेहि, जेहिंतो, जेसुंतो, जादो, जादु
सप्तमी	जस्सिं, जम्मि, जत्थ, जहिं, जाहे, जाला, जइया, जम्हि, जंसि	जेसु, जेसुं

नपुंसकलिंग-क (कौन)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	किं	काइं, काइँ, काणि
द्वितीया	किं	काइं, काइँ, काणि
तृतीया	केण, केणं, किणा	केहि, केहिं, केहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	कस्स, कास	काण, काणं, कास, केसिं
पंचमी	कत्तो, काओ, काउ काहिंतो, का, कम्हा, किणो, कीस, कादो, कादु	कत्तो, काओ, काउ, काहि, काहिंतो, कासुंतो, केहिंतो, केसुंतो, कादु, कादो
सप्तमी	कस्सि, कम्मि, कत्थ, कहिं काहे, काला, कइआ, कम्हि, कंसि	केसु, केसुं

नपुंसकलिंग-एत (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एस, इणं, इणमो, एतं	एताइं, एताइँ, एताणि, एदाइं, एदाइँ, एदाणि
द्वितीया	एतं, एदं	एताइं, एताइँ, एताणि, एदाइं, एदाइँ, एदाणि
तृतीया	एतेण, एतेणं, एतिणा, एदेण, एदेणं, एदिणा	एतेहि, एतेहिं, एतेहिं, एदेहि, एदेहिं, एदेहिं
चतुर्थी व षष्ठी	एतस्स, से, एदस्स	एताण, एताणं, एतेसिं, एताण, एदाणं, एदेसिं
पंचमी	एताओ, एताउ, एताहि, एताहिंतो, एता, एत्तो, एत्ताहे, एदादो, एदादु	एतत्तो, एताओ, एताउ, एताहि, एताहिंतो, एतासुंतो, एतेहि, एतेहिंतो, एतेसुंतो, एदादो, एदादु
सप्तमी	एतस्सिं, एतम्मि, अयम्मि, इयम्मि, एत्थ, एतम्हि, एतंसि	एतेसु, एतेसुं, एदेसु, एदेसुं

नपुंसकलिंग-इम (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इदं, इणमो, इणं	इमाइं, इमाइँ, इमाणि
द्वितीया	इदं, इणमो, इणं	इमाइं, इमाइँ, इमाणि
तृतीया	इमेण, इमेणं, इमिणा, णेण, णेणं, णिणा	इमेहि, इमेहिं, इमेहिं, णेहि, णेहिं, णेहिं
चतुर्थी व षष्ठी	इमस्स, अस्स, से	इमाण, इमाणं, इमेसिं, सिं
पंचमी	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहि, इमाहिंतो, इमा, इमादो, इमादु इमेसुंतो, इमादु, इमादो	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहि, इमाहिंतो, इमासुंतो, इमेहि, इमेहिंतो,
सप्तमी	इमस्सिं, इमम्मि, अस्सिं, इह, इमम्हि, इमंसि	इमेसु, इमेसुं

नपुंसकलिंग-अमु (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अमुं, अह	अमूहं, अमूइँ, अमूणि
द्वितीया	अमुं	अमूइं, अमूइँ, अमूणि
तृतीया	अमुणा	अमूहि, अमूहिं, अमूहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	अमुस्स, अमुणो	अमूण, अमूणं
पंचमी	अमुणो, अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिंतो, अमूदो, अमूदु	अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिंतो, अमूसुंतो, अमूदो, अमूदु
सप्तमी	अयम्मि, इअम्मि, अमुम्मि, अमुम्हि, अमुंसि	अमूसु, अमूसुं

नपुंसकलिंग-अण्ण (अन्य)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अण्णं	अण्णाइं, अण्णाइँ, अण्णाणि
द्वितीया	अन्णं	अण्णाइं, अण्णाइँ, अण्णाणि
तृतीया	अण्णेण, अण्णेणं	अण्णेहि, अण्णेहिं, अण्णेहिँ
चतुर्थी	अण्णाय, अण्णस्स	अण्णाण, अण्णाणं, अण्णेसिं
पंचमी	अण्णत्तो, अण्णाओ, अण्णाउ, अण्णाहि, अण्णाहिंतो, अण्णा, अण्णादो, अण्णादु	अण्णत्तो, अण्णाओ, अण्णाउ, अण्णाहि, अण्णाहिंतो, अण्णासुंतो, अण्णेहि, अण्णेहिंतो, अण्णेसुंतो, अण्णादो, अण्णादु
षष्ठी	अण्णस्स	अण्णाण, अण्णाणं, अण्णेसिं
सप्तमी	अण्णस्सिं, अण्णम्मि, अण्णत्थ, अण्णहिं, अण्णम्हि, अण्णंसि	अण्णेसु, अण्णेसुं

स्त्रीलिंग-सव्वा

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वा	सव्वा, सव्वाउ, सव्वाओ
द्वितीया	सव्वं	सव्वा, सव्वाउ, सव्वाओ
तृतीया	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वाहि, सव्वाहिं, सव्वाहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वाण, सव्वाणं, सव्वेसिं
पंचमी	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए, सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहिंतो, सव्वादो सव्वादु	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहिंतो, सव्वासुंतो, सव्वादो, सव्वादु
सप्तमी	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वासु, सव्वासुं

स्त्रीलिंग-ता (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ता, ताउ, ताओ
द्वितीया	तं	ता, ताउ, ताओ
तृतीया	ताअ, ताइ, ताए	ताहि, ताहिं, ताहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	ताअ, ताइ, ताए, तास, से	ताण, ताणं, सिं, तेसिं
पंचमी	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहिंतो, ताअ, ताइ, ताए, तादो, तादु	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहिंतो, तासुंतो, तादो, तादु
सप्तमी	ताअ, ताइ, ताए, ताहिं	तासु, तासुं

स्त्रीलिंग-जा (जो)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जा	जाउ, जाओ, जा
द्वितीया	जं	जाउ, जाओ, जा
तृतीया	जाअ, जाइ, जाए	जाहि, जाहिं, जाहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	जाअ, जाइ, जाए	जाण, जाणं, जेसिं
पंचमी	जाअ, जाइ, जाए, जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिंतो, जादो, जादु	जत्तो, जाउ, जाओ, जाहिंतो, जासुंतो, जादो, जादु
सप्तमी	जाअ, जाइ, जाए, जाहिं	जासु, जासुं

स्त्रीलिंग-का (कौन)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	काउ, काओ, का
द्वितीया	कं	काउ, काओ, का
तृतीया	काअ, काइ, काए	काहि, काहिं, काहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	काअ, काइ, काए, कास	काण, काणं, केसिं

पंचमी	काअ, काइ, काए, कत्तो, काओ, काउ, काहिंतो, कादो, कादु	कत्तो, काओ, काउ, काहिंतो कासुंतो, कादो, कादु
सप्तमी	काअ, काइ, काए, काहिं	कासु, कासुं

स्त्रीलिंग-एआ (यह)

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	एसा	एआउ, एआओ, एआ
द्वितीया	एअं	एआउ, एआओ, एआ
तृतीया	एआअ, एआइ, एआए	एआहि, एआहिं, एआहिं
चतुर्थी व षष्ठी	एआअ, एआइए, एआए, से	एआण, एआणं, सिं
पंचमी	एअत्तो, एअत्ताहे, एआअ, एआइए, एआए, एआओ, एआउ, एआहिंतो, एआदो एआदु	एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहिंतो एआसुंतो, एआदो, एआदु
सप्तमी	एआअ, एआइ, एआए	एआसु, एआसुं

स्त्रीलिंग-इमा (यह)

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	इमा, इमिआ	इमाउ, इमाओ, इमा
द्वितीया	इमं	इमाउ, इमाओ, इमा
तृतीया	इमाअ, इमाइ, इमाए	इमाहि, इमाहिं, इमाहिं
चतुर्थी व षष्ठी	इमाअ, इमाइ, इमाए, से	इमाण, इमाणं, सिं, इमेसिं
पंचमी	इमाअ, इमाइ, इमाए, इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहिंतो, इमादो, इमादु	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहिंतो, इमासुंतो, इमादो, इमादु
सप्तमी	इमाअ, इमाए, इमाइ	इमासु, इमासुं

स्त्रीलिंग-अमु (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अह, अमू	अमूउ, अमूओ, अमू
द्वितीया	अमुं	अमूउ, अमूओ, अमू
तृतीया	अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए	अमूहि, अमूहिं, अमूहिं
चतुर्थी व षष्ठी	अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए	अमूण, अमूणं
पंचमी	अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए, अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिंतो, अमूदो, अमूदु	अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिंतो, अमूसुंतो, अमूदो, अमूदु
सप्तमी	अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए	अमूसु, अमूसुं

तीनों लिंगो में-अम्ह (मैं)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहं, हं, म्मि, अम्हि, अम्मि, अहयं	अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वयं, भे
द्वितीया	अहं, मं, ममं, मि, अम्मि, अम्ह, मम्ह, णं, णे, मिमं	अम्ह, अम्हे, अम्हो, णे
तृतीया	मइ, मए, ममाइ, मयाइ, मे, ममए, मि, ममं, णे	अम्ह, अम्हे, अम्हेहि, अम्हाहि, णे
चतुर्थी व षष्ठी	मइ, मम, मह, महं, मज्झ, मज्झं, अम्ह, अम्हं, मे	अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, णे, णो, मज्झ, मज्झाण, अम्हाण, ममाण, महाण, अम्हाण, ममाणं, महाणं, मज्झाणं
पंचमी	मइत्तो, मईओ, मईओ, मईउ, मईहिंतो, ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममाहिंतो, मम, महत्तो, महाओ, महाउ, महाहि, महाहिंतो, महा,	ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममाहिंतो, ममासुंतो, ममेहि, ममेहिंतो, ममेसुंतो, अम्हत्तो, अम्हाओ, अम्हाउ, अम्हाहि, अम्हाहिंतो,

	मज्झत्तो, मज्झाओ, मज्झाउ, मज्झाहि, मज्झाहिंतो, मज्झा मईदो, मईदु, ममादो, ममादु, महादो, महादु, मज्झादो, मज्झादु	अम्हासुंतो, अम्हेहि, अम्हेहिंतो, अम्हेसुंतो, ममादो, ममादु, अम्हादो, अम्हादु
सप्तमी	मइ, मए, ममाइ, मि, मे, अम्हम्मि, ममम्मि, महम्मि, मज्झम्मि, अम्हे, ममे, महे, मज्झे, अम्हस्सिं, ममस्सिं, महस्सिं, मज्झस्सिं, अम्हत्थ, ममत्थ, महत्थ, मज्झत्थ, अम्हि, ममहि, महहि, मज्झहिं	अम्हेसु, ममेसु, महेसु, मज्झेसु, अम्हसु, ममसु, महसु, मज्झसु, अम्हासु, अम्हेसुं, ममेसुं, महेसुं, मज्झेसुं, अम्हसुं, ममसुं, महसुं, मज्झसुं, अम्तासुं,

तीनों लिंगों में-तुम्ह (तुम)

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	तुमं, तं, तुं, तुवं, तुह	तुज्झ, तुम्ह, तुब्मे, तुय्हे, उय्हे, तुम्हे, तुज्झे, उम्हे, भे
द्वितीया	तं, तुं, तुमं, तुवं, तुह, तुमे तुए	तुज्झ, तुब्भे, तुय्हे, उय्हे, भे, वो
तृतीया	तुमं, तइ, तए, तुमइ, तुमाइ, तुमे, तुमए, भे, दि, दे, ते	तुज्झेहिं, उज्झेहिं, तुय्हेहिं, उय्हेहिं, उम्हेहिं भे
चतुर्थी व षष्ठी	तइ, तुव, तुम, तुह, तुहं, तुम्हं, तुमे, तुमो, तुमाइ, तुब्भ, उब्भ उयह, दि, दे, इ, ए, तु, ते, तुम्ह, तुज्झ उम्ह, उज्झ	तुब्भ, तुब्भं, तुब्भणा, तुवाण, तुमाण, तुहाण, उम्हाण, तु, वो, भे, तुम्हाण, तुज्झाण, तुब्भाणं, तुवाणं, तुमाणं, तुहाणं, उम्हाणं, तुम्हाणं तुज्झाणं
पंचमी	तइत्तो, तईओ, तईउ, तईहिन्तो, तुवत्तो, तुवाओ तुवाउ, तुवाहि, तुवाहिन्तो, तुव, तुमत्तो, तुहत्तो, तुहाओ,	तुब्भतो, तुब्भाहिन्तो, तुब्भासुन्तो, तुम्हेहि, तुज्झत्तो, तुज्झाओ, तुज्झाहिन्तो, तुज्झासुन्तो, तुम्हत्तो,

	तुहाहि, तुब्भत्तो, तुम्हाहिन्तो, तुब्भाहिन्तो, तुम्हत्तो, तुम्हाहिन्तो, तुज्झाउ, तुज्झाहि, तुयह, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ	तुम्हाहिन्तो, तुम्हासुन्तो, तुय्हत्तो, तुय्हाउ, उय्हत्तो, उय्हासुन्तो, उम्हत्तो, उम्हाओ, उम्हाहिन्तो, उम्हासुन्तो
सप्तमी	तुमे, तुमए, तुमाइ, तइ, तए, तुम्मि, तुवम्मि, तुवस्सि, तुवत्थ, तुमम्मि, तुमस्सि, तुमत्थ, तुहम्मि, तुहस्सि, तुहत्थ, तुब्भम्मि, तुब्भस्सि, तुब्भत्थ, तुज्झम्मि, तुज्झस्सि, तुज्झत्थ	तुसु, तुसुं, तुवेसु, तुवेसुं, तुमेसु, तुमेसुं, तुहेसु, तुहेसुं, तुब्भेसु, तुब्भेसुं, तुम्हेसु, तुम्हेसुं, तुज्झेसु, तुज्झेसुं तुमसु, तुमसुं, तुम्हसु, तुम्हसुं, तुज्झासु तुज्झासुं, तुम्हासु, तुम्हासुं

संख्यावाची शब्द-रूपावली

जिन शब्दों द्वारा संख्या का बोध होता है वे शब्द संख्यावाचक विशेषण कहे जाते हैं। ये संख्यावाची शब्द गणनावाचक एवं क्रमवाचक होते हैं।

एक्क से लेकर दहकोडि तक निम्नलिखित सभी निश्चित संख्यावाची शब्द गणनाबोधक विशेषण हैं। इनके लिंग, वचन और विभक्ति प्रयोग को निम्न प्रकार से समझना चाहिए।

(क) गणनावाचक संख्या शब्द–

1.	एक्क, इक्क, एग, एअ	= एक
2.	दो, दुवे, वे	= दो
3.	ति	= तीन
4.	चउ	= चार
5.	पंच	= पाँच
6.	छट्ठ	= छह:
7.	सत्त	= सात
8.	अट्ठ	= आठ

9. णव = नौ
10. दह, दस = दस
11. एक्कारह, इक्कारह, एगारह, एआरह, एक्कारस, इक्कारस, एगारस, एआरस = ग्यारह
12. बारह, बारस, दुवालस = बारह
13. तेरह, तेरस = तेरह
14. चउद्दह, चउद्दस, चोद्दस = चौदह
15. पण्णरह, पण्णरस = पन्द्रह
16. सोलह, सोलस, छद्दस = सोलह
17. सत्तरह, सत्तरस, सत्तद्दस = सत्तरह
18. अट्ठारह, अट्ठारस, अट्ठदस, अट्ठदह = अठारह
19. एगूणवीस, अउणवीस, एगुणवीसइ अउणवीसइ = उन्नीस
20. वीस, वीसइ = बीस
21. एगवीस, एगवीसइ = इक्कीस
22. बावीस, बावीसइ, बाइस = बाइस
23. तेवीस, तेवीसइ = तेईस
24. चउवीस, चउवीसइ = चौबीस
25. पण्णवीस, पण्णवीसइ, पणुवीस = पच्चीस
26. छव्वीस = छब्बीस
27. सत्तवीस, सत्तावीस, सत्तवीसइ, सत्तावीसइ = सत्ताईस
28. अट्ठवीस, अट्ठावीस, अट्ठावीसइ = अट्ठाईस
29. एगूणतीस, एगूणतीसइ, अउणतीस, अउणतीसइ = उनतीस
30. तीस, तीसइ = तीस
31. एक्कतीस = इकत्तीस
32. बत्तीस = बत्तीस
33. तेत्तीस, तित्तीस, तेत्तीसइ = तैंतीस
34. चउतीस, चउतीसइ = चौतीस
35. पण्णतीस, पंचतीस, पण्णतीसइ, पंचतीसइ = पैंतीस
36. छत्तीस, छत्तीसइ = छत्तीस

37. सत्ततीस, सत्ततीसइ = सैंतीस
38. अट्ठतीस, अट्ठतीसइ = अड़तीस
39. एगूणचत्तालीस, अउणचत्तालीस = उनतालीस
40. चत्तालीस, चालीस = चालीस
41. एक्कचत्तालीस, इगयाल = इकतालीस
42. बायालीस, बायाल = बयालीस
43. तेआलीस = तैंतालीस
44. चउआलीस, चोयालीस = चौंवालीस
45. पणयालीस, पणयाल, पंचतालीस = पैंतालीस
46. छायालीस = छियालीस
47. सत्तचत्तालीस, सीयालीस, सत्तचालीस = सैंतालीस
48. अट्ठचत्तालीस, अट्ठतालीस, अट्ठयाल, अढयाल, अढयालीस = अड़तालीस
49. एगूणपण्णास, अउणापण्ण = उनचास
50. पण्णास = पचास
51. एगपण्णास, एक्कपण्णास, एगावण्ण = इक्यावन
52. बावण्ण = बावन
53. तेवण्ण = तिरेपन
54. चउवण्ण, चउपण्ण, चउपण्णास = चौवन
55. पणपण्ण, पणवण्ण = पचपन
56. छप्पण्ण = छप्पन
57. सत्तावण्ण = सत्तावन
58. अट्ठावण्ण = अट्ठावन
59. एगूणसट्ठि, अउणसट्ठि, अउणट्ठि = उनसठ
60. सट्ठि = साठ
61. एगसट्ठि = इकसठ
62. बासट्ठि, बावट्ठि, बिसट्ठि = बासठ
63. तेसट्ठि, तेवट्ठि, तिसट्ठि = तिरेसठ
64. चउसट्ठि = चौंसठ

65. पंचसट्ठि, पणसट्ठि = पैसठ
66. छसट्ठि = छियासठ
67. सत्तसट्ठि, सत्तट्ठि = सड़सठ
68. अट्ठसट्ठि, अट्ठासट्ठि, अडसट्ठि = अड़सठ
69. एगूणसत्तरि, अउणत्तरि = उनहत्तर
70. सत्तरि, सयरि = सत्तर
71. एक्कसत्तरि, एगसत्तरि, इक्कसत्तरि, एहत्तरि = इकहत्तर
72. बावत्तरि, बाहत्तरि, बिसत्तरि, बिसयरि = बहत्तर
73. तेवत्तरि, तेवुत्तरि = तिहत्तर
74. चउहत्तरि = चौहत्तर
75. पञ्चहत्तरि = पचहत्तर
76. छहत्तरि, छस्सयरि, छाहत्तरि = छिहत्तर
77. सत्तहत्तरि, सत्तहुत्तरि = सतहत्तर
78. अट्ठहत्तरि = अठहत्तर
79. एगूणासीइ = उनासी
80. असीइ = अस्सी
81. एगासीइ, एक्कासीइ = इक्कासी
82. बासी, बासीइ = बयासी
83. तेसीइ, तेआसी = तिरासी
84. चउरासी, चउरासीइ, चउरासीय = चौरासी
85. पणसीइ, पंचासीइ = पचासी
86. छासीइ, छलसीइ = छियासी
87. सत्तासीइ = सत्तासी
88. अट्ठासीइ, अट्ठासी = अठासी
89. एगूणणउइ = नवासी
90. णवइ, णउइ = नब्बे
91. एक्काणउइ = इक्यानवे
92. बाणउइ, बाणुवइ = बानवे
93. तेणवइ, तेणउइ, तिणवइ = तिरानवे

94. चउणवइ, चउणउइ = चौरानवे
95. पंचाणउइ, पण्णाउइ = पंचानवे
96. छण्णवइ, छण्णउइ, छणुवइ = छियानवे
97. सत्तणउइ, सत्ताणउइ = सत्तानवे
98. अट्ठाणवइ, अट्ठाणउइ = अट्ठानवे
99. णवणवइ, णवणउइ = निन्यानवे
100. सय = सौ
200. दुसय = दो सौ
300. तिसय, तिण्णि सय = तीन सौ
400. चत्तारि सय = चार सौ
500. पणसय, पंचसय = पाँच सौ
600. छसय, छस्सय = छः सौ
700. सत्तसय = सात सौ
800. अट्ठसय = आठ सौ
900. णवसय = नौ सौ
1000 सहस्स = एक हजार
10000 दससहस्स = दस हजार
100000 लक्ख = एक लाख
1000000 दहलक्ख = दस लाख
10000000 कोडि = करोड़
100000000 दहकोडि = दस करोड़

एक से लेकर दहकोडि तक ये सभी निश्चित संख्यावाची शब्द गणनाबोधक विशेषण हैं। इनके लिंग, वचन और विभक्ति प्रयोग को निम्न प्रकार से समझना चाहिए।

1. 'एक्क' संख्यावाची शब्द के रूप पुल्लिग में पुल्लिग 'सव्व' के अनुसार नपुंसकलिंग में नपुंसकलिंग 'सव्व' के अनुसार तथा स्त्रीलिंग में स्त्रीलिंग 'सव्वा' के अनुसार होते हैं।
2. दो से अट्ठारह तक के शब्द सदैव तीनों लिंगों में बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं। दो से लेकर पाँच तक के रूप पीछे इकाई-2 गणनावाचक

संख्या शब्द रूप में दिए गए हैं। छः से लेकर अट्ठारह तक के रूप 'पंच' की भाँति ही चलते हैं।

3. उन्नीस से लेकर आगे तक के सभी जितने भी संख्यावाची शब्द हैं वे सब सामान्यतः एकवचन में ही प्रयुक्त होते हैं। किन्तु जब ये संख्यावाची शब्द अपनी अनेकता बताते हैं तब वे बहुवचन में भी प्रयुक्त होते हैं। इसी प्रकार सय, सहस, कोडि आदि शब्द भी एकवचनान्त और बहुवचनान्त दोनों रूपों में होते हैं।
4. उन्नीस से अट्ठावन तक के शब्द ह्रस्व अकारान्त होते हुए भी स्त्रीलिंग 'बाला' के अनुसार चलेंगे। जैसे–(प्रथमा एकवचन) एगूणवीसा (प्रथमा बहुवचन) एगुणवीसा, एगूणवीसाउ, एगूणवीसाओ।
5. उनसठ से निन्यावे तके के रूप 'जुवइ' या 'णई' के समान चलेंगे।
6. सय (सौ) दुसय (दो सौ) से लेकर लक्ख (लाख) के रूप 'कमल' की भाँति चलेंगे। कोडि, दहकोडि, सयकोडि के रूप स्त्रीलिंग के समान प्रयुक्त होते हैं।

संख्यावाची विशेषण

एग, एअ, एक्क (एक)

संख्यावाची शब्द 'एक्क' के रूप पुल्लिग में पुल्लिग सव्व सर्वनाम शब्द के समान, नपुंसकलिंग में नपुंसकलिंग सव्व सर्वनाम शब्द के समान तथा स्त्रीलिंग में स्त्रीलिंग सव्वा सर्वनाम शब्द के समान होते हैं।

दु, दो, वे (दो) तीनों लिंगों में

	बहुवचन
प्रथमा	दुवे, दोण्णि, वेण्णि, दो, वे, दुण्णि, विण्णि
द्वितीया	दुवे, दोण्णि, वेण्णि, दो, वे, दुण्णि, विण्णि
तृतीया	दोहि, दोहिं, दोहिं, वेहि, वेहिं, वेहिँ
चतुर्थी	दोण्ह, वेण्ह, दोण्हं, वेण्हं, दुण्ह, दुण्हं
व षष्ठी	
पंचमी	दुत्तो, दोओ, दोउ, दोहिंतो, दोसुंतो, वितो, वेओ, वेउ, वेहिंतो, वेसुंतो
सप्तमी	दोसु, वेसु, दोसुं, वेसुं

ति (तीन) तीनों लिंगों में

	बहुवचन
प्रथमा	तिण्णि
द्वितीया	तिण्णि
तृतीया	तीहि, तीहिं, तीहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	तिण्ह, तिण्हं
पंचमी	तित्तो, तीओ, तीउ, तीहिंतो, तीसुंतो
सप्तमी	तीसु, तीसुं

चउ (चार) तीनों लिंगों में

	बहुवचन
प्रथमा	चत्तारो, चउरो, चत्तारि
द्वितीया	चत्तारो, चउरो, चत्तारि
तृतीया	चउहि, चउहिं, चउहिँ, चऊहि, चऊहिं, चऊहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	चउण्ह, चउण्हं
पंचमी	चउओ, चउउ, चउहिंतो, चउसुंतो, चउततो, चऊओ, चऊउ, चऊहिंतो, चऊसुंतो
सप्तमी	चउसु, चऊसु, चउसुं, चऊसुं

पंच (पाँच) तीनों लिंगों में

	बहुवचन
प्रथमा	पंच
द्वितीया	पंच
तृतीया	पंचहि, पंचहिं, पंचहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	पंचण्ह, पंचण्हं
पंचमी	पंचत्तो, पंचाओ, पंचाउ, पंचाहि, पंचाहिंतो, पंचासुंतो, पंचेहि, पंचेहिंतो, पंचेसुंतो
सप्तमी	पंचसु, पंचसुं